जैन

तन्त्र-शास्त्र

[विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले जैन मन्त्र एवं यन्त्र तथा उनकी साधन-विधि]

लेखक

विद्या-वारिधि पं. राजेश दीक्षित

●

सम्पादक

पं. यतीन्द्र कुमार जैन शास्त्री

वितरक फोन: 3881121

गर्ग आणि कं. बुकसेलर्स

106, सी. पी. टैंक, बंबई-4.

प्रकाशक :
दीप पब्लिकेशन
कंचन मार्केट,
अस्पताल मार्ग, आगरा-३

लेखक :
पं. राजेश दीक्षित

सम्पादक
पं. यतीन्द्र कुमार जैन शास्त्री

सर्वाधिकार
प्रकाशकाधीन

संस्करण :
प्रथम : १९८४ ई०
द्वितीय संस्करण 1990-91

चेतावनी

भारतीय कापीराइट एक्ट के अधीन इस पुस्तक के सर्वाधिकार दीप पब्लिकेशन के पास सुरक्षित हैं। अतः कोई सज्जन इस पुस्तक का नाम, अन्दर का मैटर, डिजायन, चित्र व सैटिंग तथा किसी भी अंश को किसी भी भाषा में नकल या तोडमोड कर छापने का साहस न करें, अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार होंगे।

—प्रकाशक

मूल्य : 36 रुपये
5 (डालर)
4 (पौण्ड)

मुद्रक :
चन्द्रा प्रिण्टर्स, आगरा-२

दो-शब्द

प्रस्तुत सकलन में जैन-धर्म के तीन महत्वपूर्ण ग्रन्थ सकलित हैं—(१) चतुर्विंशतितीर्थंकर अनाहत मन्त्र-यन्त्र विधि, (२) श्री कल्याण मन्दिर स्तोत्र तथा (३) भक्तामर स्तोत्र।

उक्त ग्रन्थों में सम्बन्धित ऋद्धि, मन्त्र-यन्त्र उनकी साधन-विधि तथा प्रभावादि का उल्लेख भी इसमें किया गया है।

पूर्वाचार्यकृत 'श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर अनाहत यन्त्र-मन्त्र विधि' नामक ग्रन्थ अब तक केवल कन्नड भाषा में ही उपलब्ध था। श्री १०८ गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज द्वारा उक्त कन्नड-ग्रन्थ का प्रथम हिन्दी-अनुवाद प्रस्तुत किया गया, एतदर्थ सम्पूर्ण समाज उनका अत्यन्त अनुग्रहीत है।

'कल्याण मन्दिर स्तोत्र' यथार्थ में मानव-कल्याण का मन्दिर ही है। जैन धर्म के दोनों सम्प्रदायों—श्वेताम्बर तथा दिगम्बर—में इसे समान रूप से प्रतिष्ठा प्राप्त है। श्वेताम्बर सम्प्रदाय इसे सिद्धसेन दिवाकर की तथा दिगम्बर सम्प्रदाय आचार्य कुमुदचन्द्र की रचना मानता है। इस स्तोत्र का रचना-काल ग्यारहवीं शताब्दी के बाद का माना जाता है। यह चमत्कारिक स्तोत्र भी दीर्घकाल में अनुपलब्ध था। खुरई निवासी प० कमलकुमार जैन शास्त्री 'कुमुद' के कठिन परिश्रम के फलस्वरूप ही यह सुलभ हो पाया है।

'भक्तामर स्तोत्र' का रचना-काल भी सुनिश्चित नहीं है, परन्तु इसके प्रणेता उज्जयिनी के महाराजा विक्रमादित्य के समय में विद्यमान थे, ऐसी मान्यता है। यह स्तोत्र भी—श्वेताम्बर तथा दिगम्बर—दोनों सम्प्रदायों द्वारा मान्य है तथा सभी जैन मतानुयायी इसे मनोभिलाषाओं की पूर्ति करने वाला स्वीकारते हैं।

आधुनिक युग में श्रुतज्ञान परम्परा के प्रतिष्ठापक मुनि श्री १०८ धरसेनाचार्यजी ने पञ्चपरमेष्ठी वाचक णमोकार मन्त्र को 'अनादि निधन' कहा है। इस मन्त्र के प्रति अनादि निधन शब्द का प्रयोग शब्दात्मक

पुद्गल (Matter) के पर्याय का परिवर्तन तथा उसका ध्रौव्यपुद्गल द्रव्यात्मकता होने से त्रिकालाबाधित सत्य की कसौटी पर आज के वैज्ञानिक साधना द्वारा सिद्ध हो गया है।

मुनि श्री भूतबली व पुष्पदन्त की परीक्षा मन्त्र-साधना विधि से की थी तथा उसमे सफलता मिलने के बाद ही उन्हे श्रुत का ज्ञान कराया गया था, अस्तु मन्त्र-शास्त्र भी द्वादशाग रूप श्रुत के विद्यानुवाद का विषय रहा है। मन्त्र-साधना के द्वारा ही एकाग्रता को प्राप्त कर, क्रमश मोक्ष-सोपान पर आरूढ हुआ जा सकता है।

मन्त्र के उच्चारण से उत्पन्न हुई तरगो की आकृति की रचना Photograph of Vibrations ही यन्त्र का प्रतिरूप है। चाँदी, ताम्र आदि पर लिखित मन्त्र स्वरूप को ही यन्त्र कहा जाता है। वह मन्त्र को स्मरण कराने का साधन होता है। यथार्थ मे ध्वन्यात्मक उच्चारण से आकाश स्थित वायु के माध्यम मे कम्पायमान तरगो से जो आकृति रचित होती है, उसका जो ज्ञान स्वात्मज्ञान के द्वारा होगा, वही उस यन्त्र द्वारा भी प्राप्त होता है।

यन्त्र मे लौकिक-कार्य सम्पादन की शक्ति अन्तर्निहित रहती है। उस शक्ति से ही ताम्रपत्रादि मे चमत्कारिता को प्रकट किया जा सकता है। वही आत्म-शक्ति के प्रभाव का द्योतन भी करती है। वस्तुत मन्त्र, यन्त्र का विषय त्यागी, तपस्वी साधुजनो का ही है। इनकी साधना का मुख्य उद्देश्य स्वात्मस्वरूप की प्राप्ति ही है, तथापि धर्म प्रभावना हेतु इनका चमत्कारिक प्रयोग यथावसर स्वयमेव भी होता है। अत जो लोग धर्माचरण मे प्रवृत्त रहकर मन्त्र-यन्त्रों की साधना करते हैं, उन्हे वाछित फलो की नि सशय उपलब्धि होती है।

मन्त्र-यन्त्र साधना प्राय सभी धर्म-सम्प्रदायो मे प्रचलित है। जैन तथा बौद्ध धर्मों को यदि हिन्दू धर्म का सहोदर मान लिया जाय तो भी इस्लाम और यहाँ तक कि ईसाई धर्म मे भी मन्त्र-तन्त्र साधक पाये जाते हैं। साधन विधियाँ पृथक्-पृथक् होने पर भी उन सबका लक्ष्य एक जैसा ही रहता है।

जैन धर्म मे भी तन्त्र-मन्त्र एव यन्त्रो का बाहुल्य है। 'विद्यानुवाद' ग्रन्थ तन्त्र-मन्त्रों का भण्डार माना जाता है, परन्तु वह अब दुष्प्राप्य है। इधर 'लघुविद्यानुवाद' नामक एक ग्रन्थ पिछले दिनो प्रकाशित हुआ है, परन्तु उसमे सकलित मन्त्र-तन्त्रादि की शुद्धता असदिग्ध नही है।

अस्तु, साधकों को निश्चित सफलता प्राप्त हो, इस दृष्टि से, इधर-उधर से मन्त्र-तन्त्रादि का सकलन न करके, जिन स्तोत्रों में सम्बन्धित मन्त्र-यन्त्रों की प्रामाणिकता निर्विवाद है, केवल उन्हीं को इस सग्रह मे स्थान दिया गया है।

आशा है, मन्त्र-जिज्ञासु इसमें लाभान्वित होंगे।

प्रस्तुत ग्रन्थ हेतु सामग्री-सकलन में हमें जिन विद्वानों तथा ग्रन्थों से सहायता प्राप्त हुई, उन सभी के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं। श्री यतीन्द्रकुमार जैन शास्त्री, के हम अत्यधिक आभारी हैं, क्योंकि इस पुस्तक के सम्पादन में सर्वाधिक सहयोग उन्हीं से प्राप्त हुआ है।

अहीरपाड़ा, आगरा–२
१ जून, १९८४ ई०

—राजेश दीक्षित

विषय-सूची

—:०:—

० साधन से पूर्व आवश्यक-निर्देश

किसी भी मन्त्र-यन्त्र की साधना से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान में रखना आवश्यक है—

(१) मन्त्र सदैव गुरु-मुख से ही ग्रहण करना चाहिए। गुरु-मुख द्वारा ग्रहण किये गये मन्त्र ही फलदायक होते हैं।

(२) मन्त्र का जप अंग-शुद्धि, सकलीकरण एवं विधि-विधानपूर्वक करना उचित है। आत्मरक्षा के लिए सकलीकरण की आवश्यकता होती है।

(३) प्रत्येक तीर्थंकर की मूर्ति एक जैसी ही होती है, उनके चिह्नों के द्वारा ही उनकी अलग-अलग पहिचान की जाती है। किस तीर्थंकर का कौन-सा चिह्न है, इसका उल्लेख आगे किया गया है, अतः जब भी जिस तीर्थंकर के मन्त्र का साधन करें, उनकी विशिष्ट चिह्न युक्त मूर्ति का ही पूजन में प्रयोग करना चाहिए।

यद्यपि मन्त्र-साधना में तीर्थंकर की मूर्ति रखना आवश्यक नहीं है, तथापि उसे रखने से आत्म-रक्षा एवं मन्त्र-साधना में विशेष सहायता मिलती है।

(४) किसी भी मन्त्र अथवा यन्त्र की साधना करते समय उस पर पूर्ण श्रद्धा रखना आवश्यक है, अन्यथा वांछित फल प्राप्त नहीं होगा।

(५) मन्त्र-साधना के समय शरीर का स्वस्थ एवं पवित्र रहना आवश्यक है। चित्त शान्त हो तथा मन में किसी प्रकार की ग्लानि न रहे।

(६) मन्त्र-साधना के समय चित्त एकाग्र रहना चाहिए। वह किसी ओर को चलायमान न हो। मन्त्र का जप गुप्त रूप से करना चाहिए तथा किसी पर यह प्रकट नहीं करना चाहिए कि मैं अमुक कार्य के लिए अमुक मन्त्र की साधना कर रहा हूँ।

(७) शुद्ध, हवादार, पवित्र तथा एकान्त-स्थान में ही मन्त्र-साधना करनी चाहिए। मन्त्र-साधना की समाप्ति तक स्थान-परिवर्तन नहीं करना चाहिए।

(८) जिस मन्त्र की जैसी साधन विधि वर्णित है, उसी के अनुरूप सभी कर्म करने चाहिए। अन्यथा प्रवृत्ति करने से विघ्न-बाधाएँ उपस्थित हो सकती है तथा सिद्धि में भी सन्देह हो सकता है।

(९) मन्त्र-साधना में प्रारम्भ से अन्त तक दीपक, धूप-दान, आसन, माला, वस्त्र आदि में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहिए।

(१०) साधना काल में, चौबीस घण्टे में केवल एक बार ही शुद्ध सात्विक भोजन करना चाहिए। पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए तथा पृथ्वी अथवा लकडी के पट्टे (तख्त आदि) पर शयन करना चाहिए।

(११) अपने पहिनने के धोती, दुपट्टा, बनियान आदि वस्त्रों को प्रतिदिन धोकर सुखा देना चाहिए।

(१२) शुद्ध घृत का दीपक सम्पूर्ण साधना-काल में निरन्तर जलते रहना चाहिए।

(१३) प्रत्येक मन्त्र की साधना किसी शुभ मिती एवं वार में आरम्भ करनी चाहिए।

(१४) साधना-आरम्भ करने से पूर्व अपने मस्तक पर चन्दन कुकुम का तिलक लगाना आवश्यक है।

(१५) मन्त्र-साधना से पूर्व चोटी में गांठ लगा लेना आवश्यक है।

(१६) आसन बार-बार नहीं बदलना चाहिए। एक ही आसन से बैठकर मन्त्र की साधना करनी चाहिए।

(१७) प्रतिदिन शुद्ध जल से स्नान करने के बाद ही मन्त्र-साधना में प्रवृत्त होना चाहिए।

(१८) जप की समाप्ति के बाद हवन करना चाहिए, तदुपरान्त श्रावक-श्राविकाओं को भोजन कराना चाहिए।

(१९) धूप तथा हवन-सामग्री बाजार से न खरीद कर अपने हाथ से स्वयं ही बनानी चाहिए। बाजार की सामग्री में प्रायः सड़ी-घुनी वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है, जिनमें छोटे-छोटे कीडे-मकोडे अथवा जीवाणु भरे रहते है। ऐसी बाजारू धूप अथवा हवन सामग्री के प्रयोग से जीव-हिंसा होती है, फलतः शुभ के स्थान पर अशुभ-फल प्राप्त होता है।

के निर्देश हो तथा जिस रंग के पुष्पो का विधान हो, उन सबका यथावत् पालन करना चाहिए।

(२१) जप के आरम्भ तथा अन्त में भगवान् तीर्थंकर का ध्यान करना चाहिए तथा अन्त में स्तोत्र आदि का पाठ भी करना चाहिए।

(२२) भक्तामर स्तोत्र के मन्त्रो की साधना के समय भगवान् आदिनाथ तथा कल्याण मन्दिर स्तोत्र के मन्त्रो की साधना के समय भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति को चौकी पर स्थापित करना चाहिए। चतुर्विंशति तीर्थंकर के मन्त्रो की साधना के समय अलग-अलग तीर्थंकरों की मूर्ति की स्थापना करना उचित है।

(२३) जिन मनोभिलाषा पूरक साधना के साथ ऋद्धि तथा मन्त्र दोनो का उल्लेख है वहाँ उन दोनो का साथ-साथ समान संख्या में जप करना आवश्यक होता है।

(२४) एक बार में एक ही मन्त्र की साधना करना उचित है। इसी प्रकार एक समय में केवल एक ही मनोभिलाषा की पूर्ति का उद्देश्य सम्मुख रहना चाहिए।

(२५) एक ही मनोभिलाषा की पूर्ति के हेतु अनेक मन्त्रो का उल्लेख किया गया है, इनमें से जिस मन्त्र पर पूर्ण श्रद्धा हो, उसी की साधना करनी चाहिए।

टिप्पणी—यदि कोई बात समझ में न आये अथवा स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो तो उसके लिए इस पुस्तक के लेखक को जवाबी-पत्र लिखकर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

—: ० —

१ चतुर्विंशति तीर्थंकर अनाहत मन्त्र-यन्त्र

एक कल्प-काल मे २४ तीर्थंकर होते हैं। उनके कल्पित-स्वरूप की जो मूर्तियां तैयार की जाती है, वे प्राय समान आकृति की होती है, परन्तु उनके बोध-चिह्न अलग-अलग होते है तथा उन चिह्नो के द्वारा ही उनकी पृथक्-पृथक् पहिचान की जाती है।

तीर्थंकरो के नाम तथा उनके चिह्न क्रमश. इस प्रकार है—

तीर्थंकर का नाम	बोध-चिह्न
१. श्री ऋषभनाथ	बैल
२. श्री अजितनाथ	हाथी
३. श्री सभवनाथ	घोडा
४ श्री अभिनन्दननाथ	बन्दर
५ श्री सुमतिनाथ	चकवा
६ श्री पद्मप्रभ	कमल
७. श्री सुपार्श्वनाथ	साथिया
८ श्री चन्द्रप्रभ	चन्द्रमा
९. श्री पुष्पदन्तनाथ	मगर
१०. श्री शीतलनाथ	कल्पवृक्ष
११. श्री श्रेयासनाथ	गेंडा
१२. श्री वासुपूज्य	भैंसा
१३ श्री विमलनाथ	शूकर
१४. श्री अनन्तनाथ	सेही
१५ श्री धर्मनाथ	वज्रदण्ड
१६ श्री शान्तिनाथ	हरिण
१७ श्री कुन्थुनाथ	बकरा
१८. श्री अरहनाथ	मछली
१९ श्री मल्लिनाथ	कलश
२० श्री मुनि सुव्रतनाथ	कछुआ
२१. श्री नमिनाथ	नीलकमल

२२ श्री नेमिनाथ — शख
२३. श्री पार्श्वनाथ — सर्प
२४ श्री महावीर — सिंह

उक्त तीर्थंकरो मे से जिनके भी मन्त्र-यन्त्र का साधन करना हो, उनकी मूर्ति की बैठक पर तदनुरूप बोध-चिह्न अवश्य होना चाहिए, तभी मूर्ति सार्थक होगी। किस मन्त्र की साधना मे किस तीर्थंकर की मूर्ति की स्थापना आवश्यक है, यह प्रत्येक मन्त्र के शीर्षक पर उल्लिखित है।

मन्त्र-साधना के समय एक लकडी की चौकी पर स्वच्छ रेशमी वस्त्र बिछाकर, उसके ऊपर यन्त्र रखना चाहिए। प्रत्येक यन्त्र का स्वरूप मन्त्र के साथ ही दिया गया है। यन्त्र को स्वर्ण, चांदी अथवा तांबे के पत्र पर खुदवा लेना चाहिए। यन्त्र को स्थापित करने के बाद उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करनी चाहिए। प्राण-प्रतिष्ठा की विधि इस प्रकरण के अन्त मे दी गई है। प्रत्येक मन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठा उसी विधि से करनी चाहिए।

प्राण-प्रतिष्ठित यन्त्र के ऊपर मन्त्र से सम्बन्धित तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर उसकी पुष्प-धूप-दीप आदि से अर्चना करें, तदुपरान्त निश्चित सख्या मे मन्त्र का जप आरम्भ करे। प्रत्येक मन्त्र-जप के बाद एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते जाना चाहिए। पुष्प गुलाब, वेला, चमेली आदि के सुगन्धित तथा पवित्र होने चाहिए।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार उसका प्रयोग करना चाहिए। प्रयोग-विधि आदि का प्रत्येक मन्त्र के साथ उल्लेख किया गया है।

१. श्री ऋषभनाथ तीर्थंकर

अनाहत राजा वशीकरण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री ऋषभनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से राजदरबार में राजा अथवा राज्याधिकारियो का वशीकरण होता है।

मन्त्र—"ॐ णमो जिणाणं च, णमो ओहि जिणाणं च, णमो परमोहि जिणाणं। णमो सव्वोहि जिणाणं। ॐ णमो अणंतोहि जिणाणं। ॐ वृषभस्स भगवदो वृषभ स्वामि, घत्त वियराणि अरिहंताणं विज्झाणं महा विज्झाणं अणमिप्पदेयिवकम्मियाणि जम्मिर्केशविस कें अनाहत विद्यायँ स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या १) यन्त्र को किसी स्वर्ण अथवा चांदी के पत्र पर खुदवा लें।

फिर एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर उसके ऊपर यन्त्र को रखें तथा प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री ऋषभनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पचामृत अभिषेक से यन्त्र-पूजा कर, १००८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री ऋषभनाथ अनाहत मन्त्र का १००८ की सख्या में जप करें। प्रत्येक मन्त्र जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते जायं। इस प्रकार तीन दिनों तक, नित्य प्रात काल १००८ की सख्या में पुष्प सहित मन्त्र जप करते रहें। इस प्रक्रिया से मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। प्रत्येक यन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठा का मन्त्र आगे लिखा गया है, वहाँ देख लें।

प्रयोग-विधि—मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय, राजदरबार आदि में जाने से पूर्व १००० की सख्या में मन्त्र का जप कर लें तो साध्य-व्यक्ति का वशीकरण होता है।
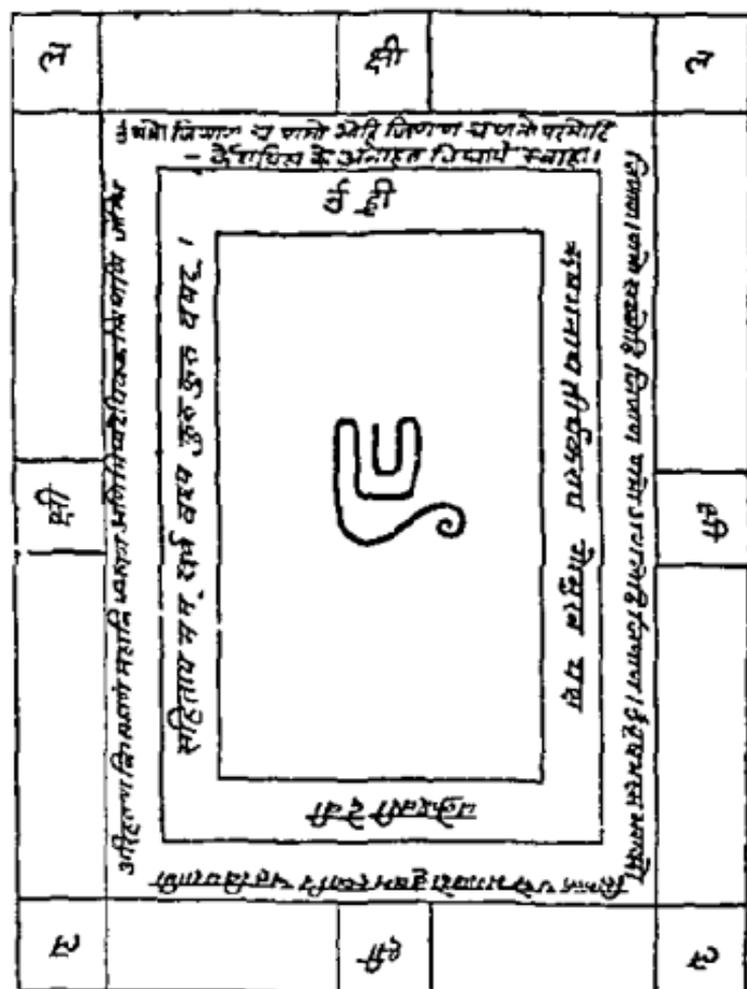
२. श्री अजितनाथ तीर्थंकर

अनाहत सर्ववशीकरण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री अजितनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से राजदरबार में अधिकारीगण तथा अन्य सब लोगों का वशीकरण होता है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अजितस्स सिज्झि धम्मे भगवदो विज्झाणं महाविज्झाण। ॐ णमो जिणाण, ॐ णमो परमोहि जिणाणं, ॐ णमो सव्वोहि जिणाण भगवदो अरहतो अजितस्स सिज्झधम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर अजिते अपराजिते पाणिपादे महाबले अनाहत विद्यायै स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्व प्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या २) के यन्त्र को किसी स्वर्ण, चाँदी अथवा तांबे के पत्र पर खुदवाले। फिर एक

२

लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर उसके ऊपर यन्त्र को रखें तथा प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री अजितनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत अभिषेक से यन्त्र-पूजा कर, १००८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री अजितनाथ अनाहत मन्त्र का १००८ की संख्या में जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते जायें। इस प्रकार किसी भी शुभ दिन में प्रातः काल केवल एक ही दिन १००८ की संख्या में जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। (यन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठा विधि आगे दी गई है।)

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करके राजदरबार आदि में प्रवेश करने से साध्य-व्यक्ति का वशीकरण होता है।

३. श्री संभवनाथ तीर्थंकर

अनाहत कार्य-साधक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री संभवनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से वांछित कार्य की सिद्धि होती है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो शंभवस्स अनाहत विज्जंई सिज्झि धम्मे भगवदो महाविज्झाण महाविज्झा शंभवस्स शंभवे महा शंभवे शंम वाणं स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या ३) के यन्त्र को किसी स्वण, चाँदी अथवा तांबे के पत्र पर खुदवालें। फिर एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उसके ऊपर यन्त्र को रखें तथा प्राण-प्रतिष्ठा करें (प्राण-प्रतिष्ठा की विधि आगे दी गई है), तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री संभवनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर पञ्चामृत अभिषेक से यन्त्र-पूजा कर, १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री संभवनाथ अनाहत मन्त्र का १०८ की सख्या में जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते जायें। इस मन्त्र का जप पूर्णिमा अथवा अमावास्या के दिन ही करना चाहिए। उक्त विधि से केवल एक दिन १०८ की सख्या में जप करने से ही यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार पुष्पों सहित जप करने से इच्छित-कार्य की सिद्धि होती है।
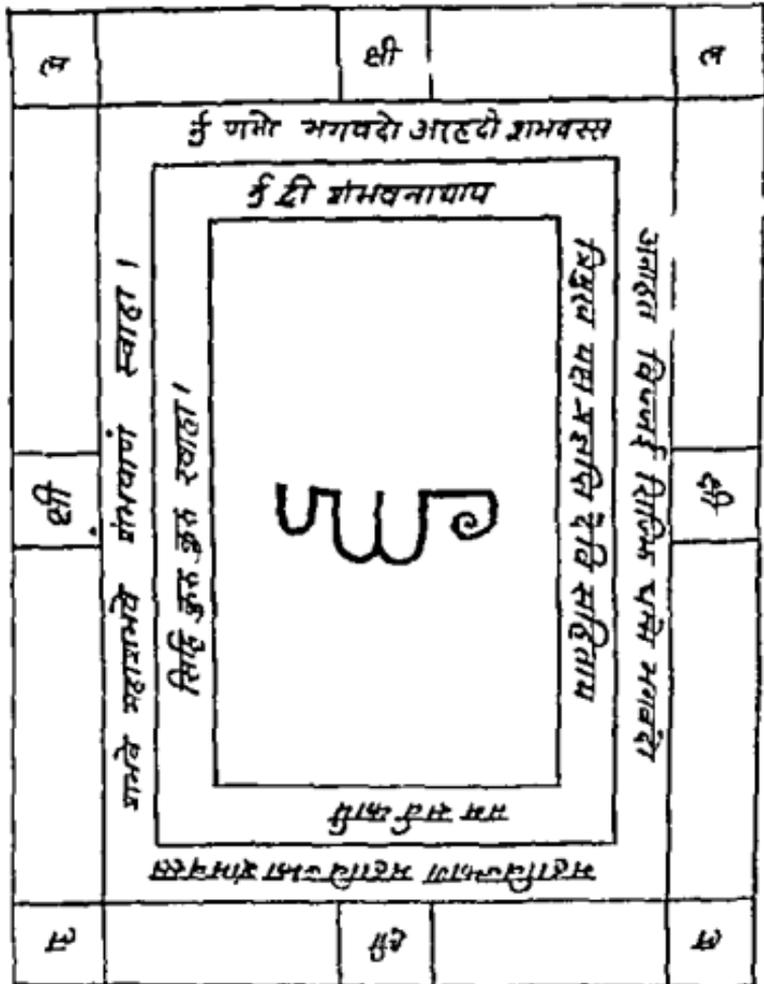
४. श्री अभिनन्दननाथ तीर्थंकर

अनाहत सर्वजन स्वाधीन मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री अभिनन्दननाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सर्वजन स्वाधीन रहते हैं।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो अभिणदणस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर महाविज्झर अभिणन्दणे स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (सख्या ४) के यन्त्र का किसी स्वर्ण, चौकी अथवा तांबे के पत्र पर खुदवाले। फिर एक लकडी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर उस पर यन्त्र को रखे तथा प्राण-प्रतिष्ठा करें, तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री अभिनन्दननाथ तीर्थंकर की

मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत अभिषेक से यन्त्र-पूजा कर, १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री अभिनन्दननाथ अनाहत मन्त्र का १०८ की संख्या में जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते जायें। मन्त्र का जप किसी भी शुभ दिन में प्रातःकाल करना चाहिए। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करके पानी को अभिमन्त्रित करे। उस अभिमन्त्रित जल द्वारा मुख-प्रक्षालन करने से सर्वजन स्वाधीन रहते हैं।
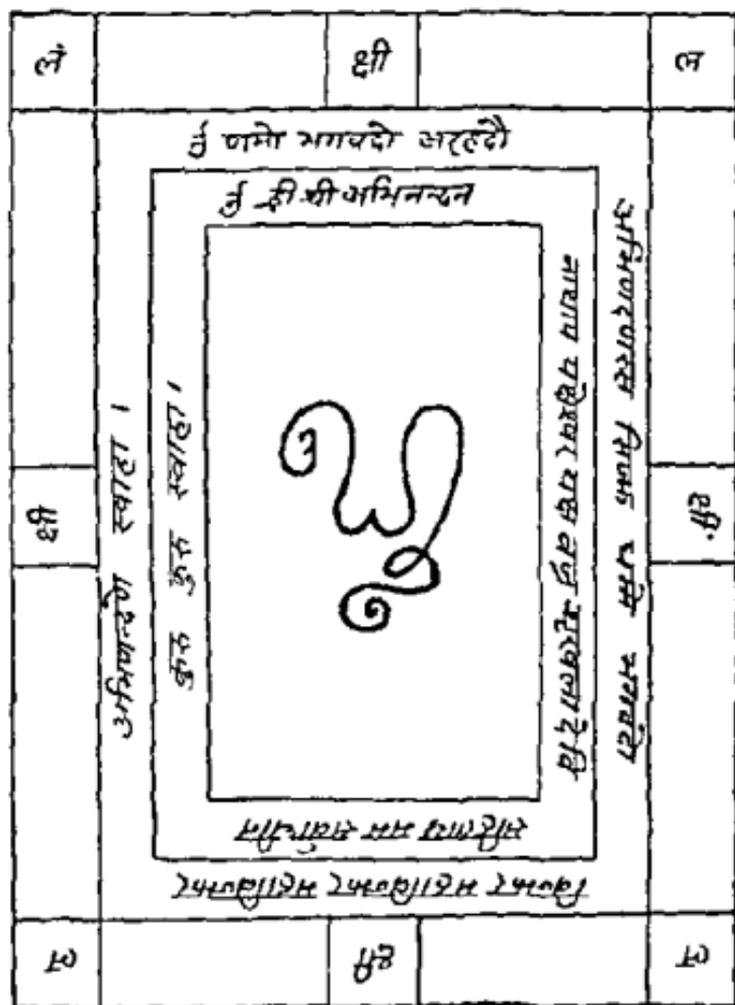
५. श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर

अनाहत पुरुष-वशीकरण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से पुरुष-वशीकरण होता है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहतो सुमतिस्स सिज्झि-धम्मे भगवदो विज्झर सुमति सामिणवानगे स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या ५) के यन्त्र को किसी स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवालें। फिर एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-

प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर की मूर्ति
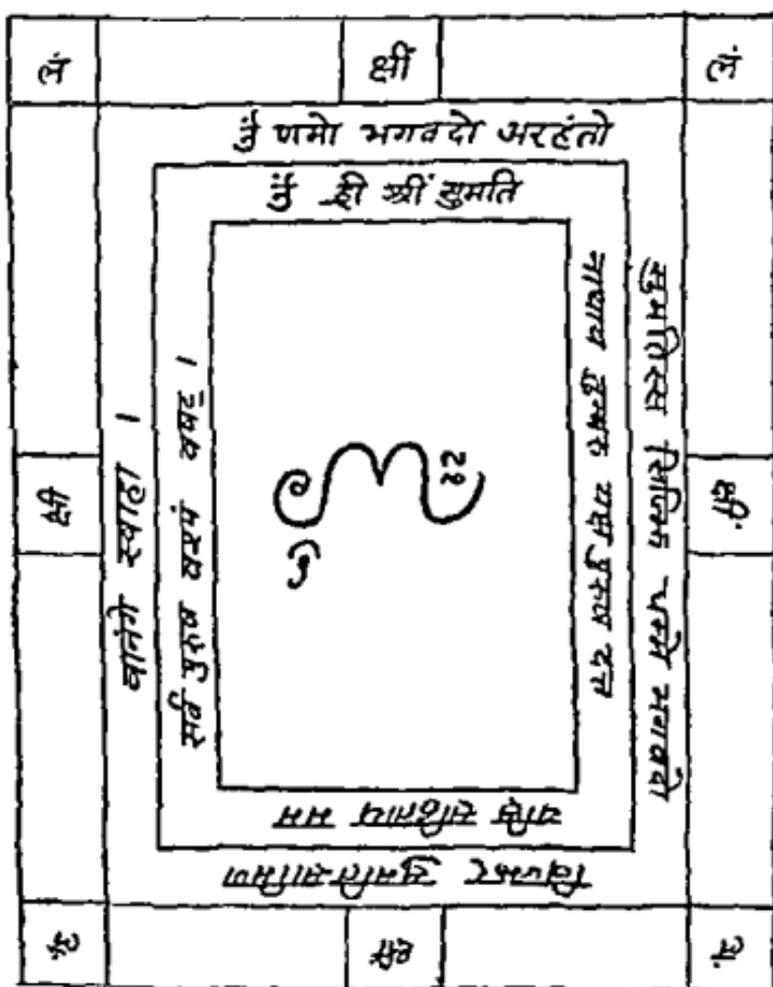
स्थापित कर, पञ्चामृत अभिषेक से यन्त्र-पूजा कर १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर अनाहत मन्त्र का १०८ की संख्या में जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते जायें। मन्त्र का जप किसी भी शुभ दिन में प्रातःकाल त्रिकरण शुद्धिपूर्वक करना चाहिए। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार त्रिकरण शुद्धिपूर्वक जप करने से साध्य-व्यक्ति वशीभूत हो जाता है तथा इच्छित कार्य की सिद्धि होती है।

६. श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर

अनाहत लक्ष्मी-वर्द्धक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से धन-सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

मन्त्र—"**ॐ णमो भगवदो अरहदो पोमे अरहतस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर पोमें पोमे महापोमे महापोमेश्वरी स्वाहा।**"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या ६) के यन्त्र को किसी भी धातु के पत्र पर खुदवाले। फिर एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र-पूजा कर, १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का तीनों संध्या काल मे १०८ बार (प्रत्येक संध्या काल मे १०८ बार) जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते जाँय। मन्त्र का जप किसी भी शुभ दिन में किया जा सकता है। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार तीनों संध्या-काल में जप करते रहने से धन-सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

६
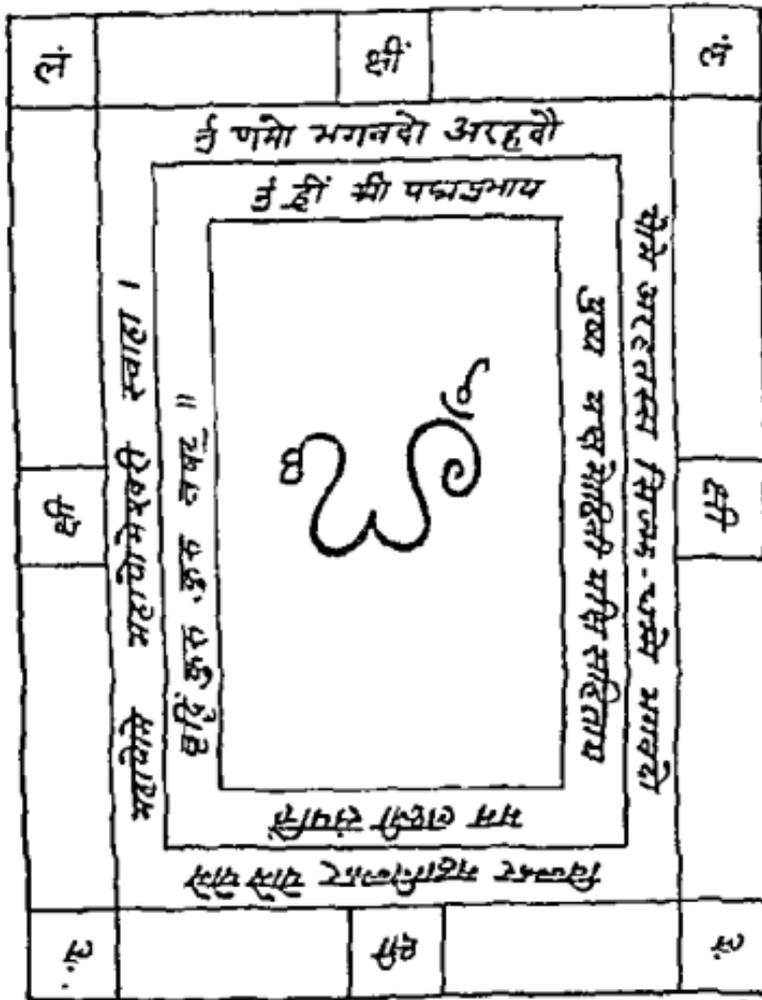
७. श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर

अनाहत वृश्चिक भय नाशक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से वृश्चिक (बिच्छू) का भय दूर होता है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो सुपासिसस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर हंसे सुपासि सुमलिपासे स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या ७) के यन्त्र को किसी भी धातु के पत्र पर खुदवालें। फिर एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी

वस्त्र बिछाकर उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करे। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर, १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का किसी भी शुभ दिन में प्रात काल १०८ बार जप करे। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते जाँय। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय मन्त्र का १०८ बार जप करने से वृश्चिक (विच्छू) भय दूर हो जाता है तथा वृश्चिक-दंश का विष उतर जाता है।
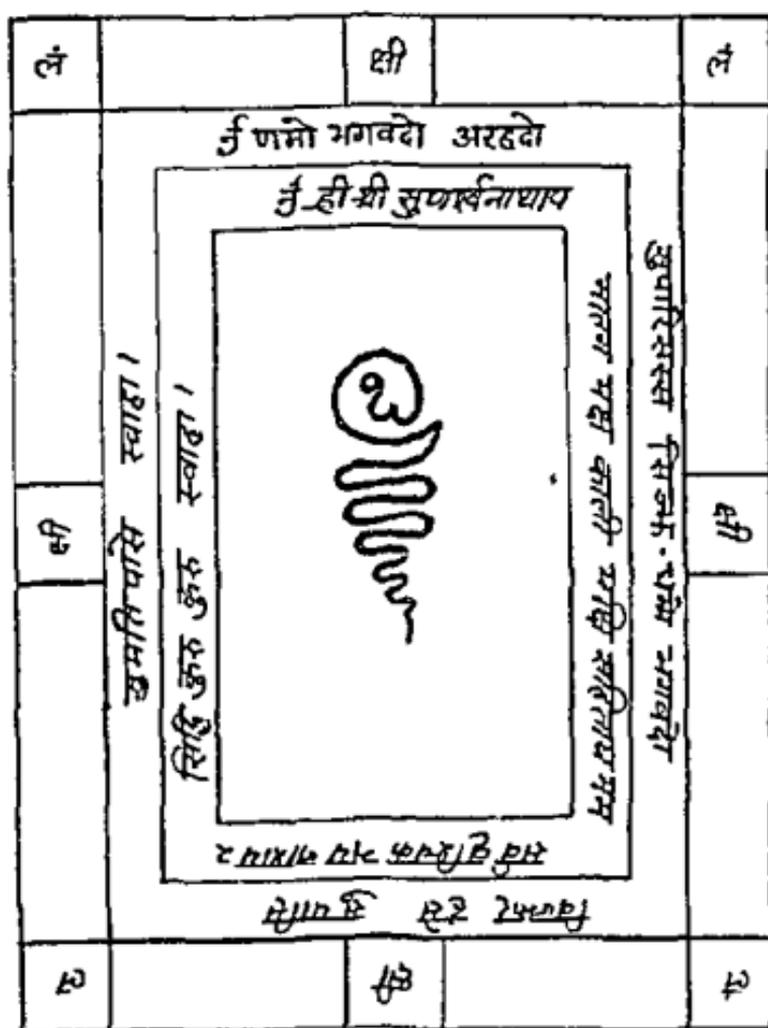
८. श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकर

अनाहत स्त्री-पुरुष वशीकरण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से अभिलषित स्त्री-पुरुष वश मे हो जाते है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो चन्दप्पहस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर चदे चदप्पहस्सपूर्व स्वाहा ।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (सख्या ८) के यन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवाले। फिर एक लकडी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रख कर प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त मन्त्र के ऊपर श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर,
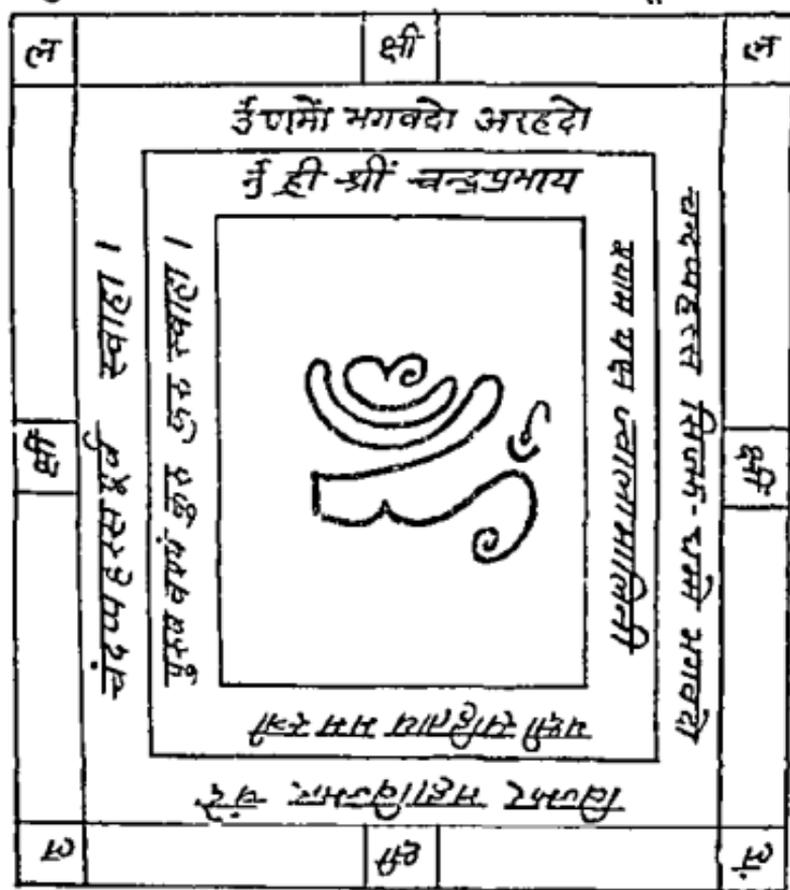
पञ्चामृत अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर, श्वेतवर्ण के १०८ पुष्पो द्वारा पूर्वोक्त श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का, किसी भी शुभ दिन मे

प्रातःकाल १०८ बार जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक श्वेत पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जायें। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाएगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित-जल से मुख प्रक्षालन कर जिस साध्य स्त्री-पुरुष के समक्ष पहुंचा जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगा।

६. श्री पुष्पदंतनाथ तीर्थंकर

अनाहत अचिन्त्यफलदायक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री पुष्पदंतनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से अचिन्त्यफल की प्राप्ति होती है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो पुप्फदंतस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर पुप्फे पुप्फेसरि सुरि स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या ६) के यन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवाले। फिर एक लकड़ी की
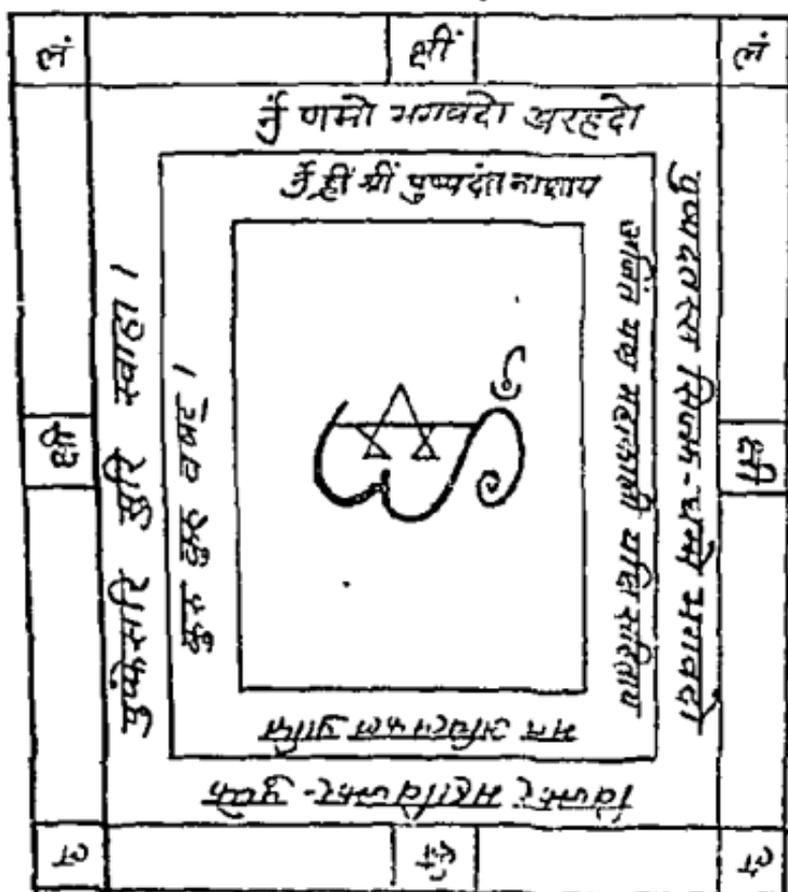
चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री पुष्पदतनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र को पूजा कर, १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री पुष्पदतनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का, किसी शुभ दिन में प्रातःकाल १०८ बार जप करे। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जायें। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित-जल से मुख-प्रक्षालन करने पर अचिन्त्य फल की प्राप्ति होती है।

१०. श्री शीतलनाथ तीर्थंकर

अनाहत सर्वपिशाचवृत्ति भयनाशक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री शीतलनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब प्रकार की पिशाचवृत्ति का भय दूर होता है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो शीतलस्स अनाहत विज्जा विज्झारइ सिज्झ-धम्मे भगवदो महाविज्झर महाविज्झ शोयलस्स सिवो ससिरा अणुग्रहि अणुमाणमो भगवदो नमो नमः स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (सख्या १०) के यन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवालें। फिर एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री शीतलनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र को पूजा कर, १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री शीतलनाथ तीर्थंकर के अनाहत-मन्त्र का, किसी शुभ दिन मे प्रात काल १०८ बार जप करे। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जायें। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित जल द्वारा मुख प्रक्षालन करने से सब प्रकार की पिशाच-वृत्ति का भय नष्ट होता है।
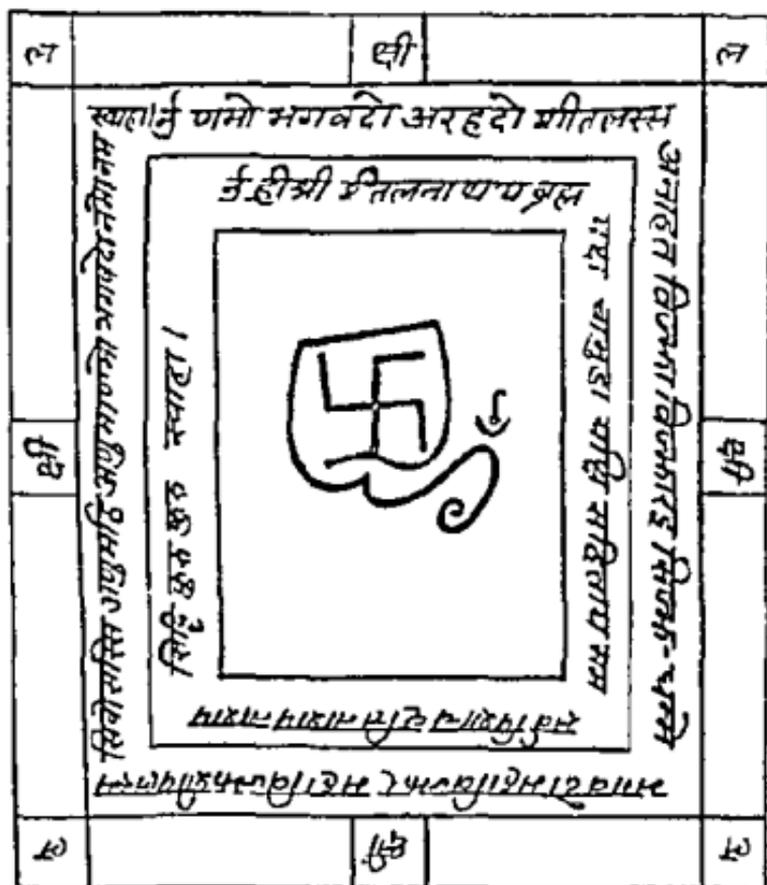
१०

११. श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर

अनाहत चतुष्पद-रक्षण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री श्रेयासनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब प्रकार के चतुष्पदो (चौपायो) की रक्षा होती है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो श्रेयास सिज्झि-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर श्रेयास करं भयंकरं स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (सख्या ११) के यन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवालें। फिर किसी शुभ दिन मे प्रात काल एक लकडी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री श्रयासनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पन्चामृत-अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर, १०८ पुष्पो द्वारा पूर्वोक्त श्री श्रेयासनाथ तीथकर के अनाहत मन्त्र का

१०८ बार जप करे। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जायें। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करने से चतुष्पदो (चौपाये जानवरों) की रक्षा होती है।
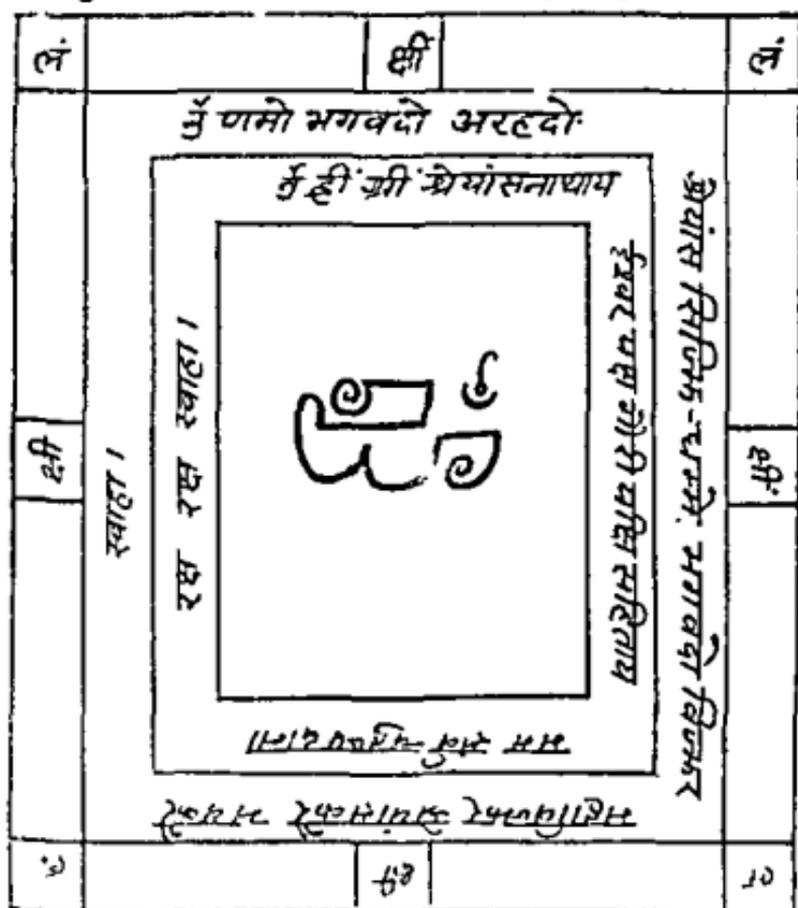
१२. श्री वासुपूज्यनाथ तीर्थंकर

अनाहत सर्वकार्य सिद्धि मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री वासुपूज्यनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब कार्य सिद्ध होते हैं।

मन्त्र—" ॐ णमो भगवदो अरहदो वासुपूज्य सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर पुज्जे महापुज्जे पुज्जाये स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या १२) के यन्त्र को स्वर्ण, चांदी अथवा तांबे के पत्र पर खुदवाले। फिर किसी शुभ दिन में

प्रातःकाल एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री वासुपूज्यनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर, १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री वासुपूज्यनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जाँय। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का ध्यान करने मात्र से ही सब कार्य सिद्ध होते हैं।
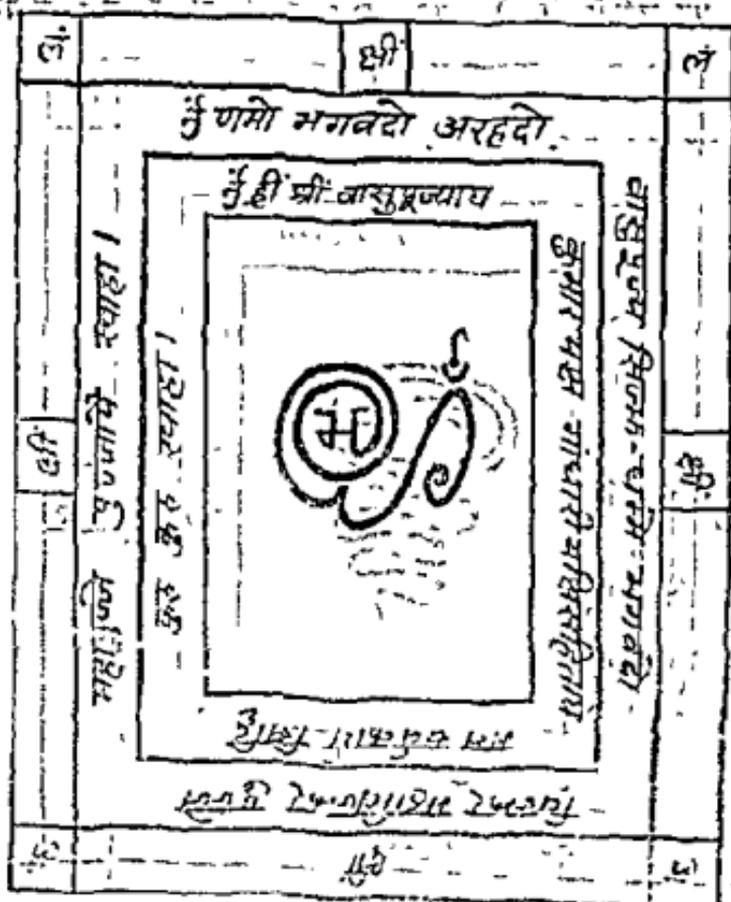
१३. श्री विमलनाथ तीर्थंकर

अनाहत तुष्टि-पुष्टि दायक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री विमलनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब प्रकार की पुष्टि-तुष्टि प्राप्त होती है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो विमलस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर अमले विमले कमले निम्मले स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या १३) के मन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवाले। फिर, किसी शुभ दिन में प्रातःकाल एक लकडी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर मन्त्र
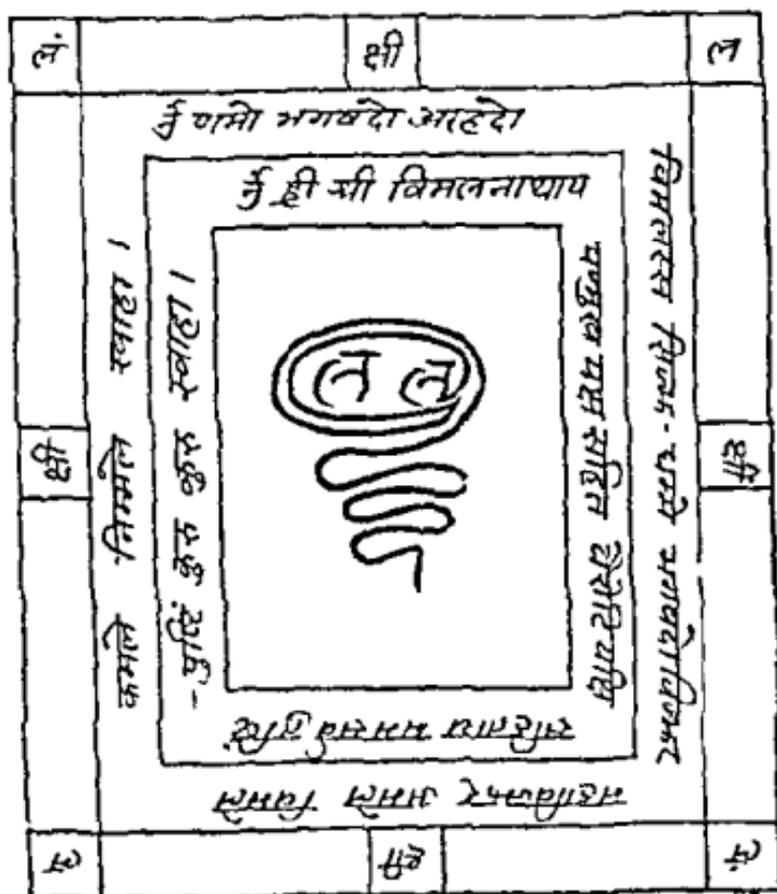
को रखकर प्राण प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री विमलनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर,

१०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री विमलनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र को १०८ बार जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जांय। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करने से तुष्टि और पुष्टि प्राप्त होती है।

१४. श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर

अनाहत सर्व सौख्यदायक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब प्रकार के इन्द्रियजनित सुख प्राप्त होते हैं तथा परम्परा से मोक्ष भी मिलती है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो अणंत सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर अणंते अणंतणाणे अणंत केवल णणे अणंत केवल दंसणे अणु पुज्जवासणे अणंतागम केवलियं स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या १४) के मन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवाले। फिर, किसी शुभ दिन में प्रातःकाल एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर श्वेतवर्ण के १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जांय। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का जप करने से सब प्रकार के इन्द्रियजनित सुख प्राप्त होते हैं तथा प्रतिदिन जप करते रहने से मोक्ष भी मिलता है।

१५. श्री धर्मनाथ तीर्थंकर

अनाहत सर्ववशीकरण मन्त्र-यन्त्र
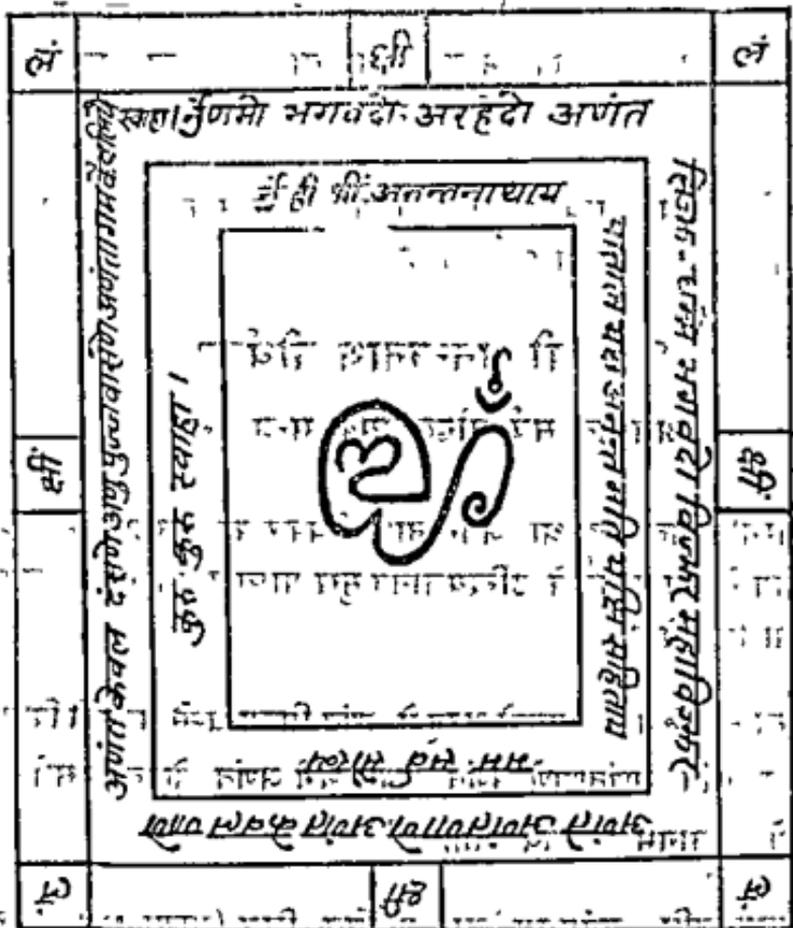
निम्नलिखित मन्त्र श्री धर्मनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब लोगों का वशीकरण होता है।

मन्त्र—ॐ णमो भगवदो अरहदो धम्मरस सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर धम्मे सुधम्मेण धम्माइं वा मुहुते भंते-धम्मे अंगमे मंमेवु अपदि दम्मे स्वाहा।

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या १५) के यन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवालें। फिर, किसी शुभ दिन मे

प्रातःकाल एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री धर्मनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री धर्मनाथ तीर्थंकर के अनाहूत मन्त्र का १०८ बार जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जाँय। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित ताम्बूल (पान) जिस व्यक्ति को खिला दिया जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगा।

१६. श्री शान्तिनाथ तीर्थंकर

अनाहत सर्वशान्तिकरण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री शान्तिनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब उपद्रव शान्त होते है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो शान्तिस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झा महाविज्झा शान्तिहूकम्पमे स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (सख्या १६) के यन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताबे के पत्र पर खुदवाले। फिर, किसी शुभ दिन मे प्रात काल एक लकडी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र
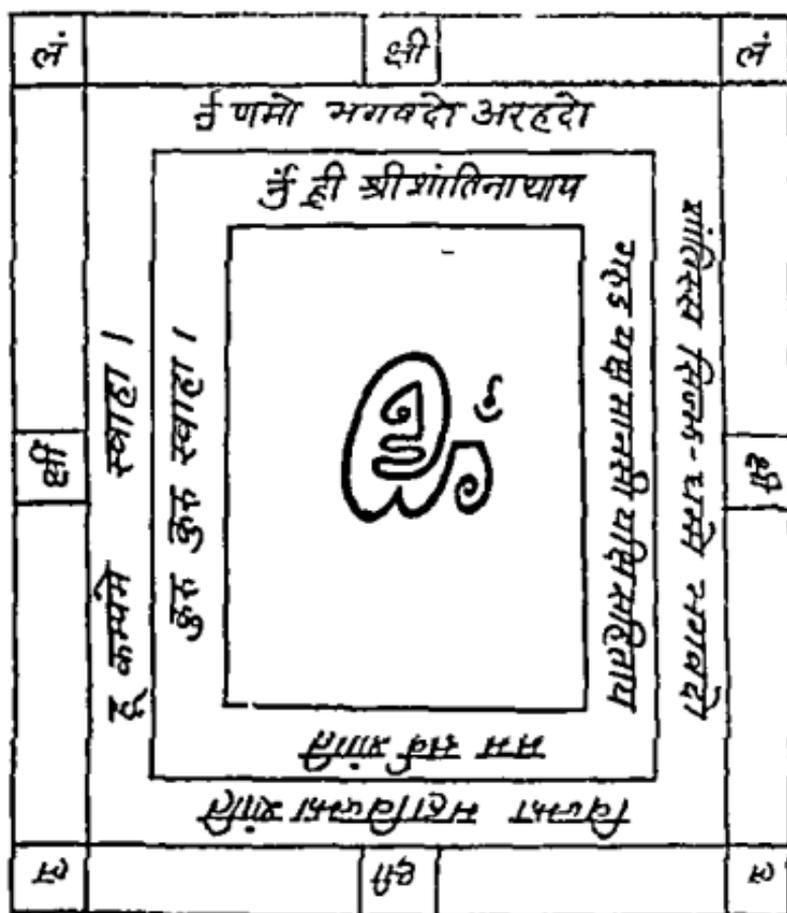
को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री शान्तिनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर,

१०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री शान्तिनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जाँय। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करने से सब प्रकार के उपद्रव शान्त होते हैं।

१७. श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर

अनाहत मत्कुणादि उपद्रवनाशक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब प्रकार के वृश्चिक, मक्षिका, मत्कुण (मच्छर) आदि के उपद्रव नष्ट हो जाते हैं।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो कुन्थुस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर कुन्थु कुन्थु कं कुन्थुशे स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या १७) के यन्त्र
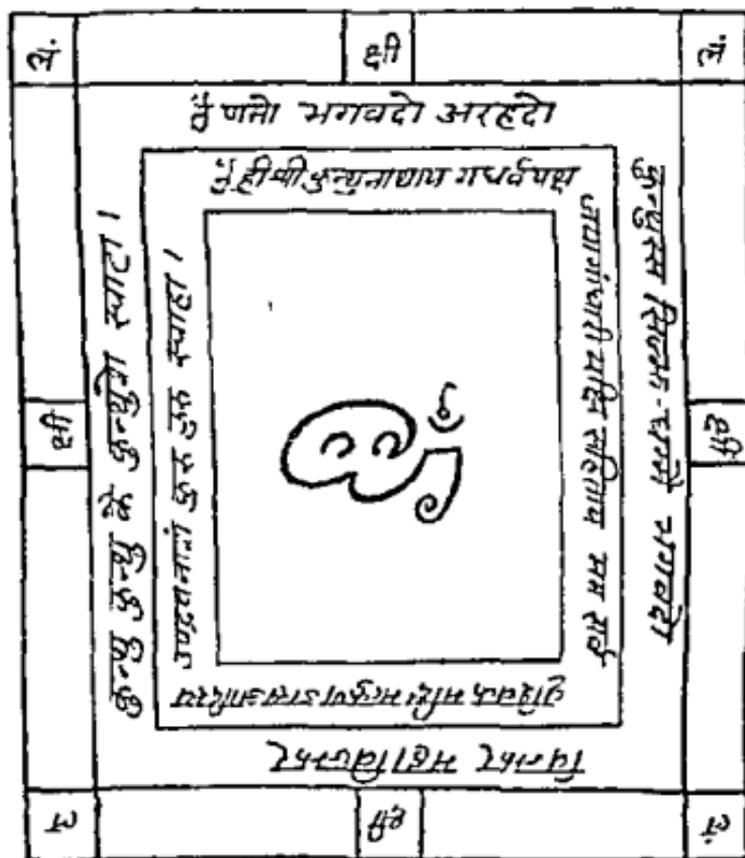
को स्वर्ण, चांदी अथवा तांबे के पत्र पर खुदवालें। फिर किसी शुभ दिन मे प्रात काल एक लकडी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करे। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर, १०८ पुष्पो द्वारा पूर्वोक्त श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करे। प्रत्येक मन्त्र जप के साथ एक एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जांय। इस विधि से यन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता क समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करने से बिच्छू, मधुमक्खी, मच्छर, खटमल, डांस आदि जीवो के उपद्रव नष्ट हो जाते हैं।

१८. श्री अरहनाथ तीर्थंकर

अनाहत द्यूत-विजयप्रद मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री अरहनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग मे द्यूत-क्रीडा (जुए) मे जीत होती है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो अरहस्स सिज्झ-धम्मे भगवदी विज्झर महाविज्झर अरणे अप जिप्रहति स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (सख्या १८) के यन्त्र को स्वर्ण, चादी अथवा तावे के पत्र पर खुदवालें। फिर किसी शुभ दिन मे प्रात काल एक लकडी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा कर। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री अरहनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर, १०८ पुष्पो द्वारा पूर्वोक्त श्री अरहनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करें। प्रत्येक मन्त्र जप के साथ एक एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जांय। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करने से द्यूत क्रीडा (जुए) आदि मे जीत होती है।
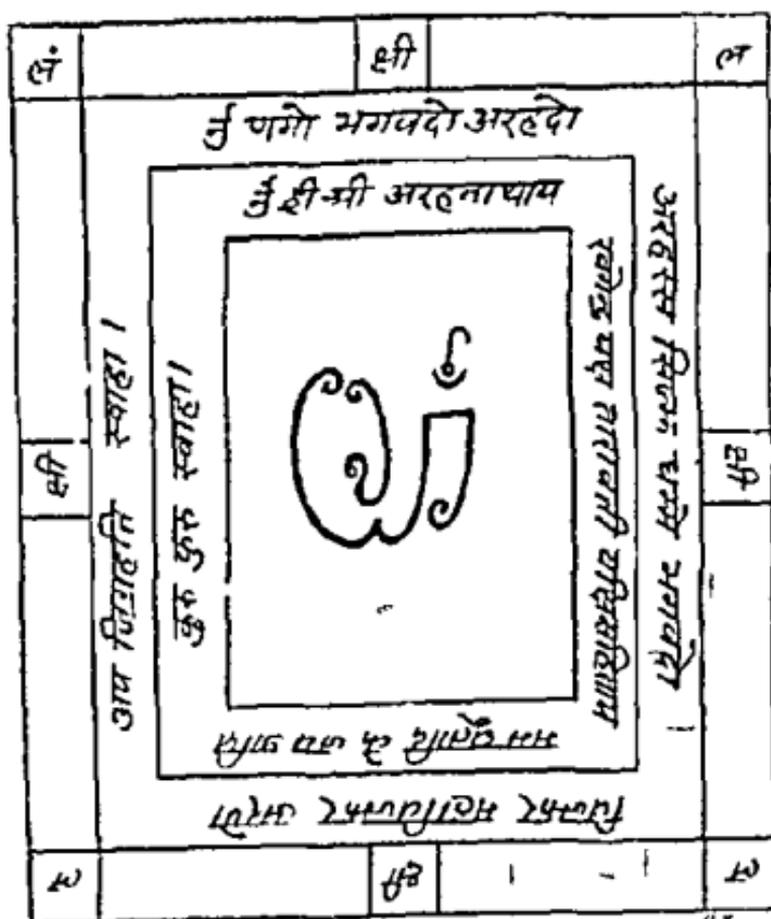
१९. श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर

अनाहत चिन्तित कार्यसिद्धिप्रद मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से चिन्तित कार्य की सिद्धि होती है।

मन्त्र—'ॐ णमो भगवदो अरहदो मल्लिस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर मल्लि मल्लि अरिपापस्स मल्लि स्वाहा।"

साधन विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या १९) के यन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवायें। फिर, किसी शुभ दिन में प्रातःकाल एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर,

१०८ पुष्पो द्वारा पूर्वोक्त श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करे। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जांय। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करने से चिन्तित कार्य की सिद्धि होती है।
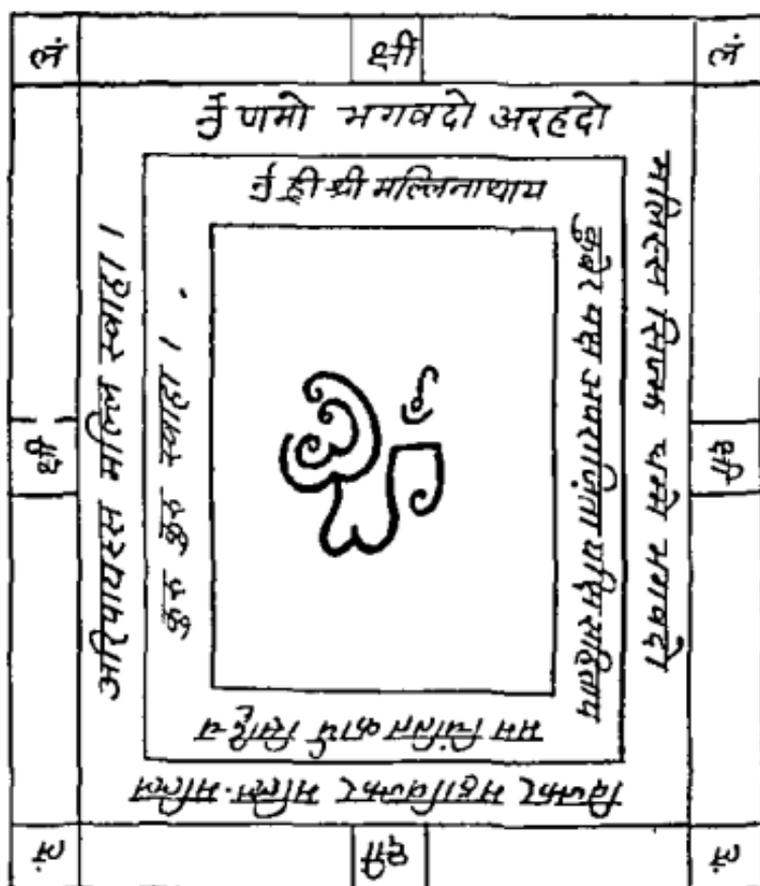
२०. श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर

अनाहत वशीकरण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से द्विपद तथा चतुष्पद वशीभूत होते हैं।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो मुनिसुव्वयस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर सुध्यिदेतहृयहे स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या २०) के यन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवाले। फिर किसी शुभ दिन में प्रात काल एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करे। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषक से यन्त्र की पूजा कर, १०८ पुष्पो द्वारा पूर्वोक्त श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जाय। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का स्मरण करने मात्र से ही द्विपद (मनुष्य) तथा चतुष्पद (पशु) वशीभूत हो जाते हैं।

२०
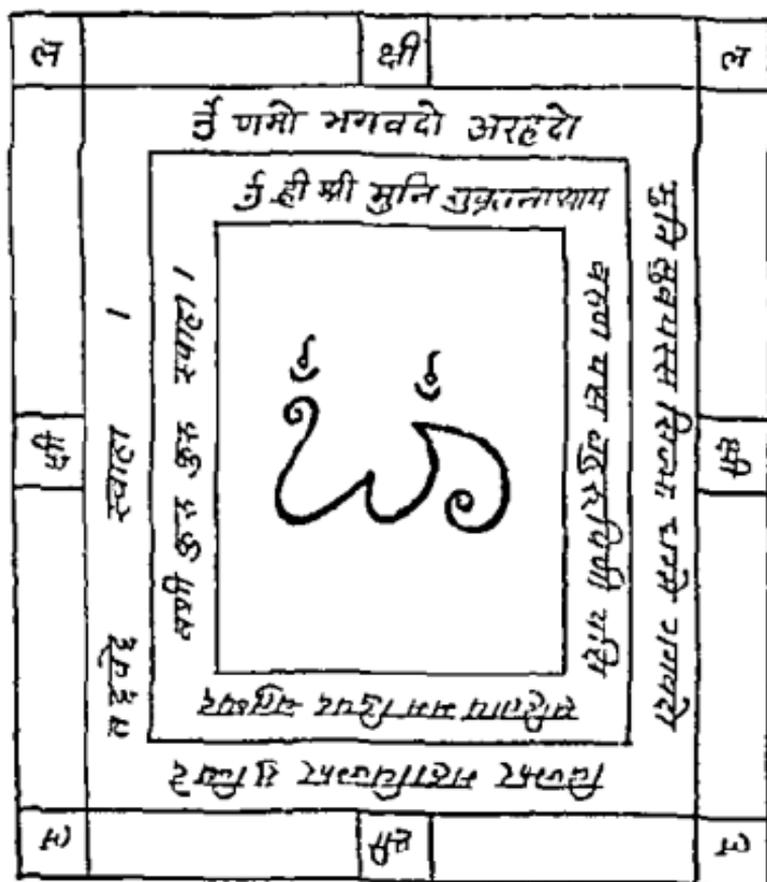
२१ श्री नमिनाथ तीर्थंकर

अनाहत सर्ववशीकरण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री नमिनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब लोग वशीभूत हो जाते हैं।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो णमिस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर णमि णमि स्वाहा।"

साधन विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या २१) के यन्त्र को स्वर्ण चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवायें। फिर, किसी शुभ दिन में प्रातःकाल एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र

को रखकर, प्राण-प्रतिष्ठा करे। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री नमिनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर, १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री नमिनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करे। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जाय। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित पुष्प अथवा ताम्बूल जिस व्यक्ति को दे दिया जायेगा, वह सदैव वश में बना रहेगा।

२२. श्री नेमिनाथ तीर्थंकर

अनाहत युद्ध विजयप्रद मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री नेमिनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से युद्ध में विजय प्राप्त होती है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो अरिट्ठ णेमिस्स लिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर सम्मति महारति अरति ददिरसति महति स्वाहा।"
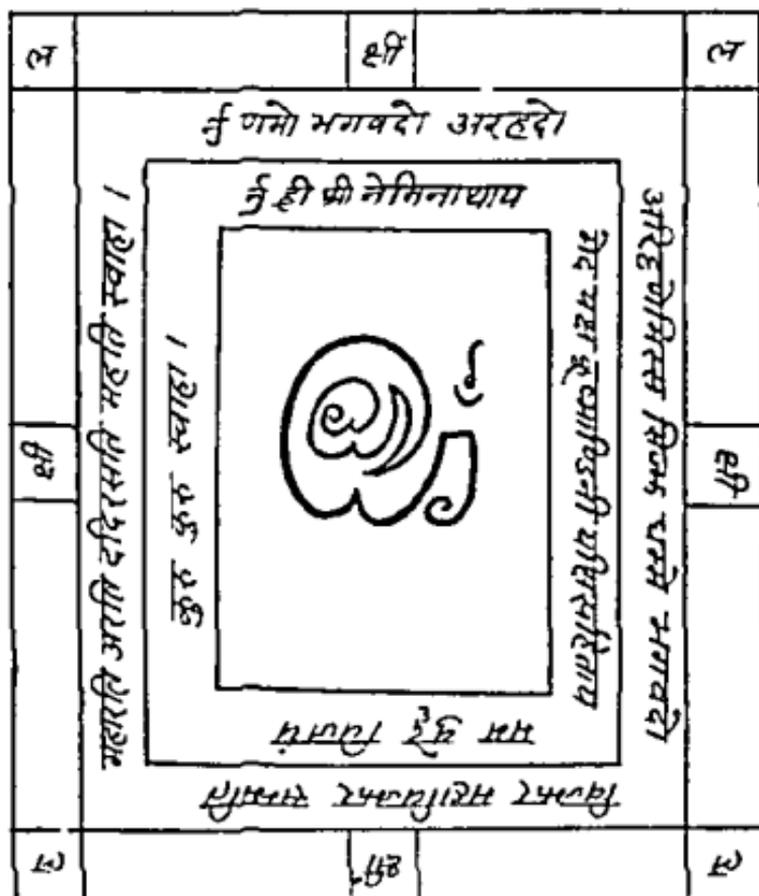
२३. श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर

अनाहत आरोग्यता दायक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से आरोग्य लाभ होता है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो उरगकुल जासु पासु सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर वुग्गं महावुग्गं से पासे संमास सनिगितोदि स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या २३) के यन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवालें। फिर, किसी शुभ दिन मे प्रात.काल एक लकडी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर, प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र की

पूजा कर, १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करें। प्रत्येक मन्त्र के जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जाँय। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र द्वारा पुष्प अथवा ताम्बूल अभिमन्त्रित कर, किसी रोगी व्यक्ति को देने से उसे आरोग्यता प्राप्त होती है।

२४. श्री महावीर तीर्थंकर

अनाहत युद्ध विजयप्रद यन्त्र-मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री महावीर तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से युद्ध में विजय प्राप्त होती है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो महति महावीर वड्ढमाण बुद्धस्स अणाहत विज्जाइ सिज्झ धम्मं भगवदो महाविज्झ महाविज्झ वीर महावीर त्तिरित्तणमविवीर जयतां अपराजिते स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या २४) के यन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवालें। फिर, किसी शुभ दिन में प्रातःकाल एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर, प्राण-प्रतिष्ठा करे। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री-महावीर तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर, १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री महावीर तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करें। प्रत्येक मन्त्र के जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जाँय। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र को जपने से युद्ध भूमि में युद्ध करने को आया हुआ शत्रु साधक के अधीन हो जाता है तथा शत्रु-सेना पर विजय प्राप्त होती है।
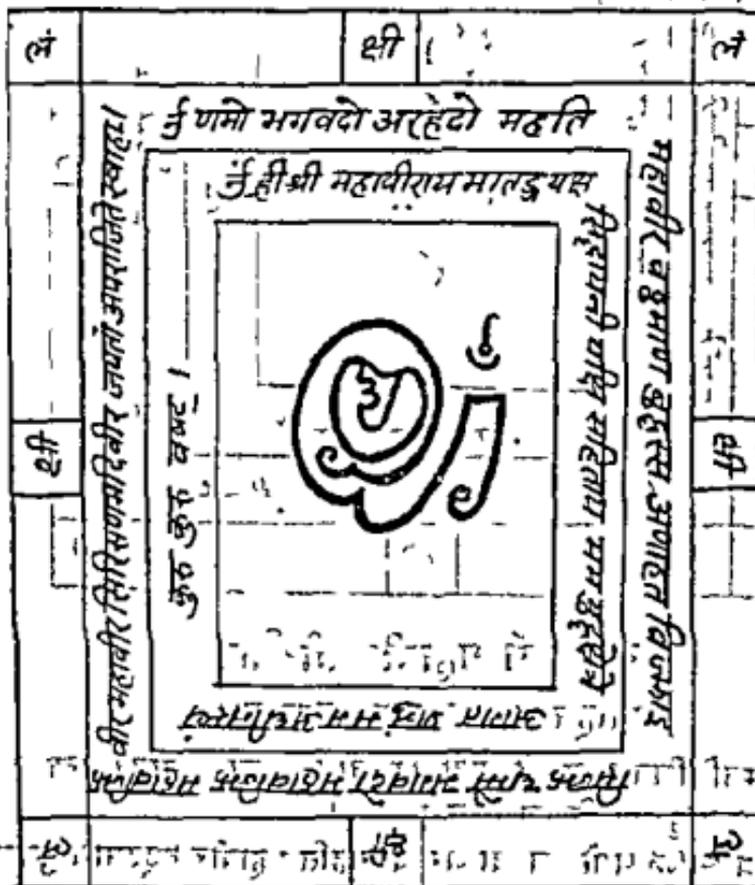
यन्त्र प्राण-प्रतिष्ठा मन्त्र

पीछे जिन चौबीस यन्त्रों का वर्णन किया गया है, उनकी प्राण-प्रतिष्ठा का मन्त्र निम्नानुसार है—

मन्त्र—"ॐ क्रों ह्रीं असि आउसा य र ल व श ष स ह अमुष्य प्राण इह प्राण अमुष्य जीवा इहस्थिता अमुष्य यन्त्र, मन्त्र, तन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि काय वाङ् मन् चक्षु श्रोत्र घ्राण प्राणं देवदत्तस्य इहैवायन्तु अर्हं अत्र सुखं चिरंतिष्ठंतु स्वाहा।"

आवश्यक टिप्पणी—(१) उक्त मन्त्र मे जहाँ-जहाँ 'अमुष्य' शब्द का प्रयोग हुआ है, वहाँ-वहाँ जिन तीर्थंकर का यन्त्र हो, उनके नाम का उच्चारण करना चाहिए और जहाँ 'देवदत्तस्य' शब्द आया है, वहाँ साधक को आवश्यकतानुमार अपने अथवा साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

(२) यह प्राण-प्रतिष्ठा मन्त्र पूर्वोक्त २४ तीर्थंकरो के यन्त्रों की प्राण-प्रतिष्ठा के लिए तो है ही, आगे वर्णित नागार्जुन यन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठा भी इसी मन्त्र के द्वारा की जाती है।

तीर्थंकर बिम्ब (मूर्ति) के नीचे स्थापना करने का मन्त्र

२४ तीर्थंकरों की मूर्ति को स्थापित करते समय निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए—

"ॐ णमो भगवदो अरिठ्ठणेमिस्स अरिठ्ठेण बंधेण बंधयामि रक्क-सोणं भूयाणं खेयराणं डाइणीण चौराण साइणीणं महोरगाणं जेवकेवि दुट्ठा संभवंति तेसि सव्वेसि मणो मुह गईदिठ्ठि बधण बंधामि धणु धणु महाधणु महाधणु ज. जः जः ठः ठ. ठः वषट् घे घे हूं फट् स्वाहा।"

—:०:—

नागार्जुन यन्त्र-विधान

नागार्जुन यन्त्र के चार स्वरूप आगे दिये गये हैं। इनमें से जिस स्वरूप को भी चाहे, उसे सोना, चांदी अथवा तांबे के पत्र पर खुदवालें। फिर किसी शुभ दिन प्रातःकाल एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उसके ऊपर यन्त्र को रखें तथा पूर्वोक्त विधि से यन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर पार्श्वनाथ प्रभु की मूर्ति स्थापित करके पहले पचामृत से अभिषेक करें, फिर अष्ट द्रव्यों से नीचे लिखे अनुसार पूजा-अर्चना करें।

सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए—

"ॐ जीवितां शुद्ध जीवित अथा जीवित शिवदक्षे।

यो नागार्जुन यंत्रं यजते कि कुर्वते हि तस्य वचनागाः।"

इसके उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें—

मन्त्र—"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः शं वं ह्वं पः हः प क्षी प देवदत्तस्य सर्वोपद्रव शान्ति कुरु कुरु स्वाहा पारिए प्रभवे निर्वपामि स्वाहा।"

टिप्पणी—उक्त मन्त्र में जहां 'देवदत्त' शब्द आया है, वहां साधक को अपने नाम का उच्चारण करना चाहिए।

इसके उपरान्त क्रमशः निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजा द्रव्य समर्पित करने चाहिए।

गन्ध का मन्त्र

"चन्द्रप्रभ शोभागुणयुक्तयै। चंदन के चन्दन रविमिश्रे। यो नागार्जुन यंत्रं यजते कि कुर्वते हि तस्य वचनागाः।"

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः।

गंधं समर्पयामि।

यह कहते हुए 'गन्ध' समर्पित करें।

अक्षत का मन्त्र

"अक्षत पुंजे जिनवर पद पंकजा सुकृत पुंजैरिव चिरंजं यजते। यो नागार्जुन यन्त्र यजते कि कुर्वते हि तस्य वचनागाः।"

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ।
अक्षतान् समर्पयामि ।

यह कहते हुए 'अक्षत (चावल) समर्पित करे ।

पुष्प का मन्त्र

"पुष्पं कलि कुल कलि सद्य. । भव्यं चंपक जातिकैः । यो नागार्जुन यंत्रं यजते किं कुर्वते हि तस्य वचनागाः ।"

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ।
पुष्प समर्पयामि ।

यह कहते हुए 'पुष्प' समर्पित करे ।

चरु का मन्त्र

"हव्यं हर्ष करं रसनाना । नानाविध प्रिय मोदकादीना । यो नागार्जुन यंत्रं यजते किं कुर्वते हि तस्य वचनागाः ।"

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॥
चरु समर्पयामि ।

यह कहते हुए चरु (अनेक प्रकार के मिष्ठान्न) समर्पित करे ।

दीप का मन्त्र

"दीपैर्विप्रकरैर्वरबुद्धैं । दहि कर्मंगि माकवि खंडे । यो नागार्जुन यंत्रं यजते किं कुर्वते हि तस्य वचनागाः ।"

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ।
दीपं प्रदर्शयामि ।

यह कहते हुए 'दीपक' प्रदर्शित करें ।

धूप का मन्त्र

"धोर्प्यैर्धोपजकैंदलैश्च घ्राण प्रीणनकं परमार्ग्यै । यो नागार्जुन यंत्र यजते किं कुर्वते हि तस्य वचनागाः ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ।
धूपं आघ्रापयामि ।

यह कहते हुए 'धूप' दे ।

फल का मन्त्र

"चोचक मोचक चोतक पुगैः। रामलकाद्यैर्गंध फलैश्च। यो नागार्जुन यंत्र यजते कि कुर्वते हि तस्य वचनागा।"

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्रः।
फल समर्पयामि।

यह कहते हुए 'फल' समर्पित करें।

अर्घ्य का मन्त्र

"अम्बुश्चन्दन शालिज पुष्पैर्हव्यैः दीपक धूप फलार्घैः। यो नागार्जुन यत्रं यजते किं कुर्वते हि तस्य वचनागा.।"

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र
अर्घ्यं समर्पयामि।

यह कहते हुए 'अर्घ्य' समर्पित करें।

उक्त विधि से अष्ट द्रव्य समर्पित करके निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें। इस मन्त्र के अन्तिम भाग मे जहा 'देवदत्त' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए

"दुष्टव्याला करामृतये पतिरनिश त न के कि करोति।
योद्धा यत्रमेवं प्रवर गुणयुत पूजयेन परिसिद्धि.॥
शाकिन्याद्य प्रदोक्षा ग्रहकृत सकलानि क्षणान् नक्षपन्ति।
श्री मत्जैनागमेन प्रकट मति प्रोक्तमेव विद च॥
ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र असि आउसाय स्वाहा प क्ष्वीक्ष्वीं
निलस अमुकस्य देवदत्तस्य ग्रहोच्चाटन कुरु कुरु क्षेम स्वाहा।"

इसके पश्चात पार्श्वनाथ स्तोत्र आदि पढ़कर पार्श्वनाथ पूजा की जयमाला पढनी चाहिए। तदुपरान्त विसर्जन करे। धरणेन्द्र पद्मावती की षोडशोपचार विधि से करने से यह यन्त्र सिद्ध होता है।

नवग्रह यन्त्र चिन्तामणि

आगे दो प्रकार के नवग्रह यन्त्र दिये जा रहे हैं। इनमें से किसी यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर सुगन्धित द्रव्यों से लिखकर, उसे भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति के सामने रखकर पूजन तथा आराधना करें। तदुपरान्त यन्त्र को कण्ठ अथवा भुजा में धारण करें तो क्षुद्रग्रह दुष्ट व्यन्तरादिक बोलते है और उनका दोष दूर हो जाता है।

२	७	६	३	५	१	९	४	८
३	५	१	९	४	८	२	७	६
९	४	८	२	७	६	३	५	१
६	२	७	१	३	५	८	९	४
१	३	५	८	९	४	६	२	७
८	९	४	६	२	७	१	३	५
७	६	२	५	१	३	४	८	९
५	१	३	४	८	९	७	६	२
४	८	९	७	६	२	५	१	३

२९

(नवग्रह यन्त्र, संख्या १)

क	क	क	क	क	क	क	क
लि	लि	लि	लि	लि	लि	लि	लि
स	स	स	स	स	स	स	स
ब	ब	ब	ब	ब	ब	ब	ब
व	व	व	व	व	व	व	व
य	य	य	य	य	य	य	य
र	र	र	र	र	र	र	र

३०

(नवग्रह यन्त्र, सख्या २)

— ● —

२ | श्री कल्याण मन्दिर स्तोत्र मन्त्र-यन्त्र साधन

आवश्यक-ज्ञातव्य

'कल्याण मन्दिर स्तोत्र' यथार्थ मे मानव-कल्याण का मन्दिर ही है। जैन धर्म के दोनो सम्प्रदायो—दिगम्बर तथा श्वेताम्बर—मे इस स्तोत्र को समान रूप मे प्रतिष्ठा प्राप्त है। इस स्तोत्र का रचना-काल ग्यारहवी शताब्दी का माना जाता है। दिगम्बर-सम्प्रदाय इसे आचार्य कुमुदचन्द्र की रचना तथा श्वेताम्बर-सम्प्रदाय श्री सिद्धसेन दिवाकर की कृति मानता है।

यह स्तोत्र अत्यन्त चमत्कारी तथा विभिन्न कामनाओ की पूर्ति करने वाला है। केवल स्तोत्र मात्र का नित्य पाठ करते रहने से सभी पाप क्षय होते हैं तथा सुख-शान्ति एव ऐश्वर्यादि की वृद्धि होती है। विभिन्न कामनाओ की पूर्ति हेतु इस स्तोत्र के विभिन्न श्लोको को विभिन्न ऋद्धि तथा मन्त्रो के साथ प्रयोग मे लाया जाता है।

इस स्तोत्र की मन्त्र-साधना के अतिरिक्त यन्त्र-साधन की विधि मे थोडी भिन्नता है। यन्त्र-साधना के ऋद्धि-मन्त्र भी पृथक्-पृथक् हैं। अत. जो महानुभाव केवल मन्त्र-साधन करना चाहे, वे स्तोत्र के श्लोको के नीचे उल्लिखित ऋद्धि-मन्त्र का उच्चारण करते हुए विधिपूर्वक मन्त्र-जप करें। मन्त्र-जप की समाप्ति पर 'विधि' के नीचे उल्लिखित 'उपसहार-वाक्य' का उच्चारण करना चाहिए।

जो महानुभाव इस स्तोत्र से सम्बन्धित यन्त्र-साधना करना चाहे,

उन्हे उचित है कि वे स्तोत्र के इच्छित श्लोक को किसी मोटे तथा स्वच्छ कागज पर बडे-बडे अक्षरो मे लिखकर सामने रखलें। फिर स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदे हुए यन्त्र को अपने समीप रखकर, 'साधन-विधि' मे उल्लिखित नियमानुसार यन्त्र-साधन करे।

कल्याण-मन्दिर स्तोत्र की मन्त्र अथवा यन्त्र साधना करते समय भगवान् श्रीपार्श्वनाथ स्वामी की मूर्ति को स्तोत्र-श्लोक के साथ अपने सम्मुख चौकी पर स्थापित कर लेने मे साधक की सब प्रकार से रक्षा होती है। यद्यपि मन्त्र-यन्त्र साधन के समय मूर्ति को सम्मुख रखना आवश्यक नही माना गया है, तथापि सर्वप्रथम मूर्ति की स्थापना कर, उसकी पूजा-अर्चा करने के बाद ही यदि मन्त्र अथवा यन्त्र साधन किया जाय तो वह आत्मरक्षक एव विशिष्ट फलदायक सिद्ध होगा, इसमे सन्देह नही।

अगले पृष्ठो मे कल्याण मन्दिर स्तोत्र के मन्त्र एव यन्त्र-साधन को सचित्र विधियाँ क्रमश दी गयी है। मन्त्र तथा यन्त्र-साधन के समय केवल ऋद्धि तथा मन्त्र को जपने की ही आवश्यकता होती है। प्रारम्भ मे यदि सम्पूर्ण स्तोत्र का एक बार पाठ कर लिया जाय तो उत्तम रहेगा।

स्मरणीय है कि इस स्तोत्र के अनेक मन्त्र तथा यन्त्रो की साधना अलग-अलग कार्यों की सिद्धि के लिए की जाती है।

विवाद-विजय एवं अभीप्सित कार्य सिद्धिदायक

मन्त्र-विधान

स्तोत्र-श्लोक—कल्याण मन्दिर मुदारमवद्यभेदि
भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम्।
संसार-सागर निमज्ज दशेष जन्तु
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥
यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्नविभुर्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठ स्मयधूमकेतो
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो इट्ठकज्जसिद्धिपराणं जिणाणं ॐ ह्रीं अर्हंणमो वम्मंकराणं ओहिजिणाणं।

मन्त्र - ॐ नमो भगवओ रिसहस्स तस्स पडिनिमित्तेण चरणपण्णत्ति इन्देण भणामइ यमेण उप्पाडिया जोहा कंठोठ्ठमुहतालुया खीलिया जो मं मसइ जो मं हसइ दुठ्ठदिठ्ठोए वज्जसिखलाए अमुकस्य मणं हियय कोहं जोहा खीलिया सेलखियाए ल ल ल ल ठः ठः ठः स्वाहा।

टिप्पणी—उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

विधि—उक्त मन्त्र का श्रद्धापूर्वक १०८ बार जप करने के बाद प्रतिवादी से वाद-विवाद करने में विजय प्राप्त होती है अर्थात् वाद-विवाद में प्रतिवादी पराजित होता है।

ॐ ह्रीं कमठस्य य धूमकेतूपमाय श्री जिनाय नमः।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या १-२)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो पासं पासं पासं फणं।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दव्वंकराए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते अभीप्सितकार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

गुण—इस ऋद्धि मन्त्र के प्रभाव से मनोभिलापित कार्य सम्पन्न होते है।

साधन-विधि—पर्वत के ऊपर पूर्व की ओर मुँह करके, लाल रग के आसन पर लाल रग के रेशमी वस्त्र पहिन कर बैठे। हाथ म लाल रेशम की माला होनी चाहिए। ६० दिनो तक नित्य १००८ बार श्रद्धापूर्वक ऋद्धि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम अग्नि मे कपूर, कस्तूरी, चन्दन तथा शिलारस मिश्रित धूप डाले। इस विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तत्पश्चात् उसे आवश्यकता के समय प्रयोग मे लाना चाहिए।

मन्त्र-जप करते समय स्वर्ण, चाँदी अथवा ताम्र पत्र पर खुदे हुए यन्त्र को अपने समीप ही रखना चाहिए।

—. ० :—

वशीकरण कारक, जलयात्रा-भय निवारक

मन्त्र-विधान

स्तोत्र-श्लोक—सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप
मस्मादृशाः कथमधीश भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥३॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो समुद्दभयसामणबुद्धीणं परमोहि जिणाणं।

मन्त्र—ॐ ह्रक्लीं बगलामुखी देवी नित्य विलन्ने मदद्रवे मदनातुरे वषट् स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र को पुष्य नक्षत्र के योग से जपना प्रारम्भ करके २१ दिन तक १२००० की सख्या मे जपने से तीनो लोक वशीभूत होते हैं।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्याधीशाय नमः।

यन्त्र-विधान
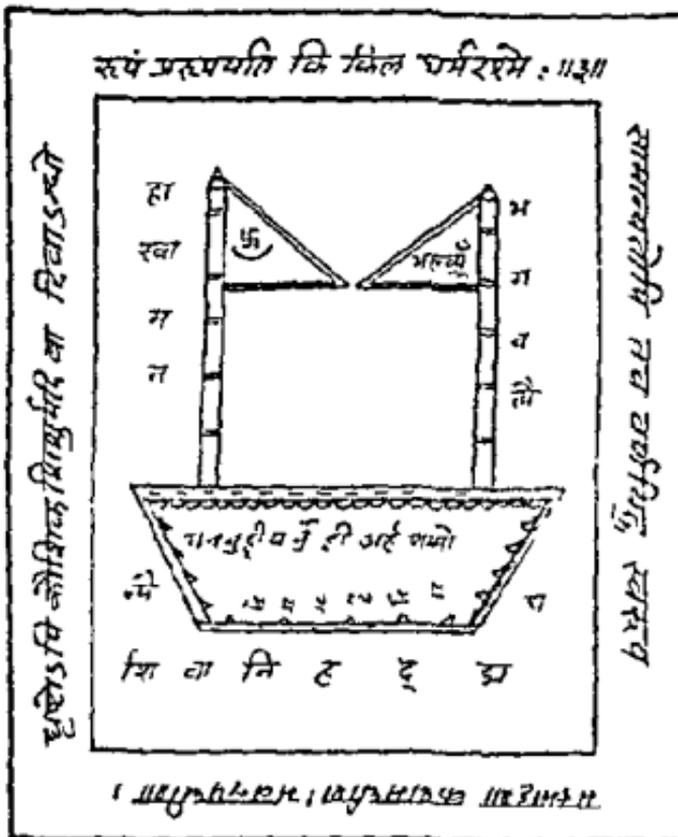
(स्तोत्र श्लोक संख्या ३)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हणमो समुद्द भय समन बुद्धीणं ।

मन्त्र—ॐ भगवत्यै पद्मद्रहनिवासिन्यै नमः स्वाहा ।

गुण—इस ऋद्धि-मन्त्र के प्रभाव से पानी का भय नही रहता तथा नदी-समुद्र आदि में डगमगाता हुआ जलयान डूबने नही पाता ।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में पश्चिम की ओर मुंह करके श्वेत वस्त्र धारण कर श्वेत आसन पर बैठ, लाल मूंगा की माला लेकर २७ दिनों तक नित्य १००० बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम अग्नि में गुग्गुल, चन्दन, छाड-छबीला एवं घृत-मिश्रित धूप का क्षेपण करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खे ।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार उसका प्रयोग करना चाहिए ।

— o —

गर्भपात एवं असमय निधन निवारक

स्तोत्र श्लोक—मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो
नूनं गुणान्गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा-
न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥४॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो अकालमिच्चुवारयाणं सव्वोहि जिणाण।

मन्त्र—ॐ नमो भगवति ॐ ह्री श्रीं क्लीं अर्हं नमः स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र को ९ वर्षो तक, प्रतिवर्ष लगातार ४० रविवार के दिन, प्रत्येक रविवार को १००० की संख्या में जपने से गर्भपात एवं अकाल मरण नहीं होता।

ॐ ह्रीं सर्वपीड़ानिवारकाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या ४)
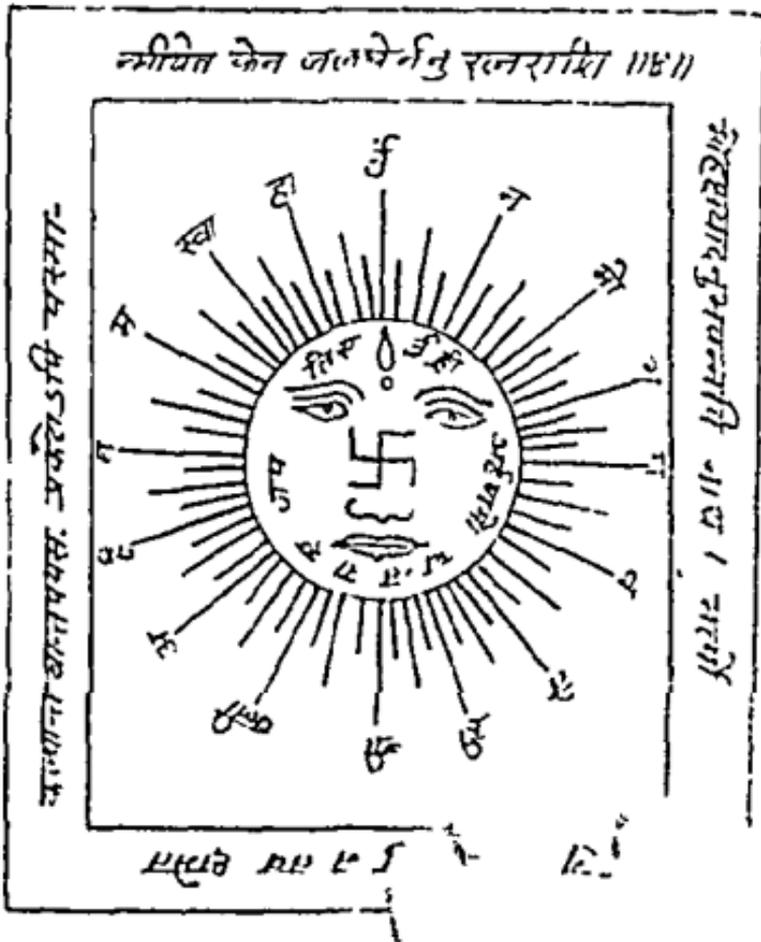
ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो धम्मराए जयतिए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं नमः स्वाहा।

गुण—इस मन्त्र के प्रभाव से असमय में गर्भपात तथा अकालमृत्यु का भय नहीं रहता तथा सन्तान चिरजीवी होती है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में पूर्वाभिमुख हो, पीले रंग के आसन पर, पीले रंग के वस्त्र पहिन कर बैठें। कमलगट्टा की माला लेकर, स्थिर चित्त हो, रविवार के दिन प्रातःकाल १००० बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम अग्नि में गुग्गुल, चन्दन, कपूर तथा घृत मिश्रित धूप का क्षेपण करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से ९ वर्षों तक, प्रति रविवार का व्रत रक्खें तथा प्रतिवर्ष लगातार ४० रविवार के दिनों में उक्त ऋद्धि-मन्त्र का जप करें। एकाशन, भूमिशयन तथा ब्रह्मचर्य का पालन करें।

इस प्रकार जब मन्त्र-सिद्ध हो जाय तब आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—:०:—

प्रच्छन्न-धन-प्रदर्शक

स्तोत्र श्लोक—अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि
कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य
बालोऽपि किं न निजबाहु युगं वितत्य
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः ॥५॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो गोधणबुड्डिकराणं अणंतोहि जिणाणं।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः।

विधि—इस मन्त्र को नित्य श्रद्धापूर्वक १०८ बार जपते रहने से खोये हुए पशु तथा गुप्त धन का लाभ होता है।

ॐ ह्रीं सुखविधायकाय श्री पार्श्वनाथायनमः।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या ५)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं णमो धणबुड्ढि कराए।

मन्त्र—ॐ पद्मिने नमः।

गुण—इस मन्त्र के प्रभाव से चोरी गया हुआ धन, जमीन में गढा धन एवं खोया हुआ धन प्राप्त होता है।

साधन-विधि—श्वेत वस्त्र धारण कर, किसी एकान्त स्थान में, श्वेत-आसन पर, पद्मासन की स्थिति में पूर्वाभिमुख बैठें तथा स्फटिक मणि की माला लेकर, ४९ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि में गुग्गुल, कुंदरू, कपूर, चन्दन तथा इलायची मिश्रित धूप का क्षेपण करें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

— ० —

वशीकरणकारक एवं सन्तान-सम्पत्ति प्रसाधक

स्तोत्र श्लोक—ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेव मसमीक्षित कारितेयं
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥६॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो पुत्तहत्थिकराणं कोठ्ठवुद्धीणं।

मन्त्र—ॐनमो भगवति अम्बिके अम्बालिके यक्षीदेवि यूं यौं ब्लें हस्ब्लीं ब्लं ह्सौं रः रः रः रः रां रांहृष्टिप्रत्यक्षम् मम अमुकस्य वश्य कुरु कुरु स्वाहा।

टिप्पणी—उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

विधि—इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए २१ बार दतुअन (दाँतोन) को अभिमन्त्रित कर, उसी से दाँतों को स्वच्छ करे, तत्पश्चात् २१ बार इसी मन्त्र का पुनः श्रद्धापूर्वक जप करने से अभिलषित-व्यक्ति वशीभूत होता है।

ॐ ह्रीं अव्यक्तगुणाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या ६)
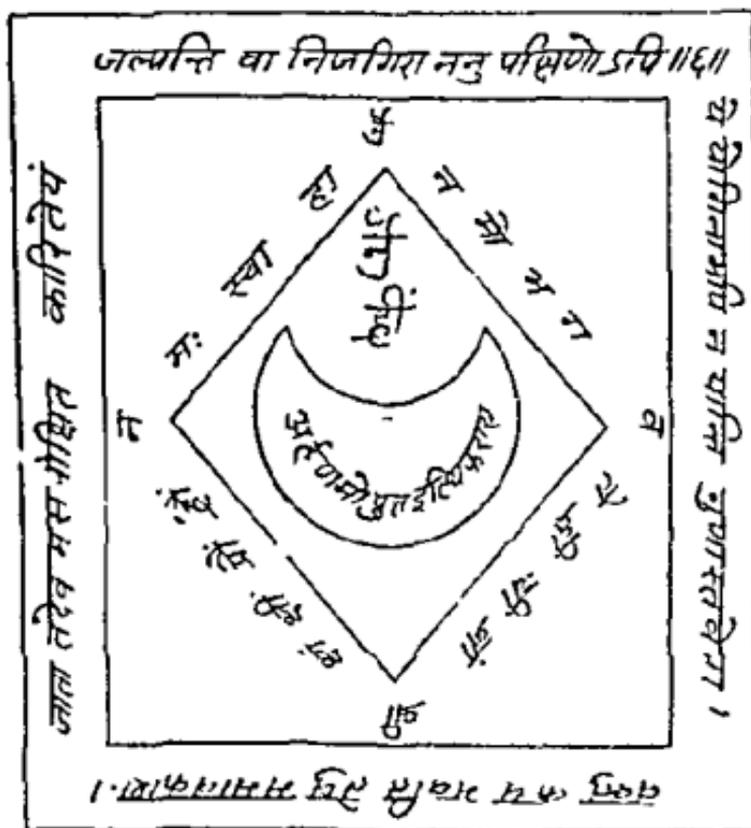
ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुत्तइत्थि कराए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते ह्रीं श्रीं श्रां श्रीं क्षां क्षीं प्रीं ह्रीं नमः।

गुण—इसके प्रभाव से धन तथा सन्तान की प्राप्ति होती है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में हरे रंग के आसन पर, दक्षिण की ओर मुँह करके बैठे। पद्मबीज (कमलगट्टा) का माला हाथ में लेकर ४० दिनों तक, नित्य १००० की सख्या में श्रद्धापूर्वक ऋद्धि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम अग्नि में गिरी, गुग्गुल, लौंग तथा चन्दन मिश्रित धूप का क्षेपण करे। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से मन्त्र जब सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार उसे प्रयोग में लाये।

—.०:—

चोर-सर्पादि भय निवारक एवं आकर्षण कारक

स्तोत्र श्लोक— आस्तामचिन्त्य महिमा जिन संस्तवस्ते
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति
तीव्रातपोपहतपान्थजनान् निदाघे
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥७॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो अभिठ्ठसाधयाणं बीजबुद्धीणं।

मन्त्र—ॐ नमो भगवओ अरिठ्ठणेमिस्स बंधेण बंधामिस्क्खसाणं भूयाण खेयराणं चोराणं दाढाणं साईणीण महोरगाणं अण्णे जेवि दुठ्ठा संभवन्ति तेसिं सव्वेसिं मणं मुहं गहं दिठ्ठी बधामि घणु घणु महाघणु जः जः जः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।

विधि—सघन वन-मार्ग में चलते समय कोई भय उत्पन्न होने पर, इस मन्त्र द्वारा कुछ ककड़ो को अभिमन्त्रित कर, चारों दिशाओं में फेंक देने से चोर, सिंह, सर्प आदि का भय दूर हो जाता है।

ॐ ह्रीं भवाटवीनिवारकाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र विधान

(स्तो.: श्लोक सङ्ख्या ७)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो माहणे शाणाए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते शुभाशुभ कथयित्रे स्वाहा।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में रात्रि के समय गेरुआ रंग के आसन पर, नैऋत्य कोण की ओर मुँह करके बैठें तथा लाल मूंगे की माला पर, एकाग्रचित्त से २७ दिनों तक, नित्य १००० बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि में गुग्गुल, लोबान, चन्दन एवं प्रियंगुलता मिश्रित धूप का क्षेपण करें। यन्त्र को अपने समीप रखे।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार उसे प्रयोग में लाये।

—:०:—

सर्प-दंश एवं कुपितोपदंश विनाशक

स्तोत्र श्लोक—हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिली भवन्ति
जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः।
सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग
मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥८॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गहवहारीणं पादाणुसारीण।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथतीर्थङ्कराय हंसः महाहंसः पद्महंसः शिवहंसः कोपहंसः उरगेशहंसः पक्षि महाविषभक्षि हुं फट् स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र को नित्य १०८ बार जपकर सिद्ध करलें। बाद में सर्प-दंशित आदमी पर इस मन्त्र का झाड़ा देने से उसका विष उतर जाता है।

ॐ ह्रीं कर्माहिबंधमोचनाय श्रीजिनाय नमः।
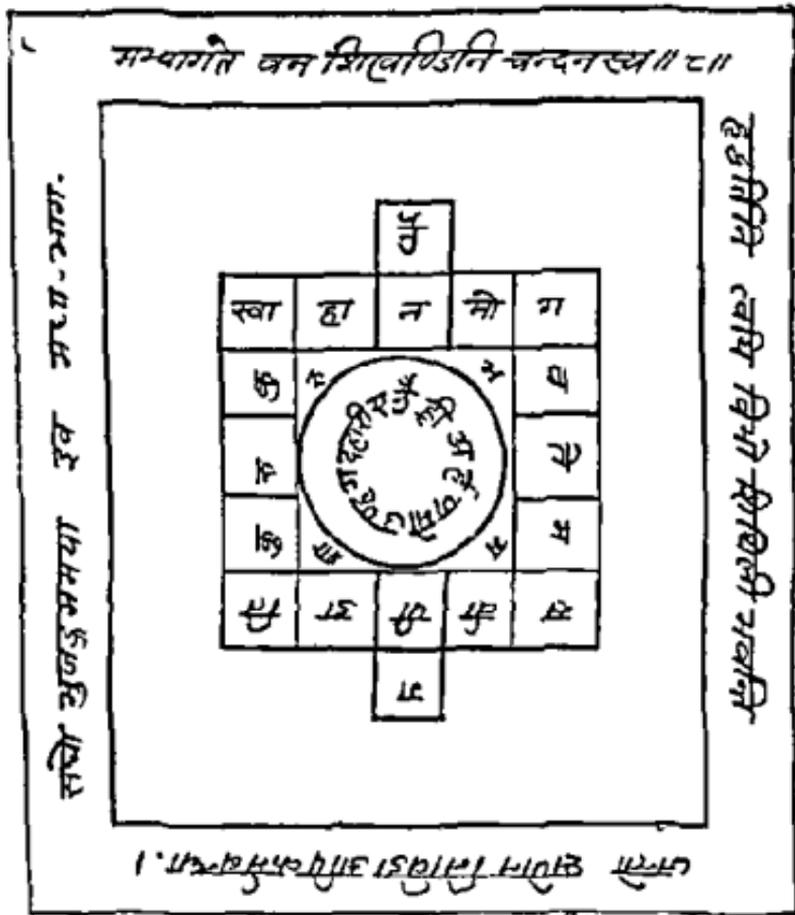
(स्तोत्र श्लोक संख्या ८)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो उण्हं गवहाराए ।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते मम सर्वाङ्गपीडा शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ।

गुण—इसके प्रभाव से १८ प्रकार के उपदश, पित्त ज्वर तथा सब प्रकार की उष्णता शान्त होती है ।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे कुश के आसन पर ईशान कोण की ओर मुँह करके बैठें तथा चाँदी की माला लेकर स्थिर चित्त हो, १४ दिनो तक नित्य १००० की संख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा

निर्धूम अग्नि मे गुग्गुल, कुन्दुरू एवं श्वेतचन्दन मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लाये।

—॰—

उपद्रव-नाशक एवं सर्प-वृश्चिक विष-नाशक

स्तोत्र श्लोक—मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र
रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥६॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हणमो विसहरविसविणासयाणं संभिण्णसोवाराणं।

मन्त्र—ॐ इंवसेणा महाविज्जा देवलोगाओ आगया दिठ्ठिबंधणं करिस्सामि मडाणं भूआण अहिणं दाढीणं सिंगीणं चोराणं चारियाणं जोहाणं वग्धाणं सिहाणं भूयाणं गंधव्वाणं महोरगाणं अण्णेवि दुट्ठसत्ताणं दिट्ठिबंधणं मुहबंधणं करेमि ॐ इंदर्नारंदे स्वाहा।

विधि—दीपावली के दिन निराहार रहकर इस मन्त्र का १०८ बार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। बाद मे, मार्ग मे चलते समय आवश्यकता पडने पर इस मन्त्र का २१ बार उच्चारण करने से सब प्रकार के भय तथा उपद्रव दूर हो जाते हैं।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवहरणाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान
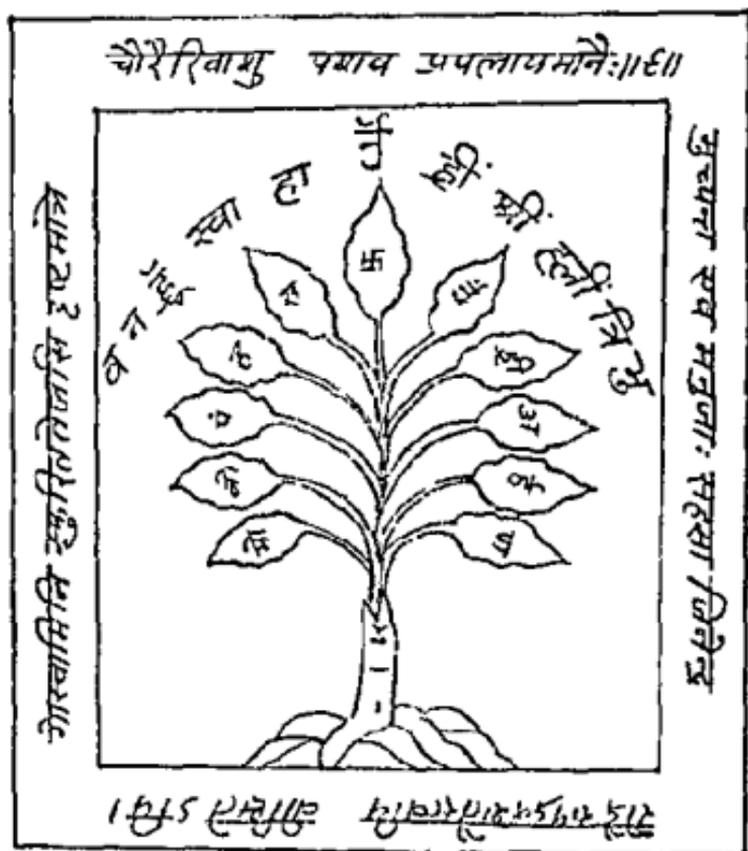
(स्तोत्र श्लोक सख्या ६)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो को प हं सः।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवन हूं स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से सर्प गोह, वृश्चिक, छिपकली आदि विष-जीवो के विष का प्रभाव नष्ट हो जाता है। इस ऋद्धि-मन्त्र को पढते हुए १०८ बार झाडा देना चाहिए।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे काली ऊन के आसन पर पद्मासन लगा, आग्नेय कोण की ओर मुंह करके बैठ तथा रुद्राक्ष की माला लें, १४ दिनो तक नित्य १००० की सख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करे तथा

निर्धूम अग्नि मे गुग्गुल, अरहर एवं कुन्दरू मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप ही रखें।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

—.०—

जल-भयनाशक एवं तस्कर-भयविनाशक

स्तोत्र श्लोक—त्वं तारको जिन कथं भविनां त एव
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वादृतिस्तरति यज्जलमेव नून
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो तवखरभयपणासयाणं उजुमदीणं।

मन्त्र—ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी चक्रधारिणी जलजल-निहिपार उतारणि जल थभय दुष्टान् दैत्यान् दारय दारय असिवोपसम कुरु कुरु ॐ ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—गुरुवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो, तब इस मन्त्र को १०८ बार शुद्ध हृदय से जप कर सिद्ध करें। तदुपरान्त आवश्यकता के समय २१ बार इस मन्त्र का जप करने से, हर प्रकार का पानी का भय नष्ट होता है।

ॐ ह्रीं भवोदधितारकाय श्रीजिनाय नमः।

मन्त्र-विधान
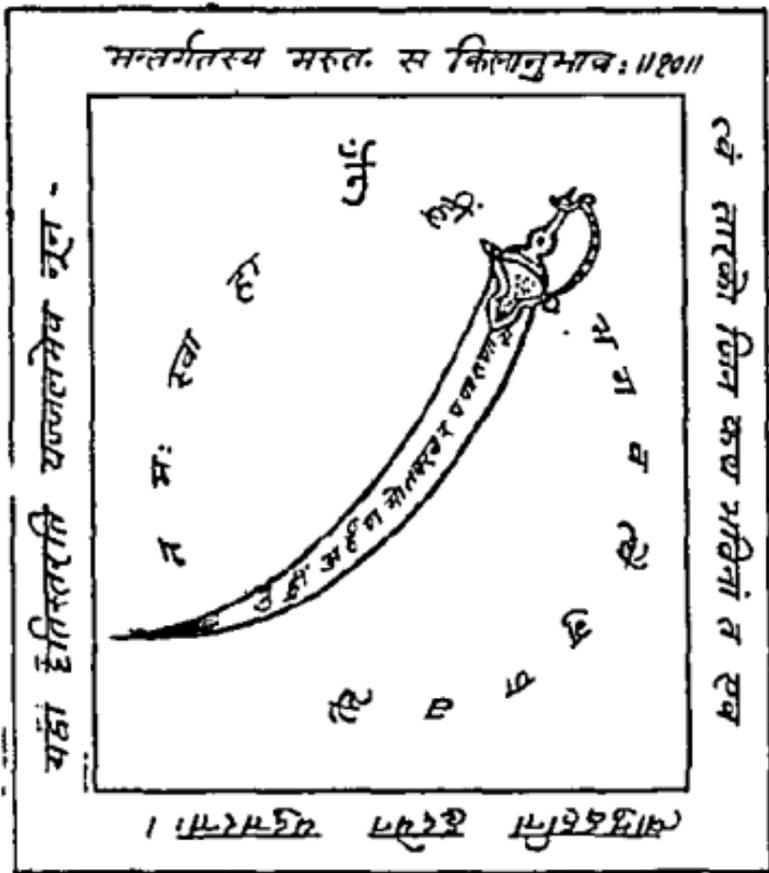
(स्तोत्र श्लोक संख्या १०)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो तवख रयणासणाए।

मन्त्र—ॐ ह्रीं भगवत्यै गुणवत्यै नमः स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से चोर-उपद्रवादि का भय नष्ट होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में पीले रंग के आसन पर वायव्य कोण की ओर मुंह करके बैठें तथा सोने की माला लेकर १८ दिनों तक नित्य १००० की संख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा गुग्गुल एवं चन्दन मिश्रित धूप का निर्धूम अग्नि में निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—:०:—

अग्निभय एवं जल भयविनाशक

स्तोत्र श्लोक—यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन
पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ॥११॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो खारियालणवुद्धीणं विउलमदीणं ।

मन्त्र—ॐ नमो भगवति अग्निस्तम्भिनि पञ्चविद्योत्तरणि श्रेयस्करि ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सर्वकामार्थ साधनि ॐ अनलपिङ्गलोर्ध्वकेशिनि महाधिद्याधिपतये स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र को केशर अथवा हरताल से भोजपत्र पर लिखकर, उसे बलती हुई अग्नि में डाल देने से अग्नि का उपद्रव शान्त होता है ।

ॐ ह्रीं हुतभुग्भयनिवारकाय श्री जिनायनमः । श्री फलवर्द्धिपार्श्वनाथ स्वामिने नमः ।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक सख्या ११)
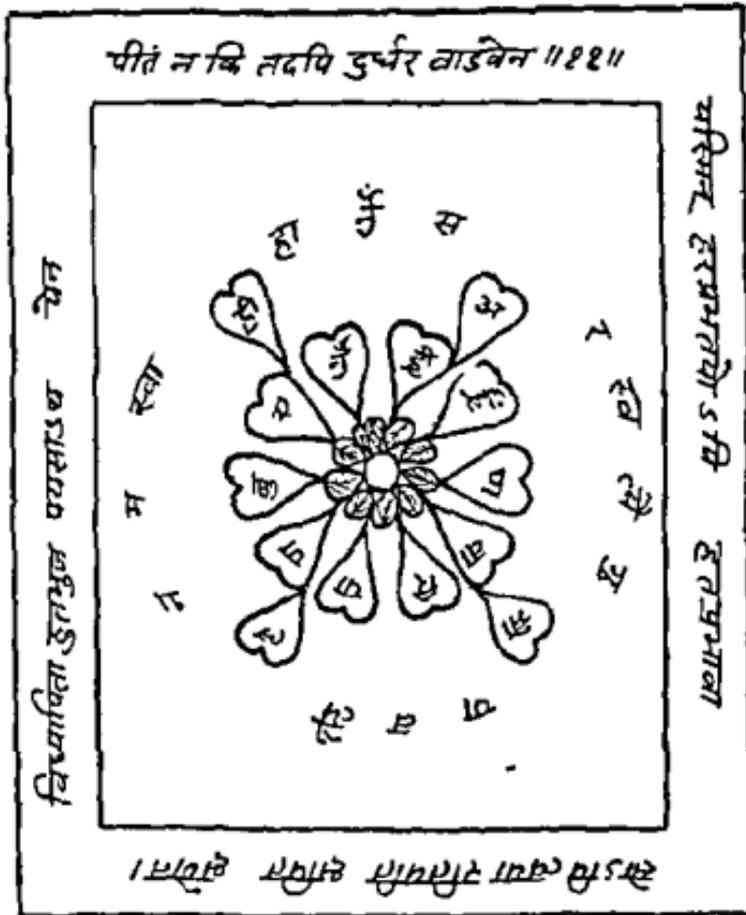
ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो वारिपालण बुद्धीए ।

मन्त्र—ॐ सरस्वत्यं गुणवत्यं नमः स्वाहा ।

गुण—इस यन्त्र को पास रखने वाला पानी मे नही डूबता। यह अथाह जल से रक्षा करने वाला तथा कुदेवादि के भय को नष्ट करने वाला है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे सफेद आसन पर ईशानकोण को ओर मुंह करके बैठें तथा श्वेत चन्दन की माला लेकर १६ दिनो तक नित्य १००० की सख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धम-अग्नि मे चन्दन, नागरमोथा, कपूरकचरी तथा घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करे। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

—: ० :—

मनोमिलाषा पूरक एवं अग्नि-भयनाशक

स्तोत्र श्लोक—स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन
चिन्त्योनहन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥१२॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो अणलभयवज्जयाणं वस पुरवीण ।

मन्त्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रौं ह्रः असिआउसा वांछितं मे कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक १२५००० की सख्या मे जप करने से समस्त मनोवांछित कार्यों की सिद्धि होती है।

ॐ ह्रीं सर्वमनोवांछित कार्य साधकाय श्री जिनाय नमः ।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या १२)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो अग्गल भय वज्जणाए ।

मन्त्र—ॐ नमो भगवत्यै चण्डिकायै नमः स्वाहा ।

गुण—इसके प्रभाव से अग्नि-भय दूर होता है। एक चुल्लू पानी को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, जलती हुई अग्नि पर डाल देने से वह शान्त हो जाती है। इस मन्त्र का आराधक अग्नि के ऊपर चल सकता है तथा उससे जलता नही है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में सफेद आसन पर नैऋत्य-कोण की ओर मुंह करके बैठें तथा स्फटिकमणि की माला लेकर ७ दिनों तक नित्य १०८ बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम अग्नि में गिरी, कपूर, गुग्गुल एवं घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—: o :—

क्रूर व्यन्तराविनाशक एवं जल-सुधारक

स्तोत्र श्लोक—क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्मचौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके
नीलद्रुमाणि विपनानि न किं हिमानी ॥१३॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो रिवख भयवज्जयाणं चोद्दस पुव्वीणं।

मन्त्र—ॐ ह्रीं असि आउसा सर्वदुष्टान् स्तंभय स्तंभय अंधय अंधय ऽमुकय ऽमुकय मोहय मोहय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः स्वाहा।

टिप्पणी—उक्त मन्त्र मे जहाँ 'ऽमुकय' 'ऽमुकय' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

विधि—पूर्व दिशा की ओर मुंह करके, किसी एकान्त स्थान में बैठकर ८ अथवा २१ दिन तक नित्य मुट्ठी बाँधकर इस मन्त्र का ११०० की संख्या मे जप करने से सब प्रकार के दुष्ट-क्रूर व्यन्तरों के कष्टो से मुक्ति प्राप्त होती है।

ॐ ह्रीं कर्मचौर विध्वसकाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान
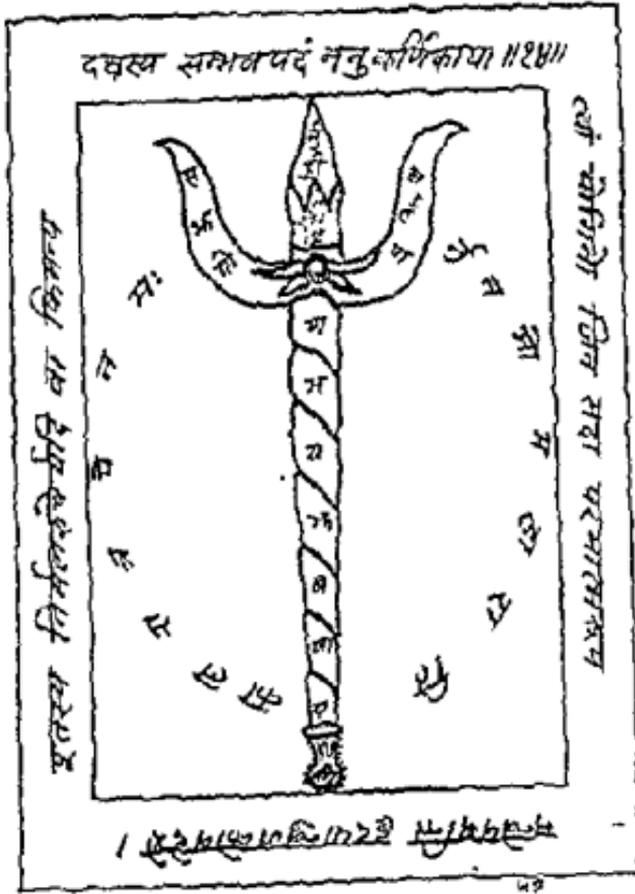
(स्तोत्र श्लोक संख्या १३)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो इक्खवज्जणाए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवत्यै चामुण्डायै नमः स्वाहा।

गुण—नित्य ७ दिनों तक झारी भर पानी को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर उसे खारे पानी वाले कुएं अथवा बावड़ी (जलाशय) में डालने से उसका पानी अमृत-तुल्य हो जाता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में लाल रंग के आसन पर, पश्चिम दिशा की ओर मुंह करके बैठें तथा जामफल की माला लेकर २७

दिनों तक, नित्य १००० की सख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम अग्नि मे गुग्गुल, चन्दन तथा घृत मिश्रित धूप का निक्षप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि मे जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

—:०:—

प्रश्नोत्तरदायक एवं शत्रु-निवारक

स्तोत्र श्लोक—त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज कोप देशे
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य
दक्षस्य सम्भव पद ननुकर्णिकायाः ॥१४॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो भंसण भयञ्जवणाणं अट्ठंगमहाणिमित्त-कुसलाण।

मन्त्र—ॐ नमो मेरु महामेरु ॐ नमो गौरी महागौरी ॐ नमो काली महाकाली ॐ नमो इंदे महाइदे ॐ नमो जये महाजये ॐ नमो विजये महाविजये ॐ नमो पण्णसमिणि महापण्णसमिणि अवतर अवतर देवि अवतर अवतर स्वाहा।

विधि—श्रद्धापूर्वक ८००० की सख्या मे जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर एक दर्पण को इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, स्वच्छ श्वेत वस्त्र पर रखें तथा उसके सामने किसी कुमारी कन्या को श्वेत वस्त्र पहिना कर बैठायें और उसे दर्पण मे देखने को कहे। तत्पश्चात् उस कन्या से जो भी प्रश्न पूछा जायगा, उसका वह उत्तर देगी।

ॐ ह्रीं हृदयाम्बुजान्वेषिताय श्री जिनाय नमः।

यन्त्र-विधान
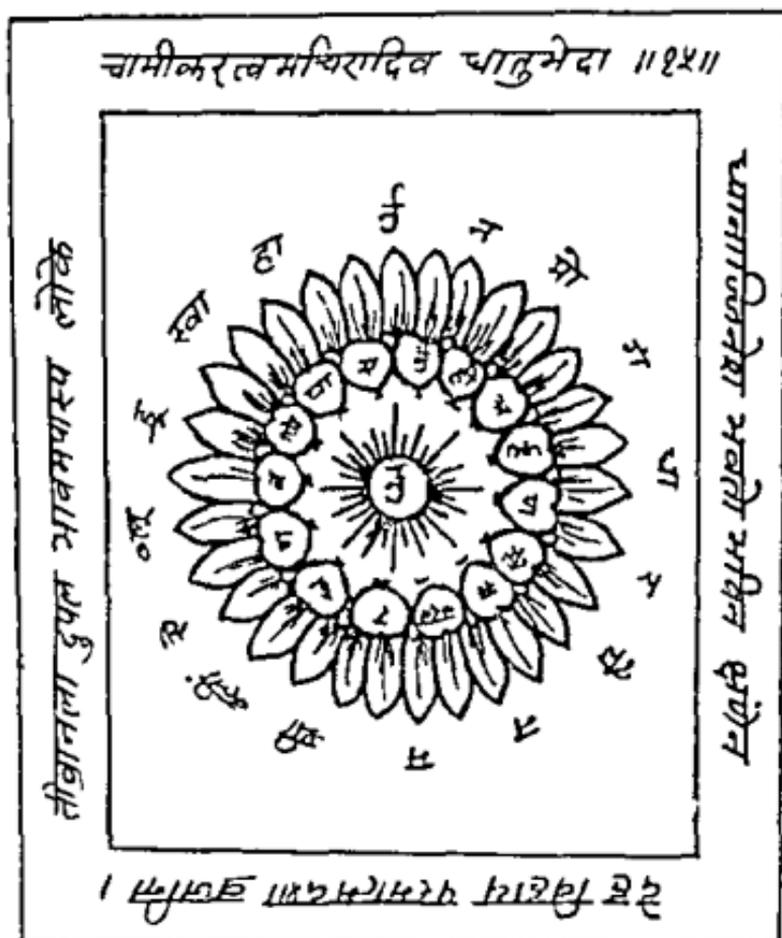
(स्तोत्र श्लोक सख्या १४)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो ध्र सण भय झव णाए ।

मन्त्र—ॐ नमो महाराति कालरात्रि त्रये नमः स्वाहा ।

गुण—इसके प्रभाव से शत्रु का नाश हो जाता है अथवा वह शत्रुता त्याग कर निर्मल विचारो वाला बन जाता है ।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान मे काले रग के आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठे तथा रीठे की माला लेकर, मूल नक्षत्र से हस्तनक्षत्र पर्यन्त, २५ दिनो तक, नित्य १००० की सख्या मे ऋद्धि-

मन्त्र का जप करते हुए निर्धूम-अग्नि मे गुग्गुल, लाल मिर्च, गिरी तथा नमक मिश्रित धप का निक्षेप करे। यन्त्र को अपने समीप रखे।

उक्त विधि से जब मन्त्र मिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लाये।

— ० —

ज्वर-नाशक एवं चौर-भय हारी

स्तोत्र श्लोक—ध्यानाज्जिनेश भवतो भविन. क्षणेन
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपल भावमपास्य लोके
चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेवाः ॥१५॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खरधणप्पयाणं विउव्वणपत्ताण।

मन्त्र—ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं ॐ नमो उवज्झायाण ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं ॐ ह्रीं नमो सिद्धाण ॐ नमो अरिहताणं एकाह्निक, द्वयह्निक, चातुर्थिक, महाज्वर, क्रोधज्वर, शोकज्वर, कामज्वर, कलि तरय, महावीरान ट्प बध हां ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि—इस अनादिनिधन महामन्त्र का मन मे स्मरण करते हुए एक नवीन श्वेत वस्त्र के छोर मे गाँठ बाँधे तथा उसे गुग्गुल एव घृत की धूनी दें। तत्पश्चात् उस वस्त्र को ज्वर-पीडित रोगी को उढा दें। वस्त्र की अभिमन्त्रित गाँठ रोगी के सिर के नीचे दवा देनी चाहिए। इस क्रिया से सब प्रकार के ज्वर दूर होते हैं तथा रोगी सुखपूर्वक सोता है।

ॐ ह्रीं जन्ममरणरोगहराय श्रीजिनाय नम.।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक सख्या १५)
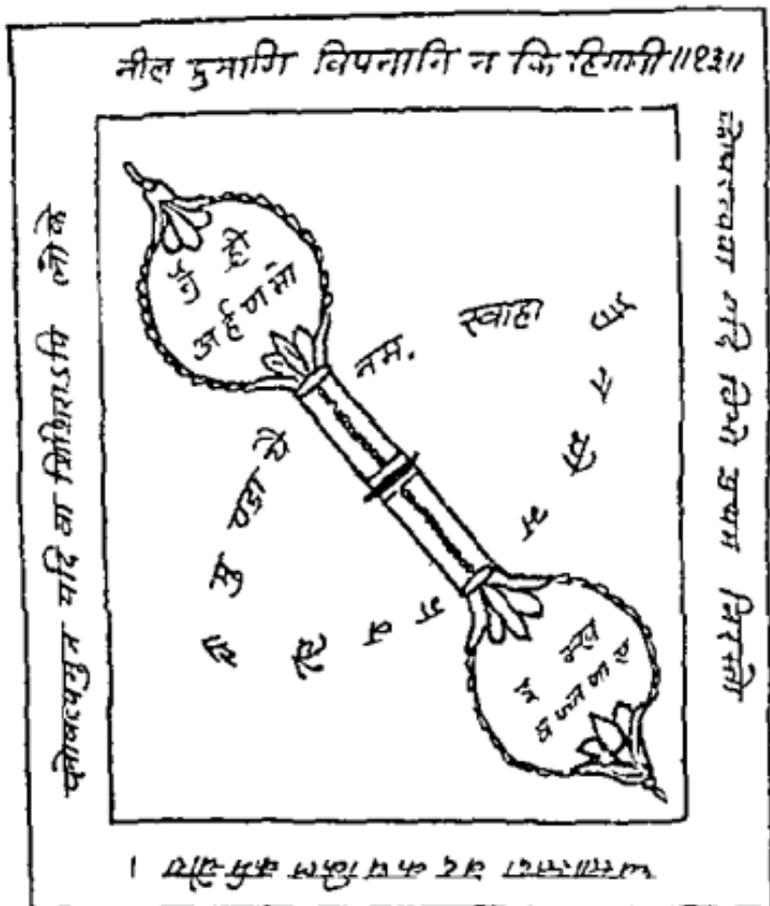
ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो तवखरघण-वण्णियाए।

मन्त्र—ॐ नमो गधारयै नम श्रीं क्लीं ऐं ब्लूं हूं स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से चोरी गयी वस्तु पुन मिल जाती है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे हरे रग के आसन पर, उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठ तथा लाल सूत की माला लेकर, १४ दिनो तक नित्य १००० की सख्या मे ऋद्धि मन्त्र का जप कर तथा निर्धूम अग्नि

में कुन्दरू एवं गुग्गुल मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खे।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाये।

—०—

कर्म-दोष एवं भय-नाशक

स्तोत्र श्लोक—अन्तः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत् स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनोहि
यद् विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥१६॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहणवणभयपणासयाणं विज्जाहराणं।

मन्त्र—ॐ नमो अरिहंताणं पादौ रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं कटिं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं नाभिं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं हृदयं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं नमो लोए सव्व साहूणं ब्रह्माण्डं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं एसो पंच णमुक्कारो शिखां रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं सव्वपावप्पणासणो आसनं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं आत्मरक्षा पररक्षा हिलि हिलि मातंगिनि स्वाहा।

विधि—इस महामन्त्र का प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक यथेच्छ संख्या में जप करने से कर्माणादि कर्मों का दोष दूर होता है।

ॐ ह्रीं विग्रहनिवारकाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान
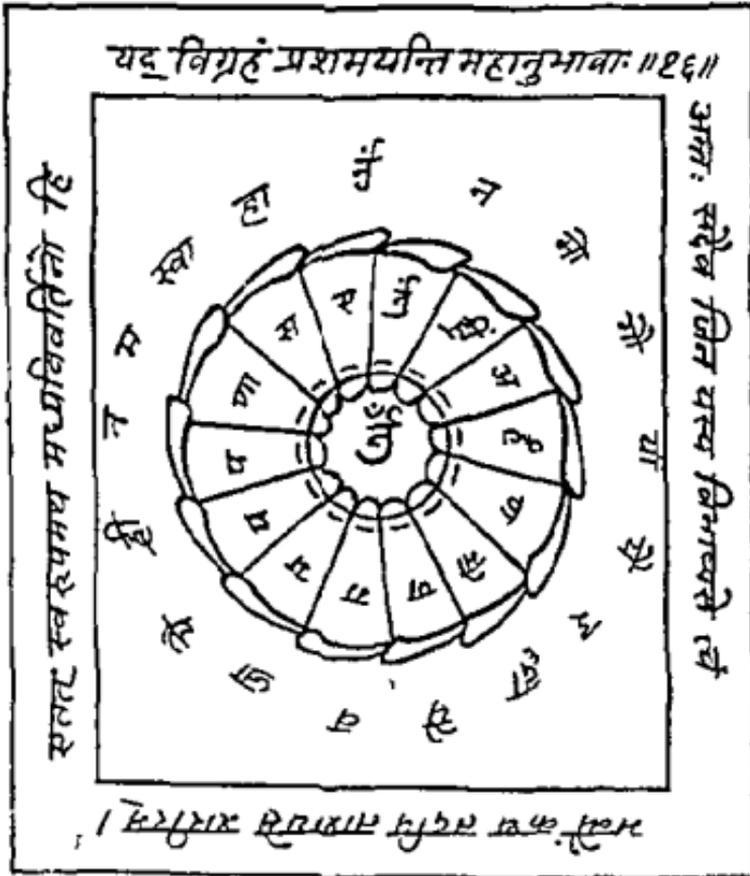
(स्तोत्र श्लोक सख्या १६)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो णगभयपणासए।

मन्त्र—ॐ नमो गौर्यायै इन्द्रायै वज्रायै ह्रीं नमः स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से पर्वत तथा निर्जन वन में भय नष्ट होता है तथा कोई उपसर्ग नही होता।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान मे, सफेद आसन पर, वायव्य दिशा की ओर मुंह करके बैठें तथा स्फटिक मणि की माला लेकर, ७ दिनो तक नित्य १००० बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम अग्नि मे गुग्गुल, खोवा, चन्दन तथा घृत मिश्रित धूप का निक्षप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

—:०:—

विष-दोष एवं विरोधनाशक

स्तोत्र श्लोक—आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्धया
ध्यातोजिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥१७॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुड्ढिणासयाणं चारणाणं।

मन्त्र—ॐ यः यः सः सः हः हः वः वः उरुल्लिय रुहु रुहान्त ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय दह दह दुष्टनागविषं क्षिप ॐ स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र द्वारा ७ वार अभिमन्त्रित जल को जिस स्थान पर सर्प ने काटा हो; वहां छिड़क देने तथा वही अभिमन्त्रित जल सर्प-दंश के रोगी को पिला देने से सर्प-विष दूर होता है। यह प्रक्रिया अन्य विषैले जन्तुओं के विष को भी दूर करती है।

ॐ ह्रीं आत्मस्वरूपध्येयाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान

पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं

किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥१७॥

ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः।

४६

(स्तोत्र श्लोक संख्या १७)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठ बुद्धि णासए।

मन्त्र—ॐ नमो धूलि देव्यं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं द्रां द्रीं नमः स्वाहा।

गुण—इस यन्त्र को पास रखने से विजय प्राप्त होती है तथा बैर-विरोध शान्त होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में सफेद रंग के आसन पर, नैऋत्य कोण की ओर मुंह करके बैठे एवं स्फटिकमणि की माला लेकर १४ दिनों तक नित्य १००० बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि में चन्दन, कपूर, इलायची तथा घृतमिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—:०:—

शुभाशुभ ज्ञानप्रदायक एवं सर्प-विष नाशक

स्तोत्र-श्लोक—त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि
नूनं विभो हरिहरादिधिया प्रपन्नाः।
किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि शङ्खो
नो गृह्यते विविधवर्ण विपर्ययेण ॥१८॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो फणि सत्ति सोसयाणं पण्हसमणाणं।

मन्त्र—ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो सुअदेवाए, भगवईए सव्वसुअमए, बारसंगपवयण जणणीए सरसइए, सव्ववाइणि, सुवण्णवणे, ॐ अवतर अवतर देवि मम सरीरं, पविस पुच्छं, तस्स पविस, सव्वजणमयहरीए, अरिहंतसिरीए स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र द्वारा चाक की मिट्टी को अभिमन्त्रित कर, उससे तिलक लगायें। तत्पश्चात रात्रि के समय सब लोगों के सो जाने पर हाथ में जल से भरी झारी लेकर, किसी एकान्त स्थान में खड़े होकर लोगों की बात सुनें। जो बात समझ में आये, उसी को सत्य समझें। इस विधि से मन में सोचे हुए, कार्य का शुभाशुभ फल ज्ञात होता है।

ॐ ह्रीं परवादिदेयस्वरूपध्येयाय नमः।

(स्तोत्र श्लोक संख्या १८)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो पासे सिद्धा सुणंति ।

मन्त्र—ॐ नमो सुमतिदेव्यै विषनिर्णाशिन्यै नमः स्वाहा ।

गुण—विषधर सर्प द्वारा दंशित व्यक्ति के मुख, सिर तथा ललाट पर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल के छींटे चुल्लू में भर-भर कर तब तक मारते रहें, जब तक कि वह निर्विष न हो जाय। इस मन्त्र के प्रभाव से सर्प-विष उतर जाता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में काले रंग के आसन पर, आग्नेय कोण की ओर मुंह करके बैठें तथा चन्दन की माला लेकर ७ दिनों तक नित्य १०८ बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि में गुग्गुल और कुन्दरू मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—:०:—

जलजीव मुक्तिकारक एवं नेत्र-पीड़ा नाशक

स्तोत्र श्लोक—धर्मोपदेश समये सविधानुभावा
वास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः॥१९॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अविखणवणासयाणं आगासगामीणं।

मन्त्र—णं हसाव्वराएलोमोन, णं माज्झावउमोन, णं आरोव आनोन, णद्धासिमोन णंताहंरिअमोन, हुलुहुलु, कुलुकुलु, चुलुचुलु स्वाहा।

विधि—इस महामन्त्र का श्रद्धापूर्वक जप करने से मछियारो के जाल में फंसे हुए मत्स्यादि जलजीव बन्धनमुक्त हो जाते हैं।

ॐ ह्रीं अशोकप्रातिहार्यापशोभिताय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या १९)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अविखगद णासए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते ह्रीं श्रीं क्लीं क्षां क्षीं नमः स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से नेत्र-पीडा दूर होती है। आंख दुखने आई हो तो इसे रसौत द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर गले मे बाँधने से लाभ होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान मे हरे रग के आसन पर नैऋत्य कोण की ओर मुंह करके बैठें तथा चन्दन की माला लेकर ७ दिनो तक नित्य १०८ बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम-अग्नि मे चन्दन, अगरु एव घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

—:o—

वशीकरण एवं उच्चाटन कारक

स्तोत्र श्लोक—चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृन्तमेव
विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥२०॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहिलगहणासयाणं आसीविसाणं।

मन्त्र—ॐ ह्रीं नमो भगयओ ॐ पासनाहस्स थमय सव्वाओ ईं ईं, ॐ जिणाणाए मा इह, अहि हवतु, ॐ क्षां क्षीं ह्रीं क्षूं क्षौं क्षः स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र द्वारा श्वेतपुष्प को १०८ बार अभिमन्त्रित कर, राजप्रमुख (राज्याधिकारी) को सुंघा देने से वह साधक के वशीभूत होकर उसका अपराध क्षमा कर देता है।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्योपशोभिताय श्रीजिनाय नमः।
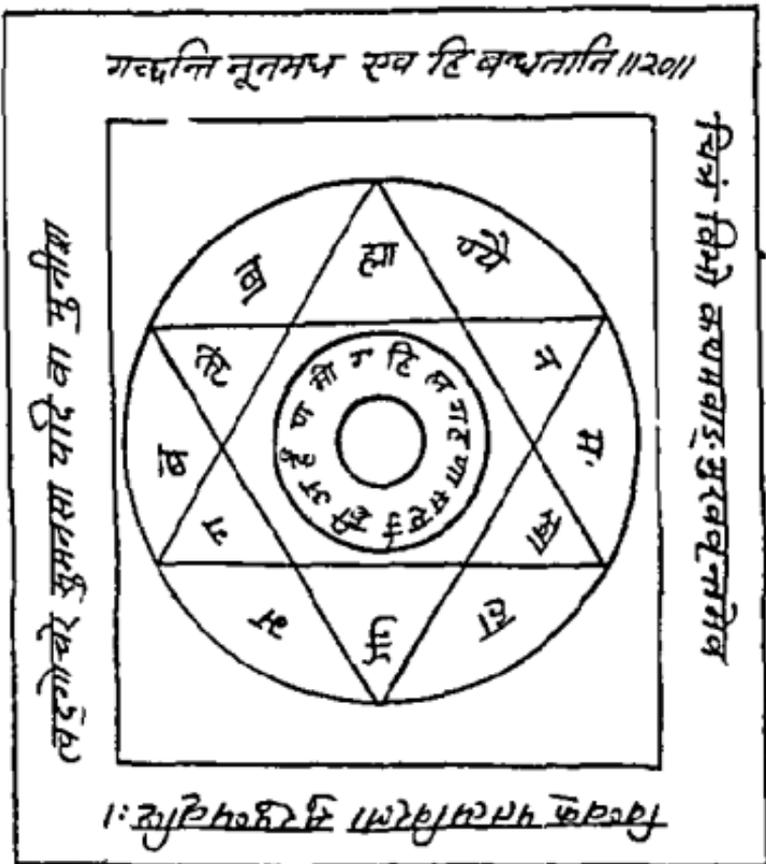
(स्तोत्र श्लोक सख्या २०)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहिल गह णासए।

मन्त्र—ॐ भगवत्यै ब्रह्माण्यै नमः स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से इच्छित-व्यक्ति का उच्चाटन होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान मे भगवा (गेरुए) रग के आसन पर, ईशान कोण की ओर मुंह करके बैठें तथा रुद्राक्ष की माला लेकर ४९ दिनो तक नित्य १००० की सख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि मे गुग्गुल एव राहर मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खे।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

—:०:—

हिंस्र-पशु भयनाशक एवं पुष्प-पोषक

स्तोत्र श्लोक—स्थाने गभीर हृदयोदधि सम्भवायाः
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्वा यतः परमसम्मदसङ्गभाजो
भव्या व्रजन्ति तरसा ऽप्यजरामरत्वम् ॥२१॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं ह्रीं अर्हं णमो पुप्फियतववत्तयराणं दिट्ठिविसाणं।

मन्त्र—ॐ अरिहंतसिद्ध आयरिय उवज्झायसव्वसाहूणं सव्वधम्मतित्थयराणं ॐ नमो भगवईए सुअदेवयाए शान्तिदेवयाए सव्वपवयण दिवयाणं दसण्हं दिसापालाणं चउण्हं लोगपालाणं, ॐ ह्रीं अरिहंतदेवाणं नमः।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक १०८ बार जप करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं, विजय प्राप्त होती है तथा हिंसक पशु, सर्प, चोर आदि का भय दूर होता है।

ॐ ह्रीं अजरामरदिव्यध्वनिप्रातिहार्योपशोभिताय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक सख्या २१)
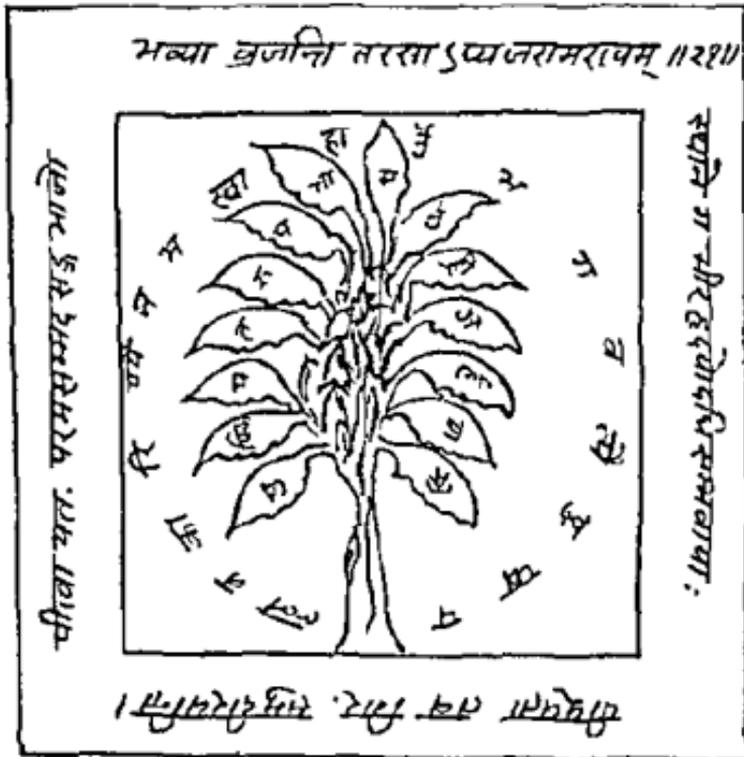
ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुप्फिय तरु पत्ताए।

मन्त्र—ॐ भगवत्यै पुष्पपल्लवकारिण्यै नमः स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से मुरझाये वन-उपवन के वृक्ष पुन पुष्पित-पल्लवित हो उठते हैं।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे कुश के आसन पर, वायव्य कोण की ओर मुंह करके बैठें तथा १४ दिनो तक नित्य १००० की सख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम अग्नि मे गुग्गुल, छार-छबीला तथा घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

—.०.—

सम्मान-प्रदायक एवं फल-पोषक

स्तोत्र-श्लोक—स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो
मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥२२॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो तव पत्तपणासयाणं उग्गतवाणं।

मन्त्र—ॐ हुत्युमले थिणुमुहुमले ॐ मलिय ॐ सतुट्ठमाणु सोसयुणता-मेगया, आयापायालगंत ॐ अलिजरेस सव्वंजरे स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र को ७ बार जपते हुए मुंह के सामने अपनी दोनो हथेलियों को लाकर उन्हें भली-भांति मसल, तत्पश्चात् इच्छित भद्र पुरुष से मिलने जांय तो लाभ होता है एव राजा से सम्मान प्राप्त होता है।

ॐ ह्रीं चामर प्रातिहार्योपशोभिताय श्रीजिनाय नमः।

स्त्री-आकर्षण एवं राजसम्मानदायक

स्तोत्र-श्लोक—श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वल हेमरत्न
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै
श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बु वाहम् ॥२३॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंधण हरणाणं दित्ततवाणं ।

मन्त्र—ॐ नमो भगवति चण्डि कात्यायनि सुभग दुर्भग युवतिजनाना माकर्षय आकर्षय ह्रीं र र य्यूं संवौषट् अमुकस्य हृदयं घे घे ।

टिप्पणी—उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

विधि—इस मन्त्र को सात दिन तक, नित्य १०८ बार जपते रहने से इच्छित-स्त्री का आकर्षण होता है ।

ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्यशोभिताय श्रीजिनाय नमः ।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या २३)

गुण—इसके प्रभाव से राज दरबार में विजय-सम्मान तथा सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में लाल रंग के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठें तथा लाल रेशम की माला लेकर, २७ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम अग्नि में चन्दन, कस्तूरी एवं शिलारस मिश्रित धूप का निक्षेप करें। मन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—: ० :—

शत्रु-सैन्य निवारक एवं राज्यप्रदाता

स्तोत्र-श्लोक—उद्गच्छतातयशितिद्युतिमण्डलेन
लुप्तच्छदच्छ विरशोकतरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो रज्जदाववयाण तत्ततवाणं।

मन्त्र—ॐ ह्रीं भैरवरूप धारिणि चण्डशूलिनि प्रतिपक्ष सैन्यं चूर्णय चूर्णय घूर्मय घूर्मय भेदय भेदय ग्रस ग्रस पच पच खादय खादय मारय मारय हुं फट् स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक १०८ बार जप करके चारों ओर रेखा खींच देने से शत्रु की सेना मैदान छोड़कर भाग जाती है तथा साधक का साहस बढ़ता है और उसे विजय लाभ होता है।

ॐ ह्रीं भामण्डलप्रातिहार्य प्रभास्यते श्रीजिनाय नमः।

स्त्री-आकर्षण एवं राजसम्मानदायक

स्तोत्र-श्लोक—श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वल हेमरत्न
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै
श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बु वाहम् ॥२३॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंधण हरणाणं दित्तवाणं ।

मन्त्र—ॐ नमो भगवति चण्डि कात्यायनि सुभग दुर्भग युवतिजनाना माकर्षय आकर्षय ह्रीं र र य्यूं संवौषट् अमुकस्य हृदयं घे घे ।

टिप्पणी—उक्त मन्त्र म जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

विधि—इस मन्त्र को सात दिन तक, नित्य १०८ बार जपते रहने से इच्छित-स्त्री का आकर्षण होता है ।

ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्योपशोभिताय श्रीजिनाय नमः ।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या २३)

गुण—इसके प्रभाव से राज दरबार में विजय-सम्मान तथा सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में लाल रंग के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठें तथा लाल रेशम की माला लेकर, २७ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम अग्नि में चन्दन, कस्तूरी एवं शिलारस मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—:०:—

शत्रु-सैन्य निवारक एवं राज्यप्रदाता

स्तोत्र-श्लोक—उद्गच्छतातवशितिद्युतिमण्डलेन
लुप्तच्छदच्छ विरशोकतरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो रज्जदावयाणं तत्ततवाणं।

मन्त्र—ॐ ह्रीं भैरवरूप धारिणि चण्डशूलिनि प्रतिपक्ष सैन्यं चूर्णय चूर्णय घूर्मय घूर्मय भेदय भेदय ग्रस ग्रस पच पच खादय खादय मारय मारय हुं फट् स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक १०८ बार जप करके चारों ओर रेखा खींच देने से शत्रु की सेना मैदान छोड़कर भाग जाती है तथा साधक का साहस बढ़ता है और उसे विजय लाभ होता है।

ॐ ह्रीं भामण्डलप्रतिहार्य प्रभास्वते श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक सख्या २४)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गा मियाए।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रां श्रीं षोडशभुजायै पद्मिन्यै श्रीं हूं ह्रीं नमः स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से हाथ से निकला हुआ राज्य (अथवा शासनाधिकार) पुनः प्राप्त होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान मे लाल रग के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ, लाल रग की माला लेकर २७ दिनो तक नित्य १००० बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम-अग्नि मे कपूर, कस्तूरी, शिलारस तथा श्वेत चन्दन मिश्रित धूप का निक्षेप करें। मन्त्र-साधन के अन्तिम दिन हवन करने के बाद श्रावका को २५ क्वारी कन्याओ को मोहनभोग तथा हलुवा का भोजन करायें। मन्त्र-साधना करते समय यन्त्र को भुजा मे बाँध रखना चाहिए।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लाये।

—:०:—

सर्प-वृश्चिकादि विषनाशक एवं हर्ष-वर्द्धक

स्तोत्र श्लोक—भो भो प्रमादमवधूयभजध्वमेन
मागत्यनिर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥२५॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो हिडलमलणाणं महातवाण।

मन्त्र—ॐ नमो भगवति वृद्धगरुडाय सर्वविषविनाशिनि छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द गृण्ह गृण्ह एहि एहि भगवति विद्ये हर हर हुं फट् स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र का पाठ करते हुए, विष चढ़े व्यक्ति के समीप जोर-जोर से ढोल बजाने पर सर्प-वृश्चिक आदि का विष उतर जाता है।

ॐ ह्रीं दुन्दुभिप्रातिहार्याय श्रीजिनाय नमः।

मन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक सख्या २५)
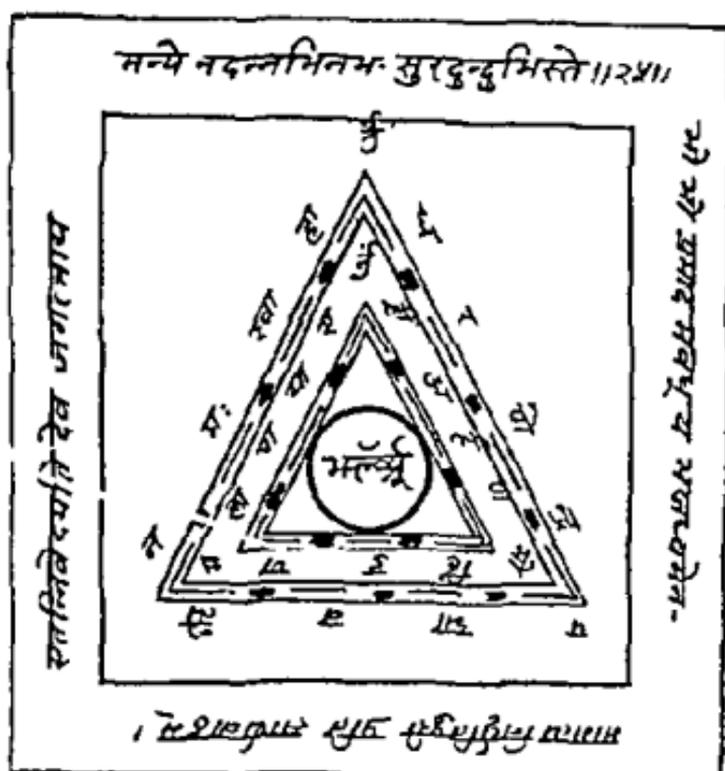
ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो हिडण मलाणयाए।

मन्त्र—ॐ नमो धरणेन्द्रपद्मावत्यै नमः स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से रोग, शोक तथा पीडा का नाश होता है, हर्ष की वृद्धि होती है तथा सब प्रकार के रोग शान्त होते हैं।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में सफे-द रंग के आसन पर बैठ, पश्चिम दिशा की ओर मुँह करके २१ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि में कपूर, चन्दन, इलायची तथा कस्तूरी मिश्रित धूप का निक्षेप करें।

मन्त्र-जप के समय यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधे रखना चाहिए तथा होली एवं दीपावली की रात्रि में मन्त्र को जगाना चाहिए अर्थात् पुन जप करना चाहिए।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—:०:—

परविद्या प्रयोग नाशक एवं सम्मानप्रद

स्तोत्र श्लोक—उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ताकलापकलितोल्लसितातपत्र
व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥२६॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो जयपदाईणं घोरतवाणं।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे महाविद्ये येन येन केनचित मम कृत पापं कारितम् अनुमतं वा तत् पापं तस्यैव गच्छतु ॐ ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे महाविद्ये स्वाहा।

विधि—प्रातःकाल किसी एकान्त स्थान में पूर्वाभिमुख तथा सन्ध्या समय पश्चिमाभिमुख बैठकर दोनों हाथ जोड़कर, अञ्जलि-मुद्रा पूर्वक इस मन्त्र का १०८ बार जप करने से दूसरों की विद्या का किया हुआ प्रयोग नष्ट हो जाता है।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्यविराजिताय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान
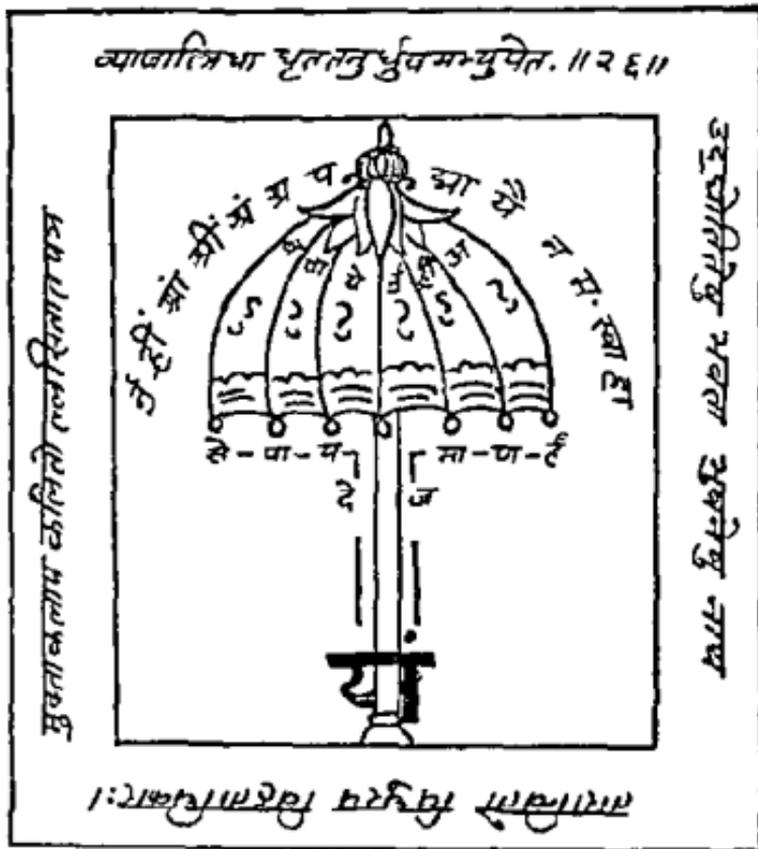
(स्तोत्र श्लोक सख्या २६)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो जयंदेयपासेवत्ताये ।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रां श्रीं श्रूं श्रः पद्मायै नमः स्वाहा ।

गुण—इसके प्रभाव से साधक की सम्मति एव उसके शब्दो को सर्वोत्तम माना जाता है अर्थात् साधक की राय की सर्वत्र कद्र की जाती है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे लाल रग के आसन पर, दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठें तथा लाल मूंगे की माला लेकर २७ दिनो तक नित्य १०८ बार ऋद्धि-मन्त्र का जप कर, निर्धूम-अग्नि मे अगर, छाळवेर तथा छार-छबीला मिश्रित धूप का निक्षेप करे। मन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब उसे आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लाये।

— ० —

दृष्टि-दोष नाशक एवं शत्रु-पराभवकारक

स्तोत्र श्लोक—स्येन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन
कान्ति प्रताप यशसामिव सञ्चयेन।
माणिक्य हेम रजतप्रविनिर्मितेन
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥२७॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो खलवुट्ठणासयाण घोरपरक्कमाण।

मन्त्र—ॐ ह्रीं नमो अरिहताण, ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं नमो आइरियाण, ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाण, ॐ नमो लोए सव्व साहूण, ॐ ह्रीं नमो नाणाय, ॐ ह्रीं नमो दसणाय, ॐ ह्रीं नमो चारित्ताय, ॐ ह्री नमो तवाय, ॐ ह्रीं नमो त्रैलोक्य वशकराय ह्रीं स्वाहा।

विधि—इस महामन्त्र का श्रद्धापूर्वक उच्चारण करते हुए जल को अभिमन्त्रित कर, उसे रोगी को पिलादे तथा उसी के छीटे भी दें तो रोगी की पीडा एव दृष्टि-दोष (नजर लगना) दूर होते है। (विशेपकर शिशुओं के लिए यह मन्त्र परम हितकर है)।

ॐ ह्रीं वप्रत्रयविराजिताय श्रीजिनाय नम.।

यन्त्र-विधान
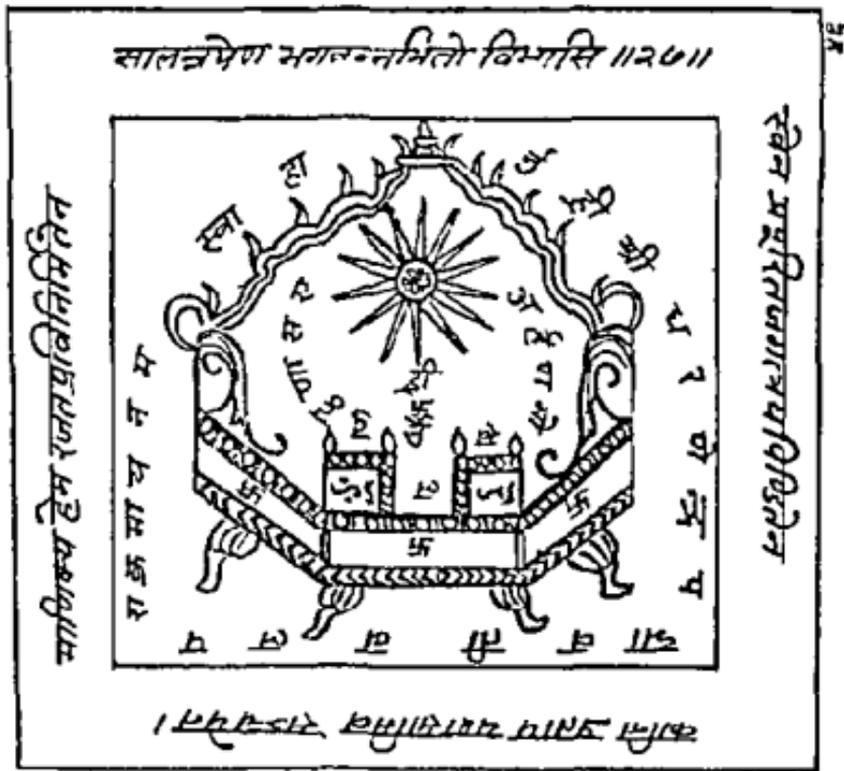
(स्तोत्र श्लोक सख्या २७)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो खल दुट्ठणासए।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र पद्मावती बल पराक्रमाय नमः स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से शत्रु पराजित होता है तथा शत्रुता त्याग कर शान्त हो जाता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे काली ऊन के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठें तथा काले सूत की माला लेकर २१ दिनो तक नित्य १००० ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि मे गुग्गुल, गिरी, सेंधा नमक एव घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें। अन्तिम दिन यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर, उसे पचामृत मे मिला कर नदी मे प्रवाहित करदें।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

—:०:—

पराधीनतानाशक एवं यश-विस्तारक

स्तोत्र श्लोक—विश्वसृजो जिन नमस्त्रिदशाधिपाना
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् ।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र
त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो उवदववज्जणाणं घोर गुणाणं ।

मन्त्र—ॐ ह्रीं अरिहन्त सिद्ध आयरिय उवज्झाय साहू चुलु चुलु हुलु हुलु कुलु कुलु मुलु मुलु इच्छियं मे कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र को श्रद्धापूर्वक एक लाख की सख्या मे जप लेने मे साधक को सर्वत्र विजय प्राप्त होती है। प्रताप मे वृद्धि होती है। पराधीनता नष्ट होती है एव सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

ॐ ह्रीं पुष्पमालानिर्येवितचरणाम्बुज अर्हंते नमः।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या २८)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो दव वज्जणाए ।
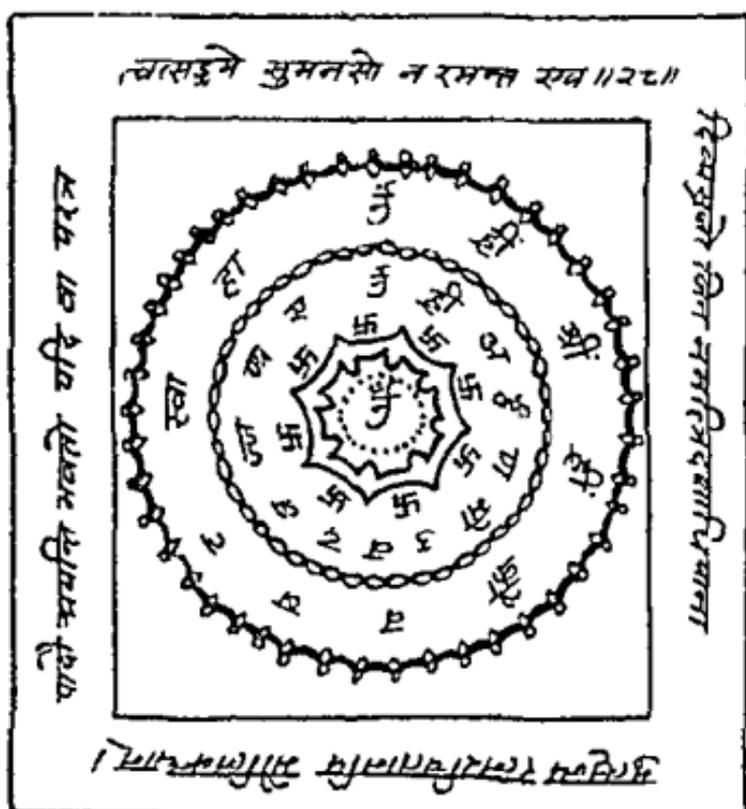
मन्त्र—ॐ ह्रीं श्री ह्रीं क्लौं वषट् स्वाहा ।

गुण—इसके प्रभाव से द्वितीया के चन्द्र की भाँति निरन्तर यश-कीर्ति का विस्तार होता रहता है तथा सर्वत्र विजय प्राप्त होती है ।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान मे पीले रग के आसन पर, दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके बैठे तथा पीले सूत की माला लेकर २१ दिनों तक नित्य १००० की संख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम-अग्नि में चन्दन, लौंग, कपूर, इलायची एव घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करे। यन्त्र को अपने समीप रखें ।

उक्त विधि मे जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लाये ।

—:०:—

दाहक-ज्वर नाशक एवं लोक-प्रसन्नतादायक

स्तोत्र श्लोक—त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि
यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ।
युक्त हि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव
चित्रं विभो यदसि कर्मविपाक शून्यः ॥२६॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो देवाणुप्पियाणं घोरगुण बंभचारीणं ।

मन्त्र—ॐ तेजोर्हं सोम सुधा हंस स्वाहा । ॐ अह ह्रीं क्ष्वीं स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र को भोजपत्र पर चन्दन से लिखकर, उसे मोमबत्ती पर लपेटे । फिर मिट्टी के कोरे घड़े मे पानी भरकर, उसमें मन्त्रयुक्त मोमबत्ती को डालदे तो दाहक-ज्वर दूर हो जाता है ।

ॐ ह्रीं संसार सागर तारकाय श्रीजिनाय नमः ।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक सख्या २८)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो वेवाणुवि पाए ।

मन्त्र—ॐ ह्रीं क्रौं ह्रीं ह्रू फट् स्वाहा ।

गुण—इसके प्रभाव से सब लोग प्रसन्न होते है। जिस व्यक्ति को प्रसन्न करना हो, उसे उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित सुपारी, इलायची अथवा लौग खिलानी चाहिए।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे लाल रग के आसन पर, पूर्वाभिमुख बैठ तथा लाल मूंगा की माला लेकर २१ दिनो तक नित्य १००० की सख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम-अग्नि मे कस्तूरी, शिला-रस, अगर एव श्वेत चन्दन मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार उसे प्रयोग मे लायें।

—: ० :—

शुभाशुभ ज्ञान-प्रदाता एवं जल-स्तम्भक

स्तोत्र श्लोक—विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं
किं वाऽक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतुः ॥३०॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अपुव्वबलपदाईणं आमोसहिपत्ताणं।

मन्त्र—ॐ ह्रीं अर्हं नमो जिणाण लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जो अगराणं मम शुभाशुभ दर्शय दर्शय ॐ ह्रीं कर्ण-पिशाचिनी मुण्डे स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र को शयन करते समय श्रद्धापूर्वक १०८ बार जपने से कार्य का सम्भावित शुभाशुभ फल स्वप्न में ज्ञात हो जाता है।

ॐ ह्रीं अद्भुतगुणविराजितरूपाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान

ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतुः॥३०॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं

अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव

ह्रीं

अ र्हं ण मो अ ह्रो त

४६

(स्तोत्र श्लोक संख्या ३०)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो महाए।
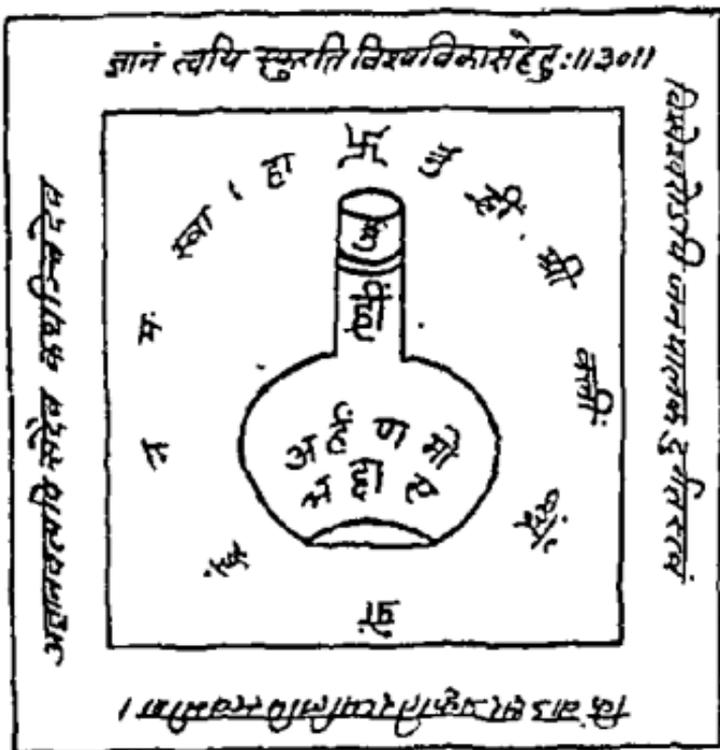
मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ध्रीं ह्रूं नमः स्वाहा।

गुण—इस यन्त्र के प्रभाव से कच्चे घड द्वारा कुएं से पानी भर कर निकाला जा सकता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे काले रग के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठें तथा रुद्राक्ष की माला लेकर ६० दिनो तक, नित्य ७०० की सख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि मे दशाङ्ग अथवा गुग्गुल, लोबान एव घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करे। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

—:०:—

शत्रु-उपद्रवनाशक एवं शुभाशुभ ज्ञान प्रदाता

स्तोत्र श्लोक—प्राग्भारसम्भृतनभासि रजांसि रोषा
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव पर दुरात्मा ॥३१॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो इट्ठविण्णत्तिदायमाण खेलो सहिपत्ताणं।

मन्त्र—ॐ ह्रीं पार्श्वयक्ष दिव्य रूपाय महाघ वर्ण एहि एहि आं क्रों ह्रीं नमः।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक जप करने से दुष्ट शत्रु पराजित होता है तथा उपद्रव शान्त होते है।

ॐ ह्रीं रजोवृष्टपक्षोभ्याय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या ३१)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो थी आवण पत्ताए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवति चक्रधारिणि भ्रामय भ्रामय मम शुभाशुभं वर्शय दर्शय स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से शुभाशुभ प्रश्न का फल ज्ञात होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे श्वेत रंग के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठें तथा सफेद सूत की माला लेकर १४ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि मे चन्दन, छार-छबीला तथा अगर मिश्रित धूप का निक्षेप करें। १५वें दिन घृत, अगर तथा पीली सरसों से हवन करने के बाद मिष्टान्न वितरण करें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—:०:—

निद्राकारक एव सांघातिक विद्या-भयनाशक

स्तोत्र श्लोक—यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीम
भ्रश्यत्तडिन्मुसल मासलघोर धारम् ।
दैत्येनमुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे
तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठमदणासयाण जल्लोसहिपत्ताण ।

मन्त्र—ॐ भ्रम भ्रम केशि भ्रम केशि भ्रम माते भ्रम माते भ्रम विभ्रम विभ्रम मुह्य मुह्य मोहय मोहय स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र को जपते हुए, पृथ्वी पर न गिरे हुए सरसो के दानो को अभिमन्त्रित कर, जिस घर की चौखट पर डाल दिया जाता है उस घर के लोग गहरी निद्रा मे मग्न हो जाते है ।

ॐ ह्रीं कमठदैत्यमुक्तवारिधाराक्षोभ्याय श्रीजिनाय नमः ।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक सख्या ३२)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठमद णासए ।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते मम शत्रून् क्षंघय क्षधय ताडय ताडय उन्मूलय उन्मूलय छिंद छिंद भिंद भिंद स्वाहा ।

गुण—इसके प्रभाव से शत्रु की मायाघातिक शस्त्रादि विद्या का प्रभाव नष्ट होता है और वह निर्बल होकर अपनी दुष्टता को छोड देता है ।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे काले रग के आसन पर, नैर्ऋत्यकोण की ओर मुंह करके बैठे तथा पद्मबीज (कमलगट्टा) की माला लेकर, २७ दिनों तक, नित्य १००० की सख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम अग्नि मे गुग्गुल, तगर, नागरमोथा तथा घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करे। यन्त्र को अपने समीप ही रखे ।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लाये ।

—:०:—

भूतप्रेतादि भय-नाशक एवं दुर्भिक्ष निवारक

स्तोत्र श्लोक—ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृति मर्त्यमुण्ड-
प्रालम्बभृद्भयदवक्त्र विनिर्यदग्निः ।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः
सोऽस्याभवत्प्रतिभव भवदुःख हेतुः ॥३३॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अतणिपातादिवारयाणं सव्वोसहिपत्ताणं ।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः क्लौ क्लीं कलिकुण्ड पासनाह ॐ चुरु चुरु मुरु मुरु कुरु कुरु फर फर किलि किलि कल कल धम धम ध्यानाग्निना भस्मी कुरु कुरु पुरय पुरय प्रणतानां हित कुरु कुरु हु फट् स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक जप करने से राजभय, भूत-पिशाच भय, डाकिनी-शाकिनी भय एव हस्ती, सिंह, सर्प, वृश्चिक आदि का भय नष्ट होता है ।

ॐ ह्रीं कमठदैत्य प्रेषित भूतपिशाचाद्यक्षोभ्याय श्रीजिनाय नमः ।
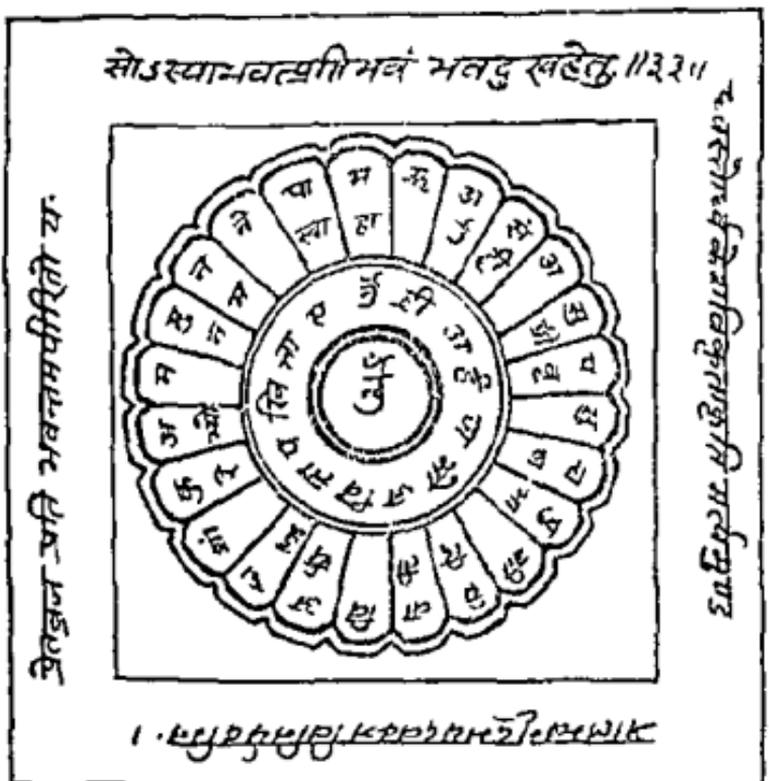
यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक सख्या ३३)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो जविसाए खित्ताए।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्री वृषभादितीर्थङ्करेभ्यो नमः स्वाहा।

अथवा

ॠ अस असु पसु पपु शीश्रे वावि अधशाकुं अममुनने पाम।

गुण—इसके प्रभाव से अतिवृष्टि, अनावृष्टि, उल्कापात एव टिड्डी दल आदि उत्पातो से सम्भावित दुर्भिक्ष दूर होकर, प्रजा की रक्षा होती है तथा सुभिक्ष होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे गेरुए रग के आसन पर, वायव्य कोण की ओर मुंह करके बैठे तथा रुद्राक्ष की माला लेकर ७ दिनो तक, नित्य १००० बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम-अग्नि मे कपूर, चन्दन, गिरी, इलायची एव घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से मन्त्र जब सिद्ध हो जाय, तब उसे आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

—:०:—

धन-अन्न प्रदायक एवं भूतादि पीड़ा नाशक

स्तोत्र श्लोक– धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसन्ध्य
मारधयन्ति विधिवद्विधुतान्य कृत्याः।
भक्त्योल्ल सत्पुलकपक्ष्मल देह देशाः
पादद्वय तव विभो भुवि जन्म भाजः ॥३४॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो भूताबाहावहारयाणं विट्ठोसहिपत्ताणं।

मन्त्र—ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो भगवइ महाविज्जाए सत्तट्ठाए मोर हुलु हुलु चुलु चुलु मयूरवाहिनीए स्वाहा।

विधि—पौष कृष्णा दशमी (गुजराती-मगसिर कृष्णादशमी) के दिन निराहार रहकर इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक १००८ बार जप करें। तदुपरान्त आवश्यकतानुसार परदेश-यात्रा, व्यवसाय अथवा लेन-देन के समय इस मन्त्र का सात बार स्मरण (जप) करने से लक्ष्मी तथा अन्न का लाभ होता है।

ॐ ह्रीं त्रिकालपूजनीयाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या ३४)
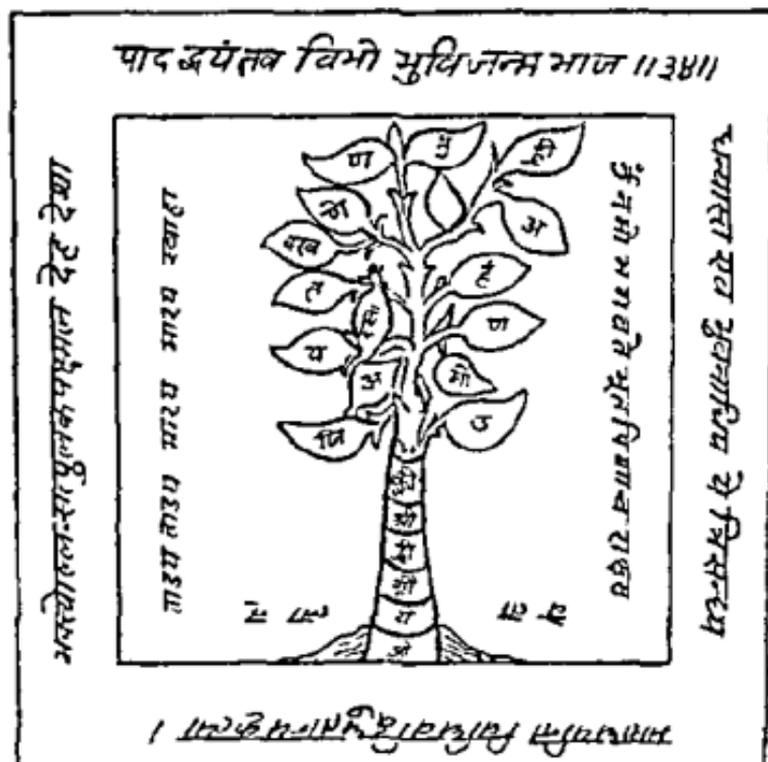
ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजि अस्सायतक्खणणं।

मन्त्र—ॐ ह्रीं नमो भगवते भूतपिशाचराक्षस वेतालान् ताडय ताडय मारय मारय स्वाहा।

गुण—इससे भूत, पिशाच, राक्षस, डाकिनी, शाकिनी आदि की पीडा तथा शत्रु-भय आदि नष्ट होते है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान मे काले रग के आसन पर वायव्य कोण की ओर मुँह करके बैठे तथा बिच्छूकाँटा के फलो की माला लेकर २१ दिनो तक नित्य २१ बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करते हुए इसी मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित सरसो के दानो को पानी मे डाले तथा निर्धूम-अग्नि मे गुग्गुल, सरसो, लालमिर्च एव घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करे। यन्त्र को अपने समीप रखे।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लाये।

—:०:—

संकट-निवारक एवं अपस्मारादि दोष नाशक

स्तोत्र श्लोक—अस्मिन्नपारभववारि निधौ मुनीश
मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र पवित्र मन्त्रे
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥३५॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो मिगोरो अवारयाणं मणवलीणं।

मन्त्र—ॐ नमो अरिहंताणं ज्म्ल्व्र्यूं नमः, ॐ नमो सिद्धाण झ्म्ल्व्र्यूं नमः, ॐ नमो आयरियाणं स्म्ल्व्र्यूं नमः, ॐ नमो उवज्झायाण ह्म्ल्व्र्यूं नमः ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं छ्म्ल्व्र्यूं नमः, अमुकस्य सकटमोक्ष कुरु कुरु स्वाहा।

टिप्पणी—उक्त मन्त्र मे जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

विधि—इस मन्त्र को एक सुन्दर चौकी के ऊपर लिखकर, उसके ऊपर श्री पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा को स्थापित करें, तदुपरान्त चमेली के पुष्पो को चौकी पर चढाते हुए इस मन्त्र का ५०० बार जप करे। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक पुष्प चौकी पर प्रतिमा के समीप चढाते जाय। मन्त्र जप खडे होकर करना चाहिए। इस मन्त्र से सब सकट दूर होते हैं तथा सर्वत्र विजय प्राप्त होती है।

ॐ ह्रीं आपन्निवारकाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान

-६४

(स्तोत्र श्लोक सख्या ३५)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो मिज्जलिज्जणासए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते मृग्युन्मदापस्मारादि रोग शांति कुरु कुरु स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से मृगी, उन्माद, अपस्मार तथा पागलपन आदि असाध्य रोग शान्त होते हैं।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में केले के पत्ते के आसन पर, नैर्ऋत्य कोण की ओर मुंह करके बैठे तथा चन्दन की माला लेकर २१ दिनों तक नित्य ७०० की सख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम-अग्नि में लोबान एव घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करे। यन्त्र को अपने समीप रक्खे।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग में लावे।

— ० —

वशीकरण-कारक एवं सर्प-कीलक

स्तोत्र श्लोक—जन्मान्तरेऽपि तव पादयुग न देव
मन्ये मया महित मीहित दान दक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवाना
जातो निकेतनमह मथिताशयानाम् ॥३६॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो वालवसीय रणकुसलाण वचणबलीण ।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते चन्द्र प्रभाय चन्द्रेन्द्रसहिताय नयनमनोहराय ॐ चुलु चुलु गुलु गुलु नीलभ्रमरि नीलभ्रमरि मनोहर सर्वजन वश्य कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि—दीपावली के दिन पीले रग की गाय के दूध से निर्मित शुद्ध घृत का दीपक जलाकर, उससे नवीन मिट्टी के बर्तन मे काजल पारें। आवश्यकता के समय उक्त काजल को अपनी आंख मे लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के सम्मुख पहुंचा जाएगा, वह वशीभूत हो जाएगा।

ॐ ह्रीं सर्वपराभवहरणाय श्रीजिनाय नम ।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक सख्या ३६)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो प्रां हुं फट् विषक्राए।

मन्त्र—ॐ ह्रीं अष्टमहानाग कुल विष शान्तिकारिण्यैः नमः।

गुण—इस मन्त्र से अभिमन्त्रित ककड़ियो को सर्प के ऊपर फेंकने से वह कीलित हो जाता है। इसे पढकर काले सर्प को पकड़ने से वह काटता नही है तथा उसके विष का प्रभाव भी नही होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में हरे रग के आसन पर, ईशान कोण की ओर मुंह करके बैठें तथा सन (पाट) की माला लेकर ७ दिनों तक नित्य १००० की संख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि मे गुग्गुल एव कुन्दरू मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खे।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लाये।

—: o :—

भूतग्रहादि निवारक एवं सम्मान-प्रदायक

स्तोत्र श्लोक—नूनं न मोहतिमिरावृत लोचनेन
पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्माविधो विधुरयन्ति हिमामनर्थाः
प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ॥३७॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वराज पयावसीयरण कुसलाण काय-बलीणं।

मन्त्र—ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं श्रावय श्रावय सं सं क्लीं क्लीं ह्लूं ह्लूं ल्लूं ब्लूं ह्रां ह्रां द्रां द्रीं ह्रीं ह्रीं द्रावय द्रावय ह्रीं स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित जल का आचमन करने मे भूत, ग्रह तथा शाकिनी आदि के उपद्रव शान्त होते है।

ॐ ह्रीं सर्वमसर्वा नथमयनाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान
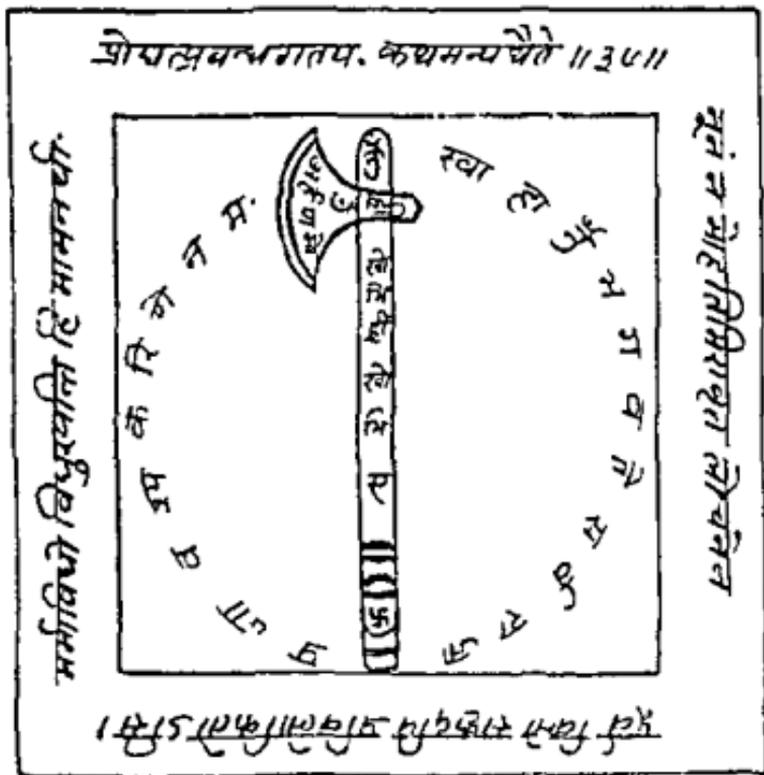
(स्तोत्र श्लोक सख्या ३७)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो खो भि ह्रीं खोभिए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते सर्वराजाप्रजावश्य कारिणे नमः स्वाहा।

गुण—यन्त्र को अपने पास रक्खें तथा मन्त्र मे ७ कवाडो को अभिमन्त्रित कर, क्षीरवृक्ष के नीचे पहुँच कर उन्हे ऊपर की ओर उछाल कर अधर मे ही लपक ले, तदुपरान्त उन्हे नगर के चौगहे पर डाल दें तो राजा मे मिलाप एव श्रेष्ठ पुरुषो से सम्मान प्राप्त होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में लाल रग के आसन पर, पूर्वाभिमुख बैठे तथा २१ दिनो तक नित्य १०८ बार ऋद्धि-मन्त्र का कनेर के फूलो के साथ जप करे अर्थात् १०८ कनेर के फूलो के साथ १०८ बार ऋद्धि-मन्त्र जपे तथा निर्धूम-अग्नि मे लोग, कुन्दरू, चन्दन और घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खे।

उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर उसे आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

—:०:—

अभीप्सित कार्य-साधक एवं नहरू आदि रोग-नाशक

स्तोत्र श्लोक—आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसिभक्त्या
जातो ऽस्मितेन जनबान्धव दुःखपात्रं
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥३८॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो दुस्सहकट्ठणिवारयाणं खीरसवीणं ।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं क्लीं क्रों ब्लें भ्रों भ्रूं नमिऊण पासना दुःखारिविजयं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक सवा लाख की संख्या में जप करने से अभिलषित कार्यों की सिद्धि होती है ।

ॐ ह्रीं सर्वदुःख हराय श्रीजिनाय नमः ।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक सख्या ३८)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो इट्ठि मिट्ठि भक्खं कराए।
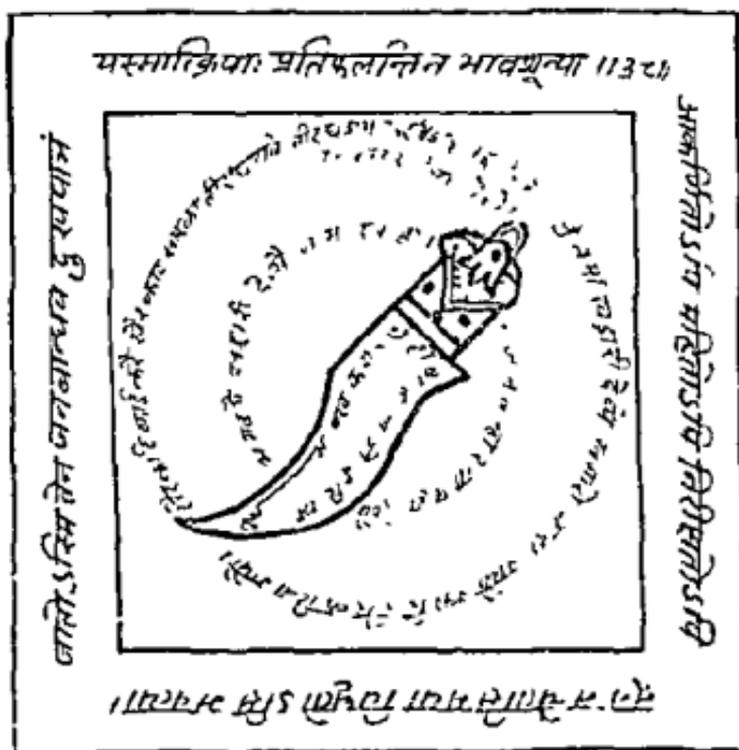
मन्त्र—ॐ जानवाग्हारवापहारिण्यं भगवत्यं खड्गारीदेव्यं नमः स्वाहा।

गुण—इस मन्त्र से होली की राख को २१ बार अभिमन्त्रित कर उसके द्वारा नहरुवा, जनेवा, उदर तथा हृदय-पीडा के रोगी को, जब तक रोग दूर न हो, तब तक प्रतिदिन झाड़ा देते रहने से उक्त बीमारियाँ दूर होती हैं।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में श्वेत रंग के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठें तथा श्वेत काष्ठ (सफेद लकड़ी) की माला लेकर १४ दिनों तक, नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि में लौंग, कुन्दरू, चन्दन तथा घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—:०:—

आकर्षण कारक एवं ज्वरादि नाशक

स्तोत्र श्लोक—त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य
कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य
भक्त्यानते मयि महेश दयां विधाय
दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥३९॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वजरसंतिकरणं सप्पिसवीणं।

मन्त्र—म्ल्व्र्यूं क्लीं जये विजये जयंते अपराजिते जम्ल्व्र्यूं जंभे, झ्म्ल्व्र्यूं मोहे, म्म्ल्व्र्यूं स्तम्भे, ह्म्ल्व्र्यूं स्तम्भिनि अमुकं मोहय मोहय मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

टिप्पणी—उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

विधि—इस मन्त्र के जप से स्त्री-पुरुष में परस्पर आकर्षण होता है। स्त्री जपे तो पुरुष वश में होता है और पुरुष जपे तो स्त्री वश में होती है।

ॐ ह्रीं जगज्जीववत्सलाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान
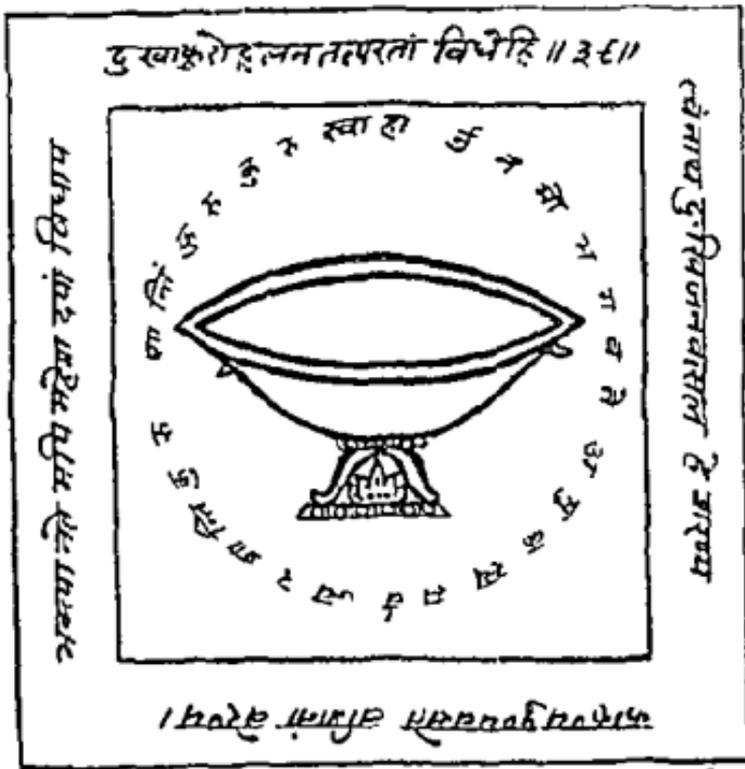
(स्तोत्र श्लोक संख्या ३६)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो सत्ता वरिएगणिज्जं।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते अमुकस्य सर्वज्वर शांति कुरु कुरु स्वाहा।

टिप्पणी—उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ रोगी व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

गुण—इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर तथा धूप देकर, रोगी व्यक्ति के कण्ठ में बाँध देना चाहिए। इसके प्रभाव से सब प्रकार के ज्वर तथा सन्निपात दूर होते हैं।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में हरे रंग के आसन पर ईशान कोण की ओर मुँह करके बैठें तथा कमल की माला लेकर, ७ दिनों तक नित्य १००८ बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि में गुग्गुल, गिरी एवं घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर उसे आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—:०:—

विषम-ज्वरादि नाशक

स्तोत्र-श्लोक—निः सत्वसारशरणं शरणं शरण्य
मासाद्य सादितरिपु प्रथितावदातम् ।
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो
वन्ध्योऽस्मि तद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥४०॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो उण्हसीयवाहविणासयाणं मधुसवीणं ।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते झ्ल्व्यूं नमः स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक जप करने से सब प्रकार के विषम-ज्वर दूर होते हैं ।

ॐ ह्रीं सर्वशान्तिकराय श्रीजिनाय चरणाम्बुजाय: नमः ।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या ४०)
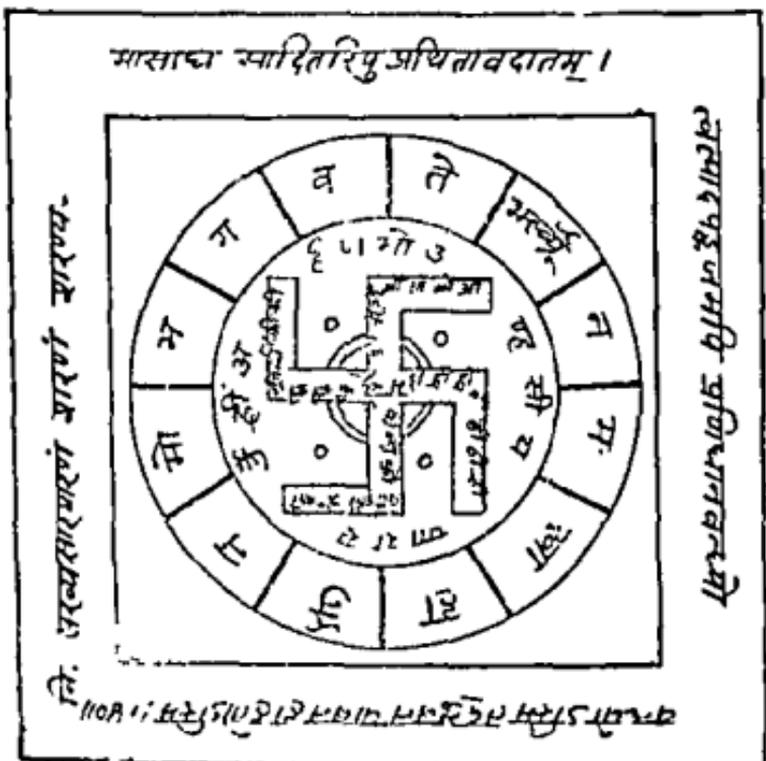
ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो उण्ह सीय णासए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते झ्व्यूं नमः स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से इकतरा, तिजारी, चौथैया आदि विषम-ज्वर दूर होते हैं।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे हरे रग के आसन पर, ईशान कोण की ओर मुंह करके बैठें तथा रुद्राक्ष की माला लेकर १४ दिनो तक नित्य १००० की संख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम अग्नि में गिरी एवं गुग्गुल मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—:०:—

अस्त्र-शस्त्रादि स्तम्भक

स्तोत्र-श्लोक—देवेन्द्रवन्द्य विदिताखिलवस्तु सार
संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ
त्रायस्व देवकरुणाह्रद मां पुनीहि
सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥४१॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो वप्पलाहकारचाणं अमइसयीणं।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ब्लूं नमः स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक जप करने से शत्रु के अस्त्र-शस्त्रादि कुण्ठित हो जाते हैं।

ॐ ह्रीं जगन्नायकाय श्रीजिनाय नमः।

(स्तोत्र श्लोक संख्या ४१)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो वप्पला हप्पए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते षंमर्यारि नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ब्लूं नमः।

गुण—इस मन्त्र के प्रभाव से तीर, तलवार, भाला आदि अस्त्र-शस्त्र साधक को घायल नहीं कर पाते।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में काले रंग के आसन पर, पूर्वाभिमुख बैठें तथा काले सूत की माला लेकर २१ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें एवं निर्धूम अग्नि में नमक, मिर्च, गुग्गुल तथा घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर उसे आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—: ० :—

स्त्री-रोग नाशक

स्तोत्र श्लोक—यद्यस्ति नाथ भवदङ्घ्रि सरोरुहाणा,
भक्तेः फलकिमपि सन्ततसञ्चितायाः।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥४२॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो इत्थिरत्तरो अणासयाणं अक्खीणमहाण-साण।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं असिआउसा भूर्भुवः स्वः चक्रेश्वरी देवी सर्वरोग भिद भिद ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र का नित्य १०८ बार श्रद्धापूर्वक जप करने से स्त्रियों से सम्बन्धित समस्त कठिन रोग दूर होते है तथा समस्त सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

ॐ ह्रीं अशरणशरणाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक सख्या ४२)
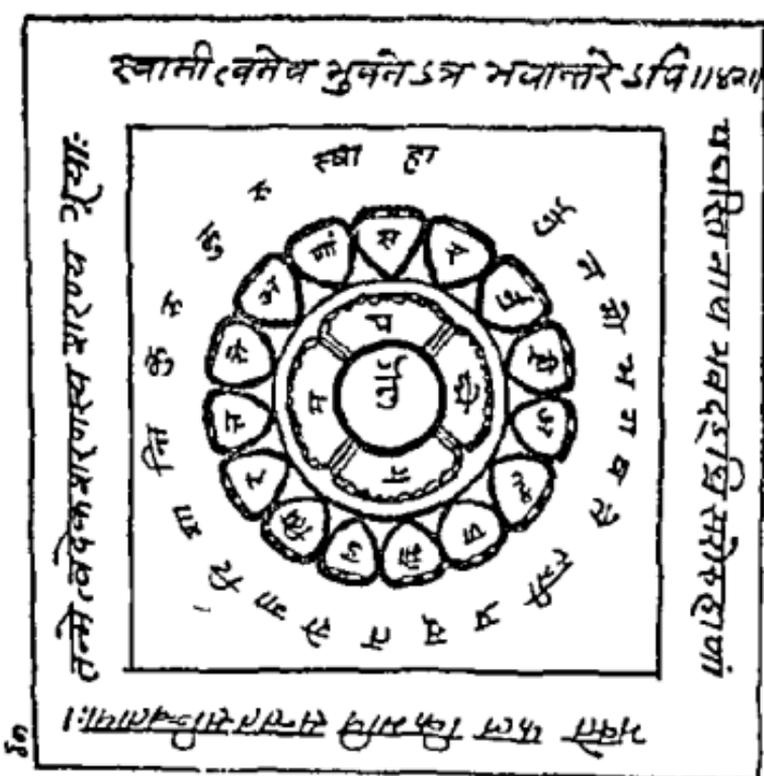
ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो इत्थि रत्त रोअणाराए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते स्त्री प्रसूत रोगादि शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से स्त्रियों का प्रदर रोग दूर होता है, रक्त-स्राव रुक जाता है तथा गर्भ का स्तम्भन होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में चित्र-विचित्र (रंग-बिरंगी लगी) आसन पर, उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठे तथा कदली फल (केला के फल) की माला लेकर, २१ दिनों तक नित्य १०८ की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम अग्नि में लौंग, कपूर, चन्दन, इलायची, शिलारस एवं घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करे। यन्त्र को अपने समीप रक्खे तथा पद्मावती देवी की मूर्ति का कुसुंभी रंग के वस्त्राभूषणों से शृङ्गार करे।

उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर उसे आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—.०:—

भय-नाशक एवं बन्धन-मोक्ष कारक

स्तोत्र-श्लोक—इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र
सान्द्रोलसत्पुलक कञ्चुकिताङ्ग भागाः।
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्याः
ये संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्या ॥४३॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंदिमोअगाणं सव्वसिद्धाय दणाणं।

मन्त्र—ॐ नमो भगवति हिडिम्बवासिनि अल्लल्लमांसप्पियेन हयल-मंडलपइट्ठिए तुह रणमत्ते पहरणदुट्ठे आयासमंडि पायालमंडि सिद्धमंडि जोइणिमंडि सव्वमुहमंडि कज्जलपडउ स्वाहा।

विधि—कृष्णपक्ष की अष्टमी को ईशान दिशा की ओर मुँह करके इस मन्त्र का जप करें तथा काले धतूरे के बीजों के तेल का दीपक जलाकर, उससे नारियल के खोपरे में काजल पारें। उस काजल द्वारा कपाल पर त्रिशूल का चिह्न बनाने तथा उसे नेत्रों में आँजने से सब प्रकार के भय दूर होते हैं तथा चित्त की उद्विग्नता शान्त होती है।

ॐ ह्रीं चित्त समाधि सुसेविताय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या ४३)

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंदि मोअ णाए।
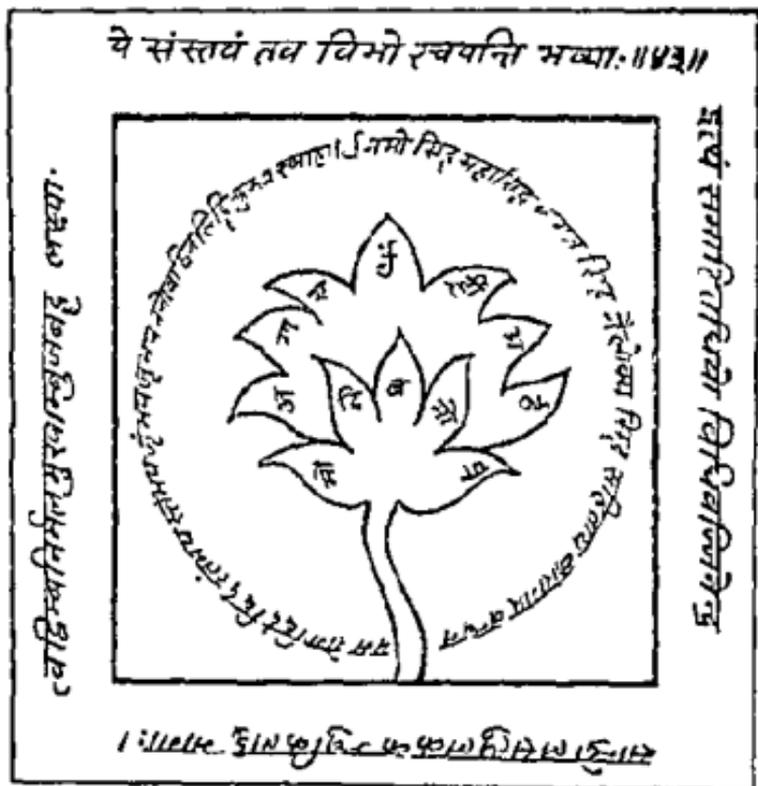
मन्त्र—ॐ नमो सिद्ध महार्द्धि जगत् सिद्ध त्रैलोक्य सिद्ध सहिताय कारागार बंधन मम रोगं छिन्द छिन्द, स्तम्भय स्तम्भय जृंभय जृंभय मनोवांछित सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से बन्दी बन्धन-मुक्त हो जाता है, रोग शान्त होता है तथा अभीष्ट कार्य सिद्ध होते हैं।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में काले कम्बल के आसन पर, आग्नेय कोण की ओर मुंह करके बैठे तथा काले रंग के सूत की माला लेकर १४ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करे एवं निर्धूम-अग्नि में चन्दन, गुग्गुल तथा लालमिर्च मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि में जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब उसे आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—·०·—

रोग-शत्रु नाशक एवं व्यापार-वर्द्धक

स्तोत्र श्लोक—जननयनकुमुदचन्द्र प्रभास्वराः
स्वर्ग सम्पदो भुक्त्वा।
ते विगलितमलनिचया
अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥४४॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खयसुहदायगस्स वड्ढमाण
मन्त्र—ॐ णट्ठट्ठमयट्ठाणे पणट्ठकम्मट्ठणट्ठसंसारे।
परमट्ठणिट्ठिअट्ठे अट्ठगुणाधीसरं वंदे ॥

विधि—राई, नमक, नीम के पत्ते, कड़वी तूमड़ी
गुग्गुल—इन पांचों वस्तुओं को एकत्र कर उक्त मन्त्र से अ
फिर पिछले प्रहर में नित्य ३०० बार हवन करने से रोग,
का नाश होता है। जब तक कार्य सिद्ध न हो, तब तक ह
चाहिए।

ॐ ह्रीं परमशांति विधायकाय श्रीजिनाय नम

यन्त्र-विधान

(स्तोत्र श्लोक संख्या ..
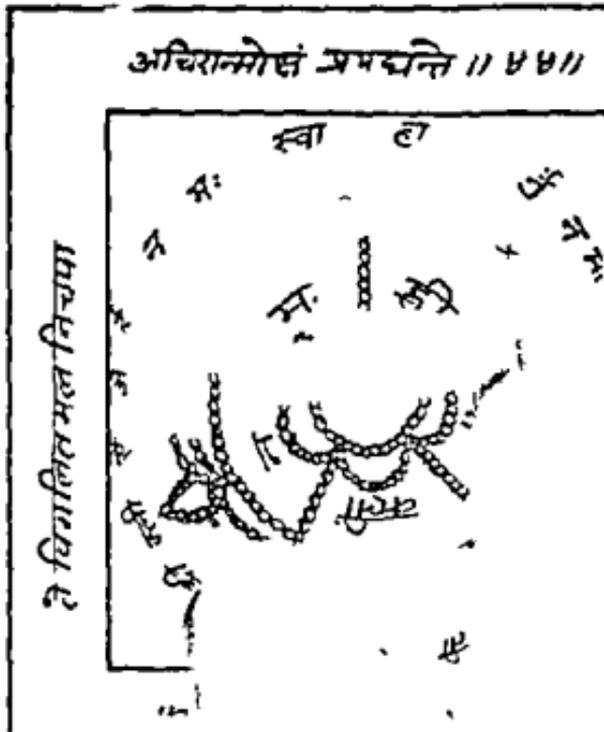
ऋद्धि—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः।

मन्त्र—ॐ नमो धरणेन्द्र पद्मावतीसहिताय श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः स्वाहा।

गुण—इससे व्यवसाय में लाभ तथा धन की प्राप्ति होती है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में लाल रंग के आसन पर, पूर्वाभिमुख बैठें तथा मूँग की माला लेकर ४० दिना तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि में चन्दन, कस्तूरी, शिलारस एवं कपूर मिश्रित धूप का निक्षेप करें। मन्त्र-जप की सम्पूर्ण अवधि में एकाशन तथा भूमि-शयन करें तथा यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर, उसे आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

—•—

३ श्रीभक्तामर स्तोत्र मन्त्र-यन्त्र-साधन

आवश्यक-ज्ञातव्य

श्रीभक्तामर स्तोत्र दिगम्बर तथा श्वेताम्बर—दोनो जैन-सम्प्रदायो मे समान रूप से मान्यता एव प्रतिष्ठा प्राप्त है। इसके रचयिता श्री मानतुङ्ग आचार्य हैं, जिनका स्थिति-काल राजा भोज के समय का माना जाता है।

विभिन्न कामनाओं की पूर्ति हेतु इस स्तोत्र को विभिन्न ऋद्धि तथा मन्त्रो के साथ प्रयोग मे लाया जाता है। इस स्तोत्र के मन्त्र-साधन तथा यन्त्र-साधन की विधियाँ 'कल्याण मन्दिर स्तोत्र' की भाति पृथक्-पृथक् न होकर एक ही है अर्थात् मन्त्र-यन्त्र साधना से पूर्व एक बार सम्पूर्ण स्तोत्र का श्रद्धा सहित पाठ करें, तदुपरान्त जिस कार्य विशेष के लिए मन्त्र-साधना करनी हो, उससे सम्बन्धित स्तोत्र-श्लोक को एक मोटे कागज पर बड़े-बड़े अक्षरो मे लिखकर साधनास्थली मे रक्खे, तदुपरान्त उसके यन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवाकर अपने समीप रक्खे, फिर 'साधन-विधि' के अनुसार ऋद्धि तथा मन्त्र का निश्चित सख्या मे जप करें।

इस स्तोत्र की मन्त्र-यन्त्र साधना के समय भगवान् आदिनाथ स्वामी की प्रतिमा को सम्मुख रखने से आत्म-रक्षा होती है। यो, प्रतिमा को सम्मुख रखना आवश्यक नही माना गया है।

इस स्तोत्र के जिन ऋद्धि-मन्त्रो के साथ जप-सख्या का उल्लेख नही है, उन्हे २१ दिन तक नित्य १००० की सख्या मे जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। पूर्वाभिमुख, पवित्र आसन पर बैठना तथा सफेद सूत की माला पर जप करना चाहिए।

सर्वविघ्न विनाशक

श्लोक—भक्तामर प्रणत मौलि मणि प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित पापतमो वितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपाद युगं युगादा-
यालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥१॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हणमो अरिहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ।

साधन-विधि—पवित्रता पूर्वक नित्य १०८ बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करने तथा यन्त्र को अपने पास रखने से सब प्रकार के विघ्न तथा उपद्रव दूर होते है ।

मस्तक-पीड़ा नाशक

श्लोक—यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा
उद्भूत बुद्धि पटुभिः सुरलोक नाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय चित्त हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो ॐ ह्री जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमः सकलार्थ सिद्धीणं ।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे काले वस्त्र धारण कर, काले आसन पर पूर्वाभिमुख हो दण्डासन से बैठे तथा काली माला हाथ मे लेकर २१ दिनो तक नित्य १०८ बार अथवा ७ दिनो तक नित्य १००० की सख्या मे ऋद्धि-मन्त्र का जप करने से शत्रु नष्ट होते है तथा सिर-दर्द दूर होता है। मन्त्र साधन-काल मे नित्य हवन करना चाहिए तथा दिन मे एक बार भोजन करना चाहिए। यन्त्र पास मे रखने से शत्रु की दृष्टि बन्द (नजर-बन्द) होती है।

—.०.—

सर्व-सिद्धि दायक

श्लोक—बुद्धया विनाऽपि विबुधार्चितपाद पीठ
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो परमोहि जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्य सर्वसिद्धि दायके भ्यो नमः स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते परमतत्त्वार्थ भव कार्यसिद्धिः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः असवरूपाय नमः ।

अभिमन्त्रित पानी के छींटे मुँह पर देने मे सब प्रसन्न होते हैं तथा यन्त्र को पास रखने से शत्रु की नजर बन्द होती है।

—: o :—

जल-जन्तु भय-मोचक

श्लोक—वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र शशाङ्ककान्तान्
कस्ते क्षमः सुरगुरु प्रतिमो ऽपि बुद्धया।
कल्पान्त काल पवनोद्धत नक्र चक्रं
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो सव्वोहि जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जलयात्रा जलदेवताभ्यो नमः स्वाहा।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे बैठकर, सफेद माला लेकर ७ दिनो तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा यन्त्र को समीप रखकर 'ॐ जल देवताभ्यो नमः स्वाहा' इस मन्त्र द्वारा सात-सात बार एक-एक कंकडी को अभिमन्त्रित करने के बाद ऐसी २१ कंकडियों को पानी में डाल देने से उस जलाशय मे मछलियाँ आदि जल-जीव नहीं

जाते। मन्त्र-जप के समय श्वेत पुष्प चढाने चाहिए। पृथ्वी पर शयन तथा एक बार भोजन करना चाहिए।

—:o:—

नेत्र-रोग-हारक

श्लोक—सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश
फर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं सर्वसंकट निवारणभ्यः सुपार्श्व यक्षेभ्यो नमो नमः स्वाहा।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में पीले वस्त्र पहिन कर तथा पीले आसन पर बैठकर ७ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा पीले रंग के पुष्प चढ़ायें एवं निर्धूम-अग्नि में कुन्दरू मिश्रित धूप का निक्षेप करें। मन्त्र को समीप रक्खें।

उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय जिस

व्यक्ति की आँख दुखती हो उस दिन भर भूखा रखकर सायंकाल २१ बतासों को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, तथा बतासों को पानी में घोल कर रोगी व्यक्ति को पिलावें तथा मन्त्र से अभिमन्त्रित जल के छींटे उसकी आँखों पर मारे। इससे दुखती हुई आँख ठीक हो जाती है। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल को कुए अथवा जलाशय के पानी में डाल देने से उसमें लाल रंग के कीड़े नहीं पड़ते। यदि पड गये हों तो नष्ट हो जाते है। साधन-काल में यन्त्र को अपने समीप रखना चाहिए।

— ० —

विद्या-प्रसारक

श्लोक—अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास धाम
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिल: किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चाम्रचारुकलिका निकरैकहेतु: ॥६॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठ बुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नम: स्वाहा।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रां श्रीं श्रूं श्र: हंस थ थ थ: ठ: ठ: सरस्वती विद्या-प्रसाद कुरु कुरु स्वाहा।

६८

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे लाल रग के आसन पर, लाल वस्त्र पहिनकर बैठे तथा २१ दिनो तक नित्य १००० की सख्या मे मन्त्र का जप करे। यन्त्र को समीप रक्खे। पूजा के लिए लाल रग के पुष्प हो तथा कुन्दरू मिश्रित धूप का निर्धूम-अग्नि मे निक्षेप करें। साधना-काल मे पृथ्वी पर शयन करे तथा केवल एक समय ही भोजन करे।

—:०:—

क्षुद्रोपद्रव-निवारक

श्लोक—त्वत्संस्तवेन भव सन्तति सन्निबद्धं
पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त लोक मलिनीलमशेषमाशु
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥७॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ ह्रीं हं सौं श्रां श्रीं क्रौं क्लीं सर्व दुरित संकट क्षुद्रोपद्रव कष्ट निवारणं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः।
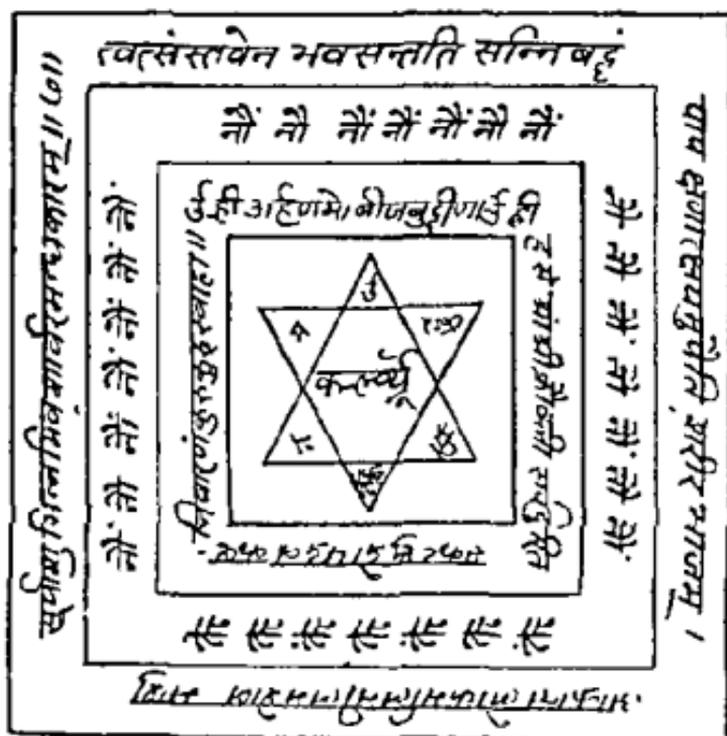
साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में हरे रग के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर, हरे रग की माला लेकर, २१ दिनों तक नित्य १०८ बा

ऋद्धि-मन्त्र का जप करे। यन्त्र को समीप रक्खे। यन्त्र हरे रंग का तथा धूप लोबान मिश्रित होनी चाहिए।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर अभिमन्त्रित यन्त्र को गले में बांधने से सर्प का विष उतर जाता है। यदि मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित ककड़ी को किसी सर्प के सिर पर मार दिया जाय तो वह कीलित हो जाता है। यह मन्त्र सब प्रकार के विषों को दूर करता है।

—: ० :—

सर्वारिष्ट योग निवारक

श्लोक—मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद
मारभ्यते तनुधियाऽऽपि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूद बिन्दुः ॥८॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो पादानुसारिण झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा। ॐ ह्रीं लक्ष्मण रामचंद्र देव्यै नमः स्वाहा।
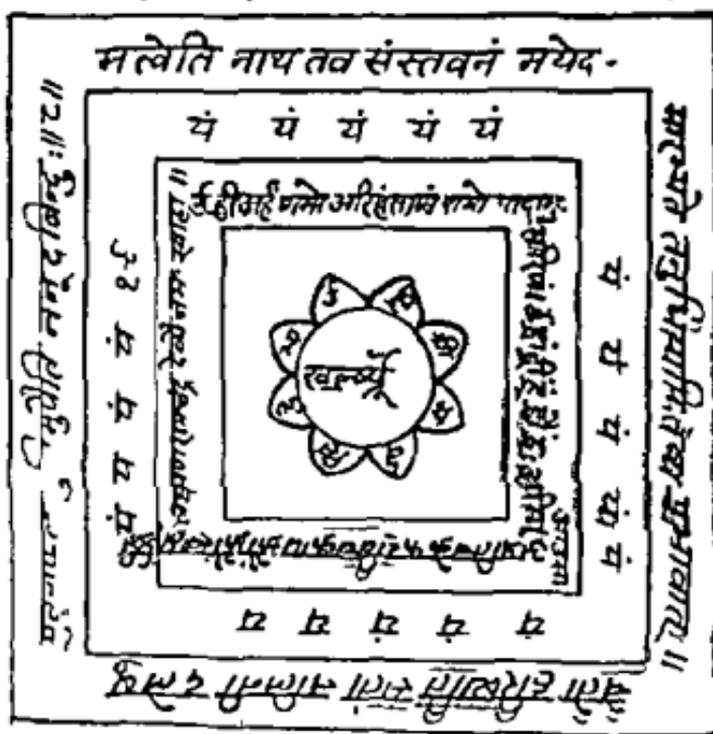
साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में बैठकर, रीठा के बीज की माला लेकर २१ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में मन्त्र का जप करें। यन्त्र को अपने समीप रखें। गुग्गुल, घृत तथा नमक की डली मिश्रित धूप का निर्धूम अग्नि में निक्षेप करे।

मन्त्र-सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय नमक की ७ डली लेकर उन्हें १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, उनके द्वारा किसी पीड़ित अंग को झाड़ा देने में पीड़ा दूर होती है। यन्त्र को अपने पास रखने से हर प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

—:०:—

अभीप्सित फलदायक

श्लोक—आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त दोषं
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि॥९॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो समिण्ण सोइन्द्राणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा। ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रः फट् स्वाहा। ॐ नमो ऋद्धये नमः।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं श्व्रौं रः रः ह ह. नमः स्वाहा। ॐ नमो भगवते जय यक्षाय ह्रीं हूं नमः स्वाहा।

साधन-विधि—उक्त मन्त्र द्वारा ४ ककड़ियों को १०८ बार अभिमन्त्रित करके चारो दिशाओं में फेंक देने से मार्ग कीलित हो जाता है तथा चोर आदि किसी प्रकार का भय नहीं रहता।

— ० —

कुकर-विष-निवारक

श्लोक—नात्यद्भुतं भुवन भूषण भूतनाथ
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्त ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किंवा
भूत्याश्रित य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र जन्मस्थान तो जन्मतो वा मनोत्कर्षं घृतावादिनोर्याना क्षांता भावे प्रत्यक्ष बुद्धान्मनो ह्म्ल्व्यूं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः श्रां श्रीं श्रूं श्रः सिद्ध बुद्ध कृतार्थो भव भव वषट् संपूर्णं स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं णमो शत्रु विनाशनाय जय पराजय उपसर्गं हराय नमः वषट् सम्पूर्णं स्वाहा।
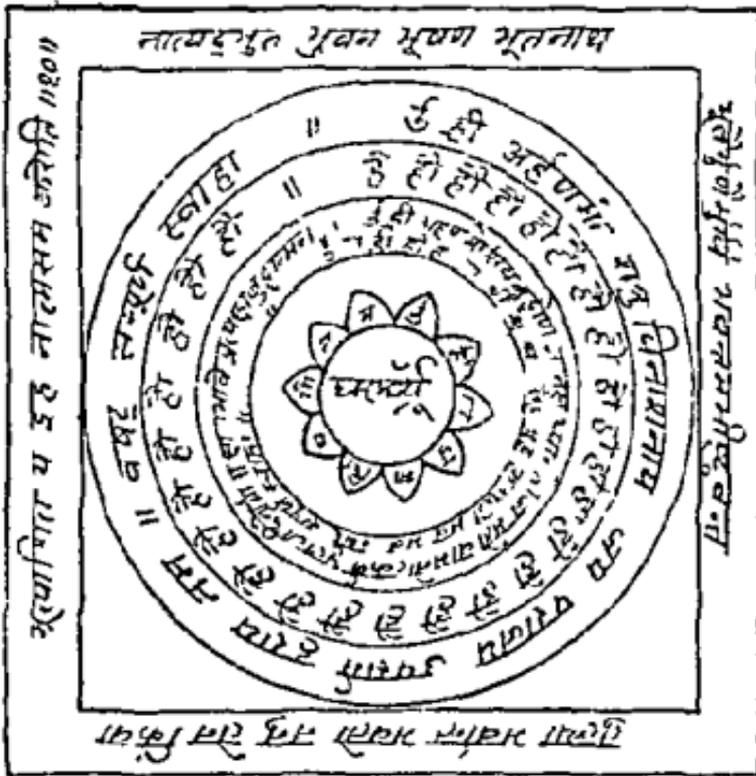
साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे पीले रग के आसन पर बैठे तथा पीले रग की माला लेकर ७ अथवा १० दिनो तक नित्य १०८ बार ऋद्धि-मन्त्र का जप करे। पीले रग के पुष्प चढाये तथा निर्धूम अग्नि मे कुन्दुरु मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रखे।

उक्त विधि से मन्त्र-सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय १ नमक की डली लेकर उसे १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, खिलाने से कुत्ता काटे का विष असर नही करता। यन्त्र को कुत्ता द्वारा काटे गये व्यक्ति के पास रखना चाहिए।

— ० —

आकर्षण कारक एव वाछापूरक

श्लोक—दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष विलोकनीय
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षु।
पीत्वा पय. शशिकर द्युति दुग्ध सिन्धो.
क्षारं जल जलनिधे रसितु क इच्छेत् ॥११॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमोपत्तेय बुद्धीण झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रां श्रीं कुमति निवारिण्यै महामायै नमः स्वाहा। ॐ नमो भगवते प्रसिद्ध रूपाय भक्ति युक्ताय सां सीं सौं ह्रां ह्रीं ह्रौं क्रौं झ्रौं नमः।

८४

साधन-विधि—पवित्र वस्त्र धारण कर, लाल रंग की माला हाथ में लेकर २१ दिनो तक नित्य १०८ बार मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम-अग्नि में कुन्दरू की धूप दें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय स्नान एवं पवित्र वस्त्र धारण कर, सफेद रंग की माला हाथ में लेकर, खड़े होकर १०८ बार मन्त्र का जप करें तथा यन्त्र को समीप रक्खें। धूप, दीप, नैवेद्य तथा फल से अर्चना करें। इसके प्रभाव से साध्य-व्यक्ति का आकर्षण होता है और वह समीप चला आता है।

—:०:—

हस्ति-मदविदारक एवं वांछित रूप दायक

श्लोक—यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैक ललामभूत ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो वोही बुद्धीण झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ आं आ अ अः सर्व राजा प्रजा मोहिनी सर्वजन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते अतुल बल पराक्रमाय आदीश्वर यक्षाधीष्ठाय ह्रीं ह्रीं नमः ।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं जिनधर्मचिन्ताय झ्रौं क्रौं र ह्रीं नमः ।

८५

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में लाल रंग के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठें तथा लाल रंग की माला लेकर ४२ दिन तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा दशांग धूप से निर्धूम-अग्नि में हवन करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से जब मन्त्र-सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकता के समय इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित-तैल हाथी को पिला देने से उसका मद उतर जाता है। प्रयोग के समय यन्त्र को अपने पास रखना चाहिए।

—:०:—

सम्पत्ति-दायक एवं शरीर-रक्षक

श्लोक—वक्त्रं क्व ते सुरनरोरग नेत्रहारि
निःशेष निर्जित जगत्त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलङ्क मलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डु पलाशकल्पम् ॥१३॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो ऋजुमदीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं हंसः ह्रौं ह्रां द्रां द्रीं द्रः मोहनी सर्वजनवश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ माना अष्ट सिद्धि क्लीं ह्रीं ह्म्ल्व्र्यूं युवताय नमः।

ॐ नमो भगवते सौभाग्य रूपाय ह्रीं नमः।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में बैठकर, पीली माला लेकर ७ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम-अग्नि में कुन्दरू की धूप दे। पृथ्वी पर शयन तथा दिन में एक बार आहार करें। यन्त्र को समीप रखे।

उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय ७ कंकड़ियाँ लेकर, उनमें से प्रत्येक को १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित

कर चारों दिशाओं में फेंक दें। इसके प्रभाव से मार्ग में किसी प्रकार का भय नहीं रहता तथा चोर चोरी नहीं कर पाता।

— o —

आधि-व्याधि-नाशक

श्लोक—सम्पूर्ण मण्डल शशाङ्क कलाकलाप
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवन तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं,
कस्तान् निवारयति सचरतो यथेष्टम् ॥१४॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो विपुल मदीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमो भगवती गुणवती महामानसी स्वाहा।
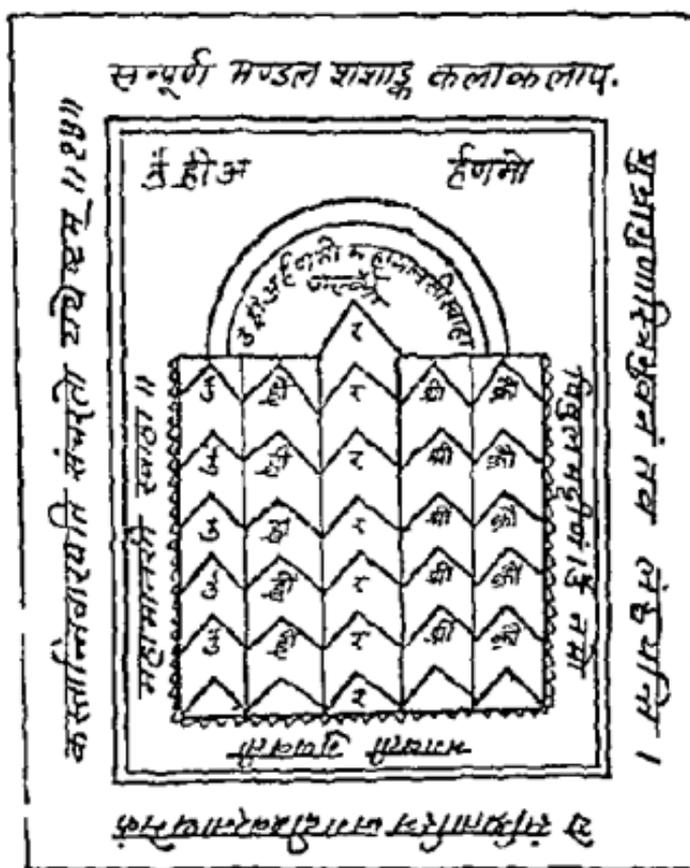
साधन-विधि—यन्त्र को समीप रखें तथा ७ कंकड़ियाँ लेकर प्रत्येक को उक्त मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करके चारों दिशाओं में फेंक दें।

इसके प्रभाव से व्याधि, शत्रु आदि का भय नहीं रहता। बाल रोग नष्ट होता है तथा लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

— o —

सम्मान-सौभाग्य सम्वर्द्धक

श्लोक—चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
नींतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्।
कल्पान्तकाल मरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो दश पुव्वीण झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमो भगवती गुणवती सुसीमा पृथ्वी वज्र शृंखला मानसी महामानसी स्वाहा।

ॐ नमो अचिंत्य बल पराक्रमाय सर्वार्थ काम रूपाय ह्रीं ह्रीं क्रों श्रीं नमः।
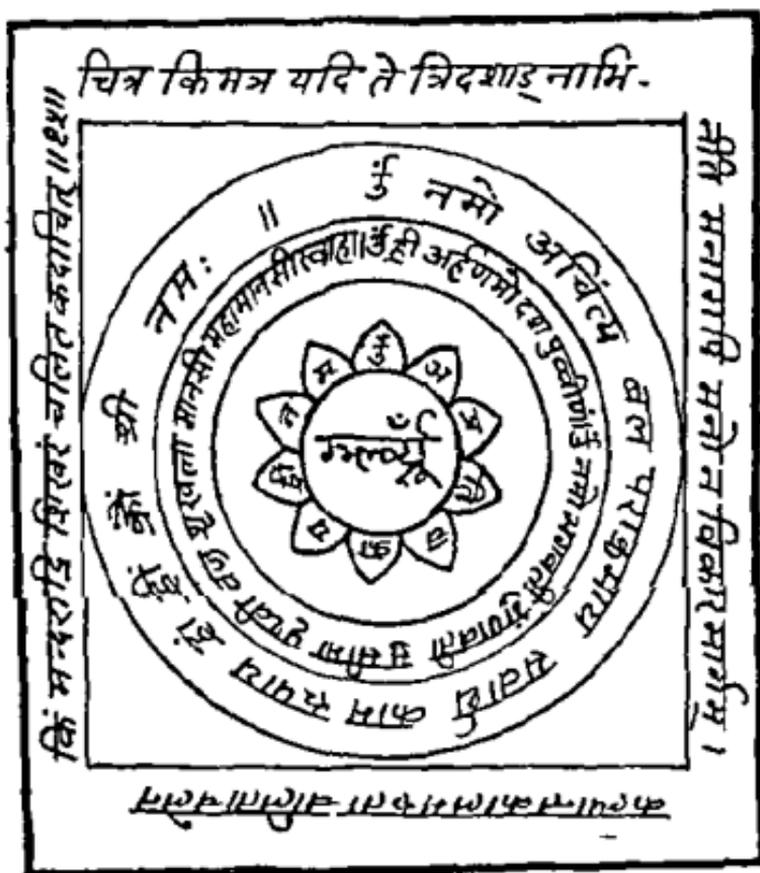
साधन-विधि—लाल रंग के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर तथा लाल रग की माला लेकर १४ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि में दशांग धूप का निक्षेप करें। भोजन दिन भर में केवल एक बार करें। यन्त्र को समीप रक्खे।

उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय तैल को २१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपने मुँह पर लगाने से राज-दरबार में सम्मान मिलता है तथा सौभाग्य एवं लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

—:०:—

सर्व-विजय दायक

श्लोक—निर्धूम वर्तिरपवर्जित तैलपूरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटी करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥१६॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो चउदसपुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमः सुमंगला सुसीमानाम देवी सर्वसमीहितार्थं सर्व वज्र शृंखलां कुरु कुरु स्वाहा।
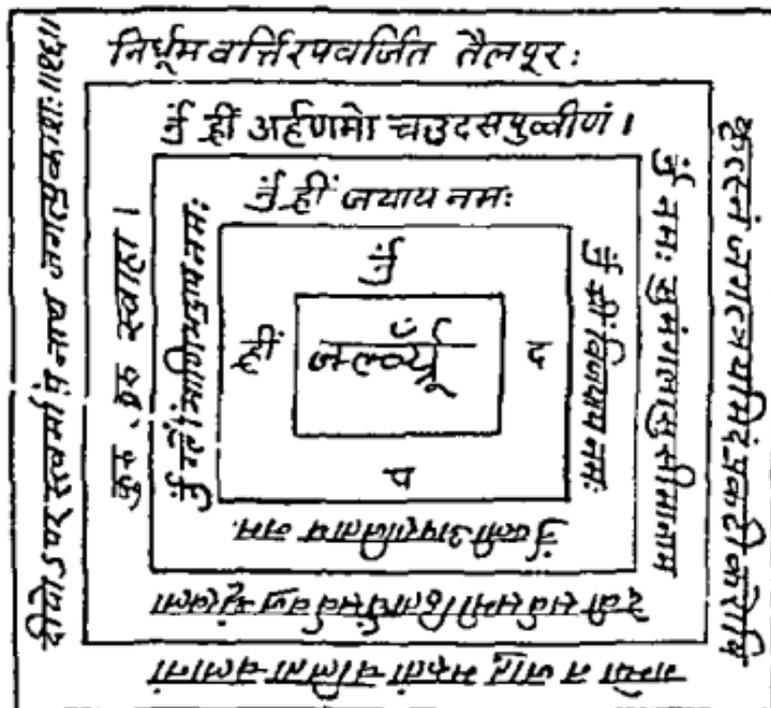
साधन-विधि—हरे रंग की माला लेकर ६ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि में कुन्दरू की धूप दें। यन्त्र को समीप रक्खें।

उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय १०८ बार मन्त्र को जप कर तथा यन्त्र को साथ लेकर राजदरबार में जाने से शत्रु का भय नहीं रहता। प्रतिपक्षी की हार होती है तथा स्वय को विजय मिलती है।

—: ० :—

सर्व-रोग निरोधक

श्लोक—नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर निरुद्ध महाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र लोके ॥१७॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठांग महाणिमित्त कुशलाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमो णमि ऊण अट्ठे मट्ठे क्षुद्र विघट्टे क्षुद्र पीडां जठर पीडां भंजय भंजय सर्व पीडा सर्व रोग निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमो अजित शत्रु पराजयं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ	न	मो	अ
जि	त	श	त्रु
प	रा	ज	यं
कु	रु २	स्वा	हा

साधन-विधि—सफेद रंग की माला लेकर ७ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋद्धि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि में चन्दन की धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को समीप रक्खें।

उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर अछूते जल को २१ बार अभिमन्त्रित करके रोगी को पिलाने से पेट की असह्य पीड़ा, वायु शूल, गोला आदि रोग दूर हो जाते हैं। यन्त्र को रोगी के पास रक्खें।

—:०:—

शत्रु-सैन्य स्तम्भक

श्लोक—नित्योदयं दलित मोह महान्धकारं
गम्यं न राहु वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प कान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्व शशाङ्क बिम्बम् ॥१८॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउयण यड्ढि पत्ताण झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते जय विजय मोहय मोहय स्तंभय स्तंभय स्वाहा।

ॐ नमो शास्त्रज्ञान बोधनाय परमर्द्धि प्राप्ति जयंकराय ह्रां ह्रीं श्रों श्रीं नमः। ॐ नमो भगवते शत्रुसैन्य निवारणाय य यं यं क्षुर विध्वंसनाय नमः। क्लीं ह्रीं नमः।
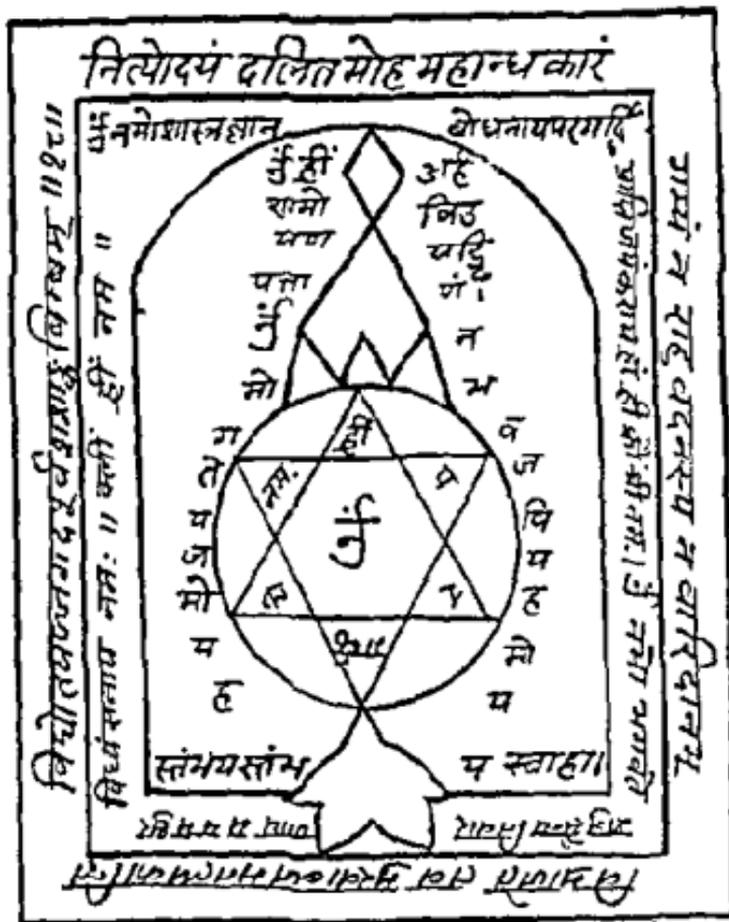
साधन-विधि—लाल रग की माला लेकर ७ दिनो तक नित्य १००० की सख्या मे मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि मे दशाग धूप का निक्षेप करे। दिन में केवल एक बार भोजन करे। यन्त्र को समीप रक्खे।

उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय १०८ बार मन्त्र का जप करने तथा यन्त्र को पास रखने से शत्रु की सेना का स्तम्भन होता है।

—:०:—

उच्चाटनादि रोधक

श्लोक—किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा
पुष्मन्मुखेन्दु दलितेषु तमस्सु नाथ
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके
कार्यं कियज्जल धरैर्जलभार नम्रैः ॥१६॥
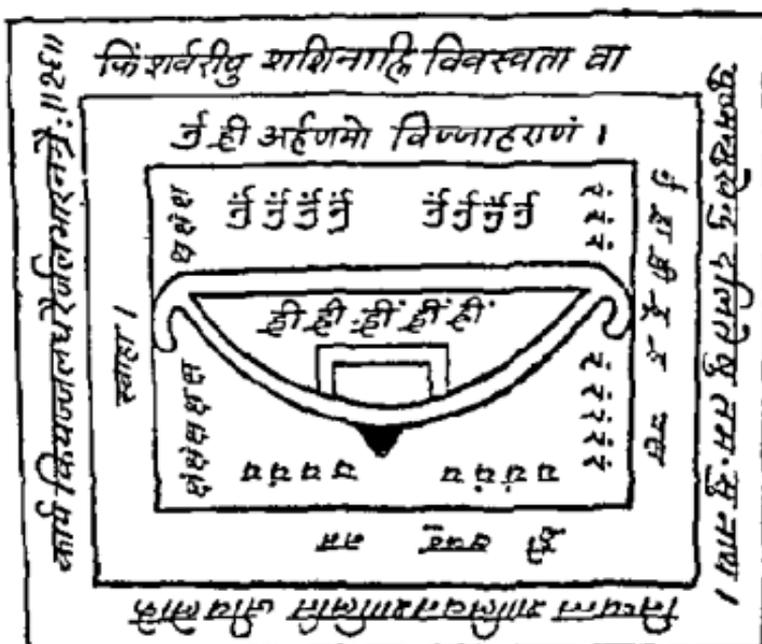
ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं ह्रौं ह्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रः यक्ष ह्रीं वषट् नमः स्वाहा।

साधन विधि—उक्त ऋद्धि-मन्त्र का १०८ बार जप करने तथा यन्त्र पास रखने से दूसरों के द्वारा किये गये मन्त्र, विद्या, जादू, टोना, मूठ आदि का असर नहीं होता तथा उच्चाटन का भय नहीं रहता।

—:०:—

सन्तान-सम्पत्ति-सौभाग्य प्रदायक

श्लोक—ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथामहत्त्वं
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाण ह्रौं ह्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रः शत्रु भय निवारणाय ठः ठः नमः स्वाहा।

ॐ नमो भगवते पुत्रार्थं सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा। ह्रीं नमः।

साधन-विधि—उक्त मन्त्र को १०८ बार जपने तथा यन्त्र को पास रखने से धन तथा सन्तान की प्राप्ति होती है। सौभाग्य एवं बुद्धि की वृद्धि होती है तथा विजय प्राप्त होती है।

—:०:—

सर्व सुख-सौभाग्य साधक

श्लोक—मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरे ऽपि ॥२१॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो पणसमणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ नमः श्री माणिभद्र जय विजय अपराजिते सर्वं सौभाग्यं सर्व सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते शत्रुभय निवारणाय नमः ।

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा

ॐ ह्रीं अर्हंणमो पण्णसमणाणं ।

क्षं क्षं क्षं क्षं क्षं क्षं क्षं

साधन-विधि—उक्त मन्त्र को ४२ दिनों तक नित्य १०८ बार जपने तथा यन्त्र को अपने पास रखने से सब लोग अपने अधीन रहते है तथा सुख-सौभाग्य की वृद्धि होती है ।

—:०:—

भूत-पिशाच-बाधा-निरोधक

श्लोक—स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वादिशो दधति भानि सहस्ररश्मि
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं झ्रौं झ्रौ नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ नमो श्री वीरेहिं जृंभय जृंभय मोहय मोहय स्तंभय स्तंभय अवधारणं कुरु कुरु स्वाहा ।

साधन-विधि—जिस व्यक्ति को डाकिनी, शाकिनी, भूत, पिशाच, चुडैल आदि लगे हो, उसे उक्त मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित हल्दी को गाँठ चबाने को दें तथा यन्त्र को गले में बाँध दें तो उक्त सभी दोष दूर हो जाते हैं।

—:o:—

प्रेत-बाधा-नाशक

श्लोक:—त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्यु
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः ॥२३॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी विसाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमो भगवती जयावती मम समीहितार्थं मोक्ष सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वं सिद्धाय श्रीं नमः।

९८

साधन-विधि—सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को १०८ बार जप कर अपने शरीर की रक्षा करें, तदुपरान्त जिस व्यक्ति को प्रेत-बाधा हो, उसे उक्त मन्त्र द्वारा झाड़ा दें तथा यन्त्र को समीप रक्खें तो सब प्रकार की प्रेत-बाधा दूर हो जाती है।

—:०:—

शिरोरोग-नाशक

श्लोक—त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्ग केतुम् ।
योगीश्वरं विदित योगमनेकमेकं
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठि विसाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—स्थावर जंगमं वाद्यकृतिमं सकल विर्षयद्भवतेः अप्रमणमिताये दृष्टिविषयान् मुनीन् ते वद्धमाणस्वामी सर्वं हितं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः असि आउसा झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
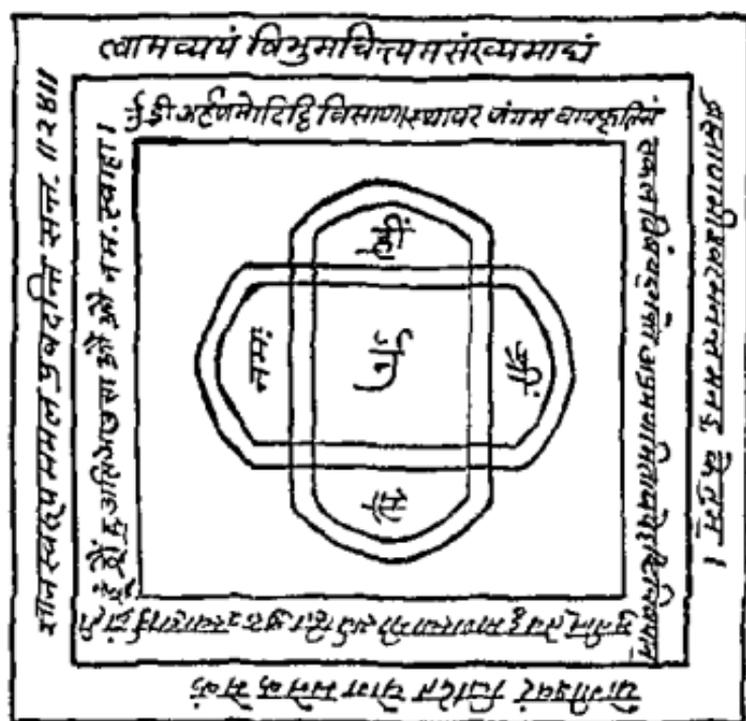
साधन-विधि—इस मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित की गयी राख को दुखते हुए सिर पर लगाने तथा यन्त्र को रोगी-व्यक्ति के पास रखने से सभी शिरोरोग दूर हो जाते हैं। मन्त्र का प्रतिदिन १०८ बार जप अवश्य करते रहना चाहिए।

—:०:—

दृष्टि-दोष-निवारक

श्लोक—बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्
त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रय शङ्करत्वात् ।
धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं झ्रौं झ्रौं नम. स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

ॐ नमो भगवते जय विजय अपराजिते सर्व सौभाग्य सर्व सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।
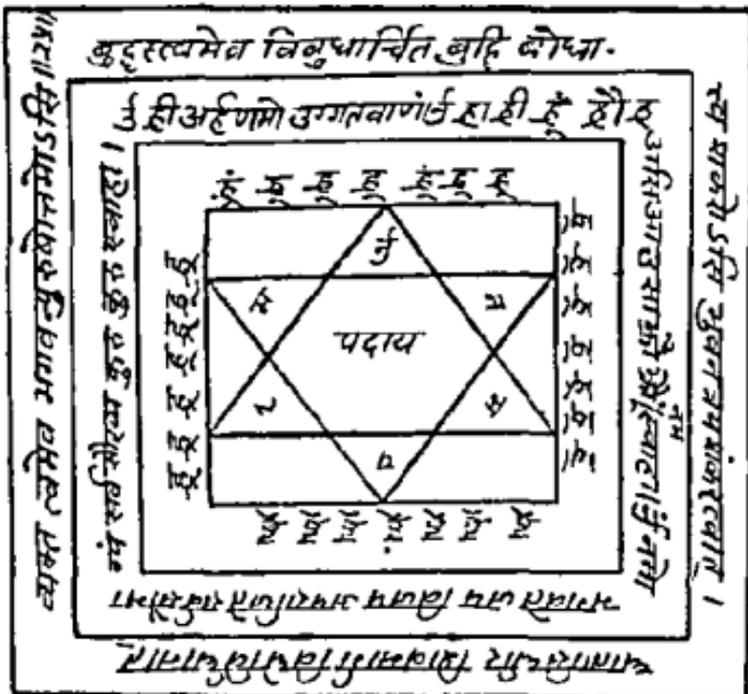
साधन-विधि—उक्त मन्त्र की इच्छित संख्या में आराधना करने तथा यन्त्र को अपने पास रखने से दृष्टि-दोष (नजर) उतर जाता है तथा आराधक पर अग्नि का प्रभाव भी नहीं होता ।

—:०:—

आधासीसी-पीड़ा विनाशक

श्लोक—तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति हराय नाथ
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन भवोदधि शोषणाय ॥२६॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो दित्त तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रूं ह्रूं परजन शांति व्यवहारे जयं कुरु कुरु स्वाहा।
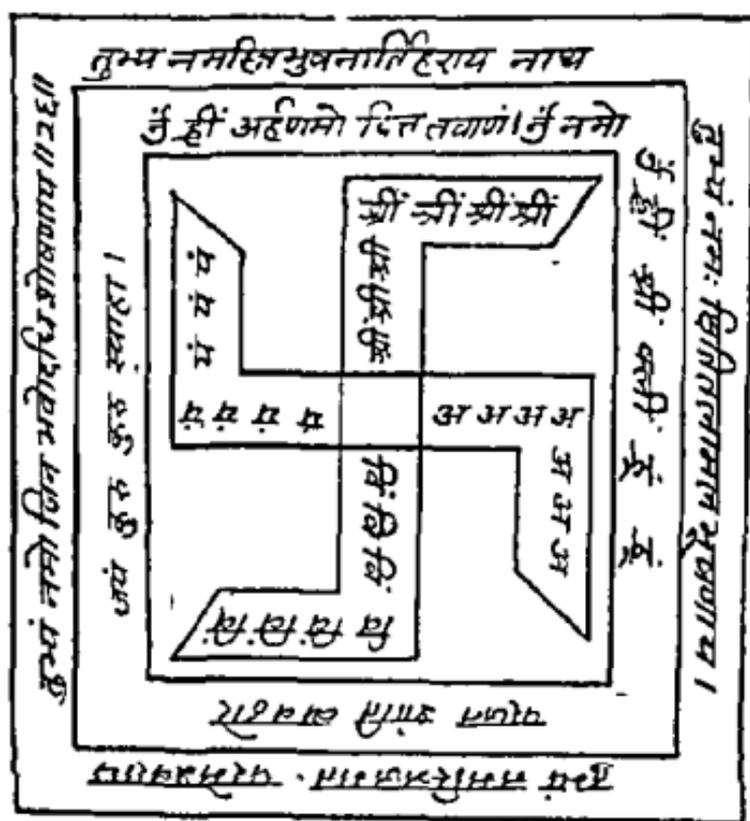
साधन-विधि—उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित तैल को सिर पर लगाने तथा यन्त्र को पास रखने से आधासीसी आदि सब प्रकार के सिर-दर्द दूर हो जाते हैं तथा अभिमन्त्रित तैल की मालिश करने एवं अभिमन्त्रित दूध को पिलाने से प्रसूता स्त्री को शीघ्र प्रसव होता है।

—:०:—

शत्रु-नाशक

श्लोक—को विस्मयो ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश।
दोषैरुपात्त विविधाश्रय जातगर्वैः
स्वप्नान्तरे ऽपि न कदाचिदपीक्षितो ऽसि ॥२७॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं श्रौं श्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी चक्रेण अनुकूलं साधय साधय शत्रूनुन्मूलय उन्मूलय स्वाहा।

ॐ नमो भगवते सर्वार्थ सिद्धाय सुखाय ह्रीं श्रीं नमः।

ॐ	न	मो	भ	ग
व	स्वा	य	ह्रीं	घ
च	ऊ	इ	ङ	च
ङ	ङ	ङ	ङ	श

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै- स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश। दोषैरुपात्त विविधाश्रय जातगर्वैः स्वप्नान्तरे ऽपि न कदाचिदपीक्षितो ऽसि॥२७॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं। ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी चक्रेण ... उन्मूलय स्वाहा॥

१००

साधन-विधि—काले रंग की माला पर २१ दिनों तक नित्य १००० की संख्या मे मन्त्र का जप करने, काली मिर्च का होम करने तथा दिन मे केवल एक बार अलोना (विना नमक) का भोजन करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। यन्त्र को अपने समीप रखना चाहिए।

उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर यन्त्र को पास रखने से शत्रु कोई हानि नही पहुँचा पाता।

—: o :—

सर्व-मनोरथ पूरक

श्लोक—उच्चैरशोकतरु संश्रितमुन्मयूख
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त तमो वितान
बिम्बं रवेरिव पयोधर पार्श्ववर्ति ।।२८।।

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते जय विजय जृंभय जृंभय मोहय मोहय सर्व सिद्धि संपत्ति सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।
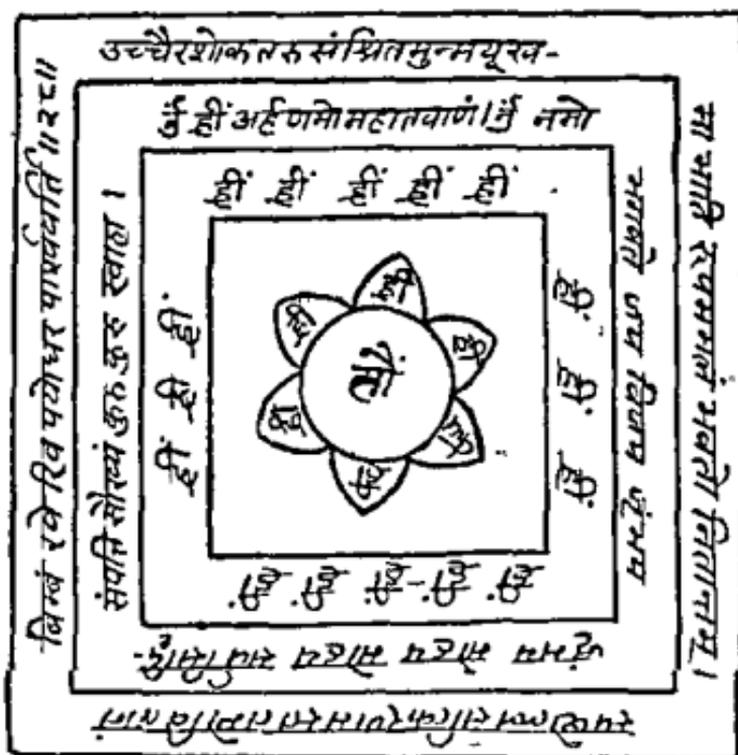
साधन-विधि—उक्त मन्त्र की नित्य आराधना करने तथा यन्त्र को अपने पास रखने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं। सुख, विजय तथा व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति होती है । सभी मनोरथ पूर्ण होते है ।

—:०:—

नेत्र-पीड़ा निवारक

श्लोक—सिंहासने मणिमयूख शिखा विचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद् विलसदंशुलतावितानं
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ णमो णमि ऊणपास विसहर फुलिंग मतो विसहर नामरकारमसो सव्वसिद्धिमीहे इह समरंताणमण्णे जागईकप्पवुमच्च सव्वसिद्धि ॐ नमः स्वाहा ।
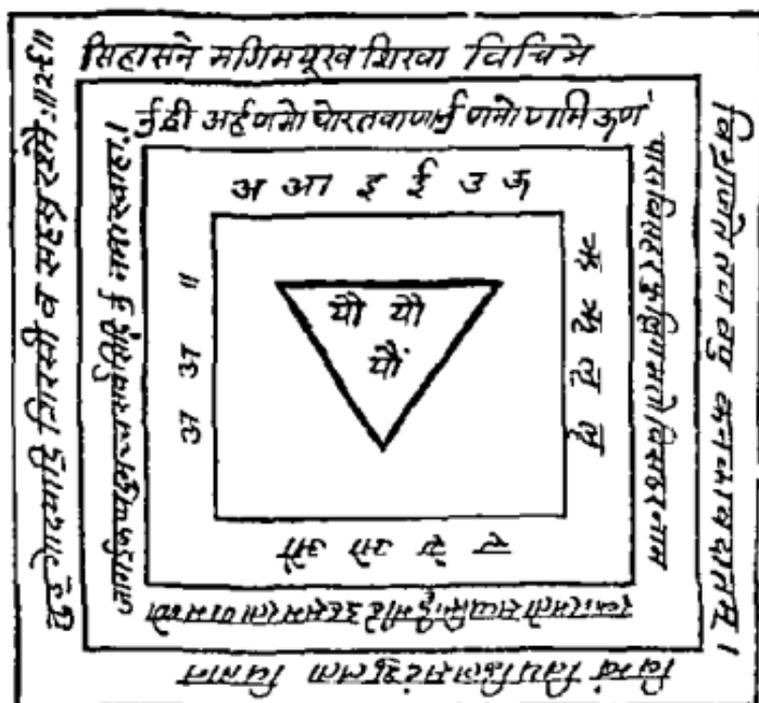
साधन-विधि—उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित पानी पिलाने तथा यन्त्र को पास रखने से दुखती हुई आंखें अच्छी हो जाती हैं तथा बिच्छू का विष उतर जाता है ।

—:०:—

शत्रु-स्तम्भन कारक

श्लोक—कुन्दावदात चलचामर चारु शोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्क शुचिनिर्झर वारिधार
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ नमो अट्टे मट्टे क्षुद्र विघट्टे क्षुद्रान् स्तंभय स्तंभय रक्षां कुरु कुरु स्वाहा ।
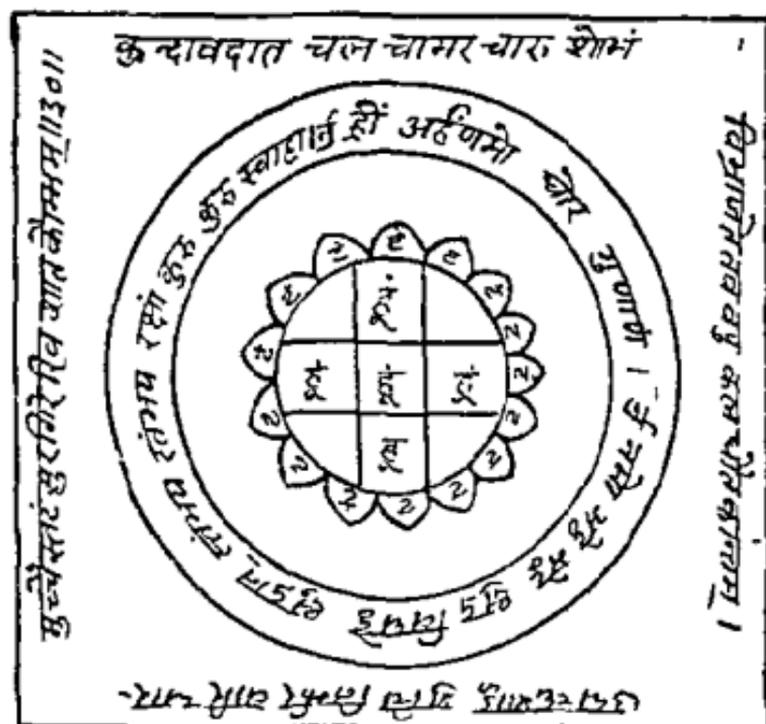
साधन-विधि—उक्त ऋद्धि-मन्त्र की आराधना करने तथा यन्त्र को पास रखने से शत्रु का स्तम्भन होता है तथा मार्ग में चोर, सिंह आदि का भय नहीं रहता ।

—:०:—

राजसम्मान-प्रदायक

श्लोक—छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-
मुच्चैःस्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफल प्रकर जाल विवृद्ध शोभं
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणपरक्कमाणं क्ष्रों क्ष्रों नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ उवसग्गहरं पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं विसहर विसणि-र्णासिणं मंगल कल्लाण आवासं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ।

साधन-विधि—उक्त मन्त्र की आराधना तथा यन्त्र को पास रखने से राजदरबार में सम्मान मिलता है तथा दाद-खाज आदि के कष्ट दूर हो जाते हैं ।

— ० —

संग्रहणी-निवारक

श्लोक—गम्भीरतार रव पूरित विग्विभाग
स्त्रैलोक्य लोक शुभसङ्गम भूतिदक्षः।
सद्धर्मराज जयघोषण घोषकः सन्
खे दुन्दुभिर्ध्वनित ते यशसः प्रवादी ॥३२॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबमचारिणं क्ष्रौं क्ष्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वदोष निवारण कुरु कुरु स्वाहा। सर्वसिद्धिवृद्धि वांछां कुरु कुरु स्वाहा।
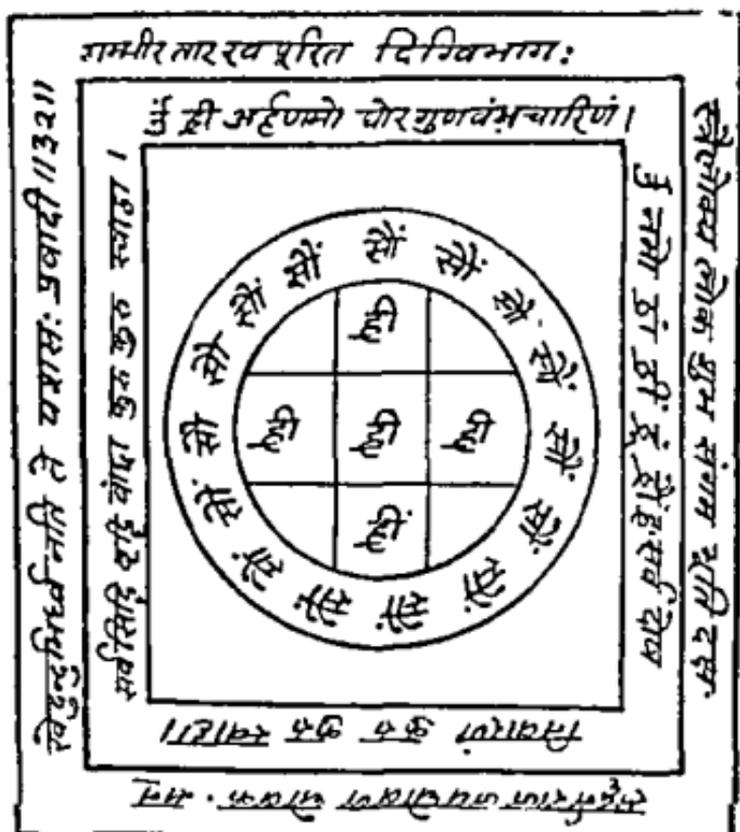
साधन-विधि—उक्त मन्त्र द्वारा क्वारी कन्या के हाथ से कते हुए सूत को १०८ बार अभिमन्त्रित कर, उसे रोगी-व्यक्ति के गले में बाँधने तथा यन्त्र को पास रखने से सग्रहणी आदि सभी उदर-विकार नष्ट हो जाते हैं।

—:०:—

सर्व-ज्वर संहारक

श्लोक—मन्दार सुन्दर न मेरु सुपारिजात
सन्तानकादि कुसुमोत्कर वृष्टिरुद्धा।
गन्धोदबिन्दुशुभ मन्दमरुत्प्रपाता
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ।।३३।।

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ध्यानसिद्धि परम योगीश्वराय नमो नमः स्वाहा।

२०६

साधन-विधि—क्वारी कन्या के हाथ से काते गये सूत को उक्त ऋद्धि-मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित कर, उसका गंडा बाँधने, झाड़ा देने तथा यन्त्र पास में रखने से इकतरा, तिजारी आदि सभी ज्वर दूर हो जाते है। इस क्रिया में घृत तथा गुग्गुल मिश्रित धूप का निर्धूम-अग्नि में निक्षेप करना चाहिए।

—:०:—

गर्भ-संरक्षक

श्लोक—शुम्भत्प्रभा वलय भूरि विभा विभोस्ते
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद्दिवाकर निरन्तर भूरि संख्या
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ॥३४॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लो सहि पत्ताणं ह्रौं ह्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रौं पद्मावत्यै देव्यै नमो नमः स्वाहा ।

ॐ प च य म ह्रां ह्रीं नमः ।
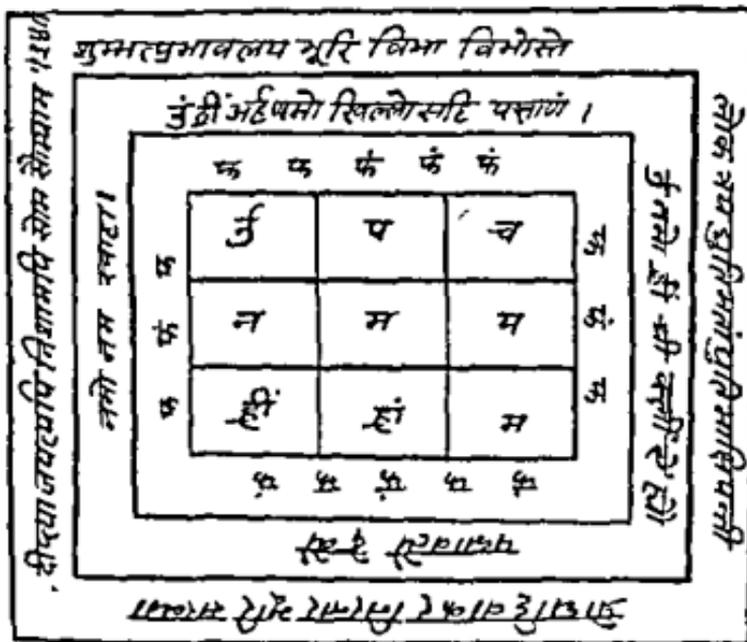
साधन-विधि—कुसूमी रग से रगे हुए कच्चे सूत को उक्त ऋद्धि-मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित कर, उसे गुग्गुल की धूप देकर गर्भवती स्त्री के गले मे बांध देने तथा यन्त्र को पास रखने से असमय मे गर्भ नही गिरता ।

—:०:—

ईति-भीति-निवारक

श्लोक—स्वर्गापवर्गगममार्ग विमार्गणेष्टः
सद्धर्म तत्त्व कथनैक पटुस्त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व
भाषास्वभाव परिणाम गुणैः प्रयोज्यः ॥३५॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लो सहिपत्ता णं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमो जय विजय अपराजिते महालक्ष्मी अमृत वर्षिणी अमृत स्राविणी अमृतं भव भव वषट् सुधायै स्वाहा।

ॐ नमो गजगमन सर्वकल्याण मूर्तये रक्ष रक्ष नमः स्वाहा।
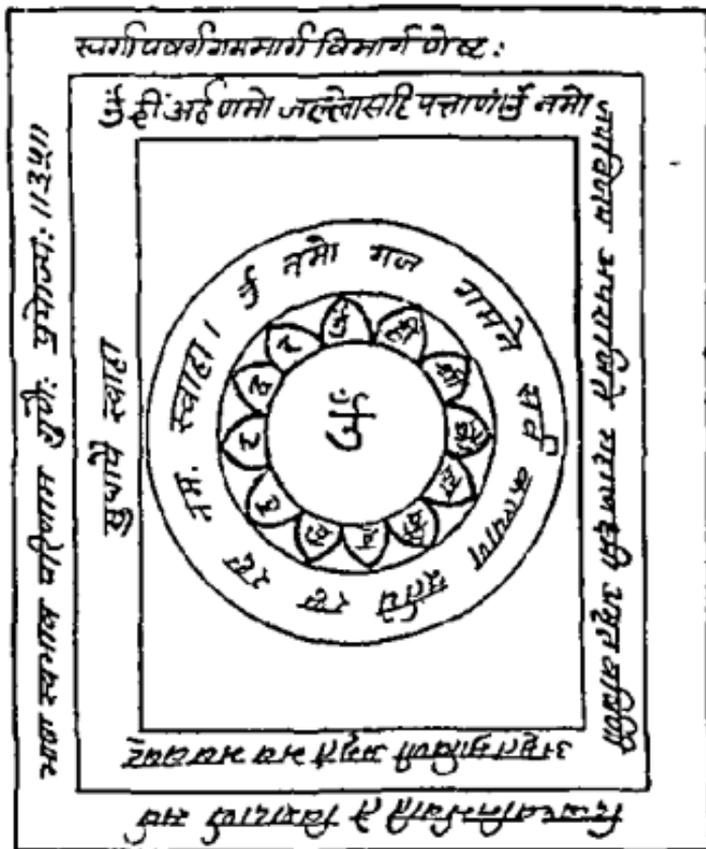
साधन-विधि—इस मन्त्र की आराधना स्थानक (मन्दिर जी) मे करें तथा यन्त्र का पूजन करें। मन्त्र की आराधना करने तथा यन्त्र को पास रखने से दुर्भिक्ष, चोरी, मरी, ईति-भीति, मिरगी, राज-भय आदि सभी कष्टों से छुटकारा मिलता है।

—:०:—

लक्ष्मी-प्रदायक

श्लोक—उन्निद्रहेमनवपङ्कज पुञ्जकान्ति
पर्युल्लसन्नखमयूख शिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ।।३६।।

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पो सहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं कलि कुड दंड स्वामिन् आगच्छ आत्म मंत्रान् आकर्षय आकर्षय आत्ममंत्रान् रक्ष रक्ष परमंत्रान् छिंद छिंद समीहित कुरु कुरु स्वाहा ।

उन्निद्रहेम नव पङ्कज पुञ्जकान्ती

ॐ ह्रीं अर्हणमो विप्पोसहिपत्ताणं ह्रीं श्रीं

ॐ	ह्रां	ह्रीं	श्रीं
म	ह्रां	ह्रीं	क्लीं
च	ह्रः	ह्रूं	ह्रैं
म	य	र	ह

पर्युल्लसन्नखमयूख शिखाभिरामौ

पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ।।३६।।

१०८

साधन-विधि—इस यन्त्र को लाल पुष्पों के द्वारा १२००० की संख्या मे जप करें, साथ ही यन्त्र का पूजन भी करें । इस ऋद्धि-मन्त्र की आराधना करने तथा यन्त्र को पास रखने से सम्पत्ति का लाभ होता है ।

—:०:—

दुष्टता-प्रतिरोधक

श्लोक—इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतोग्रहगणस्य विकासिनोऽपि ॥३७॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वो सहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते अप्रतिचक्रे ऐं क्लीं ब्लूं ॐ ह्रीं मनोवांछित सिद्ध्यैः नमो नमः। अप्रति चक्रे ह्रीं ठः ठः स्वाहा।
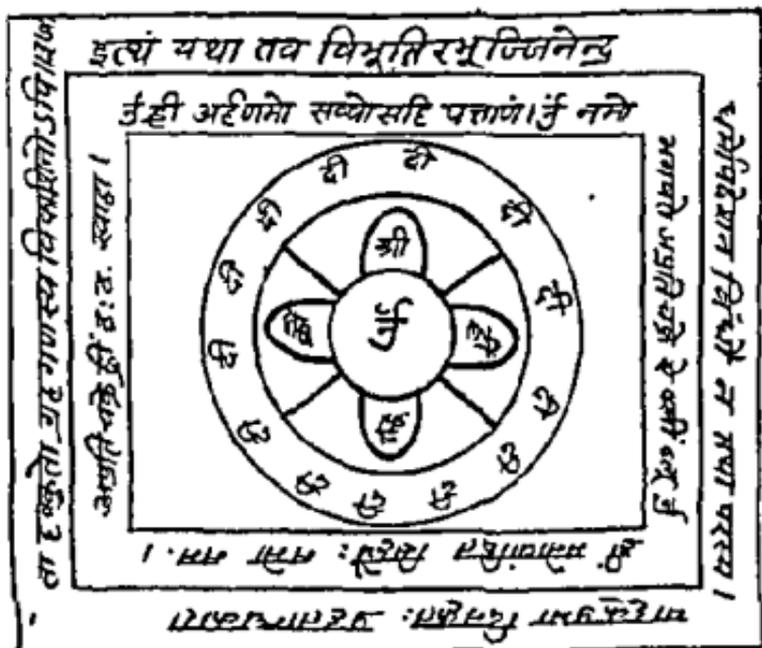
साधन-विधि—उक्त ऋद्धि-मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित जल के छींटे मुँह पर मारने तथा यन्त्र को पास रखने से दुर्जन व्यक्ति वशीभूत होता है तथा उसकी जिह्वा स्तम्भित हो जाती है।

—:०:—

हस्ति-मद-भंजक तथा सम्पत्ति वर्द्धक

श्लोक—श्च्योतन्मदाविल विलोल कपोलमूल
मत्तभ्रमद् भ्रमर नाद विवृद्ध कोपम्।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्त
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणोबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते अष्ट महानाग कुलोच्चाटिनी कालदंष्ट्र-मृतकोत्थापिनी परमंत्र प्रणाशिनि देवि शासन देवते ह्रीं नमो नमः स्वाहा।

ॐ ह्रीं शत्रु विजय रणाग्रे ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रः ह्रीं नमो नमः स्वाहा।

साधन-विधि—उक्त ऋद्धि-मन्त्र का जप करने तथा यन्त्र पास मे रखने से धन का लाभ तथा हाथी वश मे होता है।

—:०:—

सिंह-शक्ति-निवारक

श्लोक—भिन्नेभकुम्भ गलदुज्ज्वल शोणिताक्त
मुक्ताफल प्रकर भूषित भूमिभागः।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३६॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचोवलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

ॐ नमो एषु वृत्तेषु वर्द्धमान तव भयहरं वृत्तिवर्णायेषु मन्त्राः पुनः स्मर्तव्याः अतोना परमंत्र निवेदनाय नमः स्वाहा।

साधन-विधि—उक्त ऋद्धि-मन्त्र का जप करने तथा यन्त्र को पास रखने से सर्प तथा सिंह आदि का भय नहीं रहता तथा भूला हुआ मार्ग मिल जाता है अर्थात् मार्ग में भटकना नहीं पड़ता।

—: ० :—

सर्वाग्नि-शामक

श्लोक—कल्पान्तकाल पवनोद्धत वह्निकल्पं
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हंणमो कायबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां ह्रीं अग्निमुपशमनं शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ सौं ह्रीं क्रौं क्लीं सुदरपाय नमः।

साधन-विधि—उक्त ऋद्धि-मन्त्र द्वारा २१ वार अभिमन्त्रित जल को घर में चारो ओर छिड़क देने तथा यन्त्र को पास रखने से अग्नि का भय मिट जाता है।

—:०:—

भुजंग-भय-नाशक

श्लोक—रक्तेक्षण समद कोकिल कण्ठ नीलं
क्रोधोद्धत फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क
स्त्वन्नाम नागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीण झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ नमो श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जलदेवि कमले पद्महृदनिवासिनि पद्मोपरिसस्थिते सिद्धि देहि मनोवाञ्छितं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं आदि देवाय ह्रीं नमः ।

साधन-विधि—उक्त ऋद्धि मन्त्र के जप तथा यन्त्र को पास रखने से राजदरबार में सम्मान प्राप्त होता है। कांसे के कटोरे में पानी भरकर उसे उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके सर्प-दंशित व्यक्ति को पिला देने तथा मन्त्र का झाड़ा देने से सर्प का विष उतर जाता है।

—:०:—

युद्ध-भय-विनाशक

श्लोक— वल्गत्तुरङ्ग गजगर्जित भीमनाद

माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।

उद्यद्दिवाकरमयूख शिखापविद्धं

त्वत्कीर्तनात्तम इवाशुभिदामुपैति ॥४२॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ नमो नमि ऊण विसहर विसप्रणासण रोग सोक दोस ग्रह कप्पद्दुमच्चजाई सुहणामगहणसयल सुहदे ॐ नमः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं बलपराक्रमाय नमः ।

वल्गत्तुरङ्ग गजगर्जित भीमनाद

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवाणं ॐ नमो

ॐ	ह्रीं	श्रीं	ब
प	रा	क्र	मा
य	न	म	ः

साधन-विधि—उक्त ऋद्धि-मन्त्र की आराधना करते रहने तथा यन्त्र को पास रखने से युद्ध का भय नहीं रहता ।

—:०:—

सर्व शान्ति दाता

श्लोक—कुन्ताग्रभिन्न गजशोणित वारिवाह
वेगावतार तरणातुर योधभीमे ।
युद्धे जयं विजित दुर्जयजेयपक्षा
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ।।४३।।

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी जिनशासन सेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रवविनाशिनी धर्मशांतिकारिणी नमः कुरु कुरु स्वाहा ।
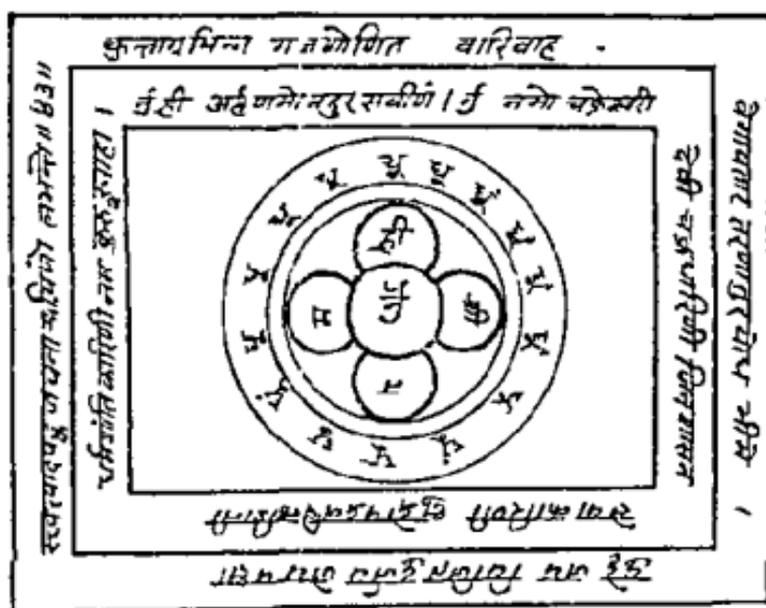
साधन-विधि—उक्त ऋद्धि-मन्त्र की आराधना तथा यन्त्र का पूजन करते रहने से सब प्रकार का भय दूर होता है, युद्ध मे शस्त्रादि का आघात नही लगता तथा राजदरबार मे धन का लाभ होता है ।

—:०:—

सर्वापत्ति-निवारक

श्लोक—अम्भोनिधौ क्षुभितभीषण नक्र चक्र
पाठीनपीट भयदोल्वण वाडवाग्नौ।
रङ्गत्तरङ्ग शिखरस्थित यान पात्रा
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥४४॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमियसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमो रावणाय विभीषणाय कुम्भकरणाय लंकाधिपतये महाबल पराक्रमाय मनश्चिंतितं कुरु कुरु स्वाहा।

साधन-विधि—उक्त ऋद्धि-मन्त्र की आराधना करने तथा यन्त्र को पास रखने से सभी विपत्तियाँ दूर होती हैं। समुद्र में तूफान का भय नहीं रहता तथा समुद्र-यात्रा सकुशल सम्पन्न होती है।

—: o :—
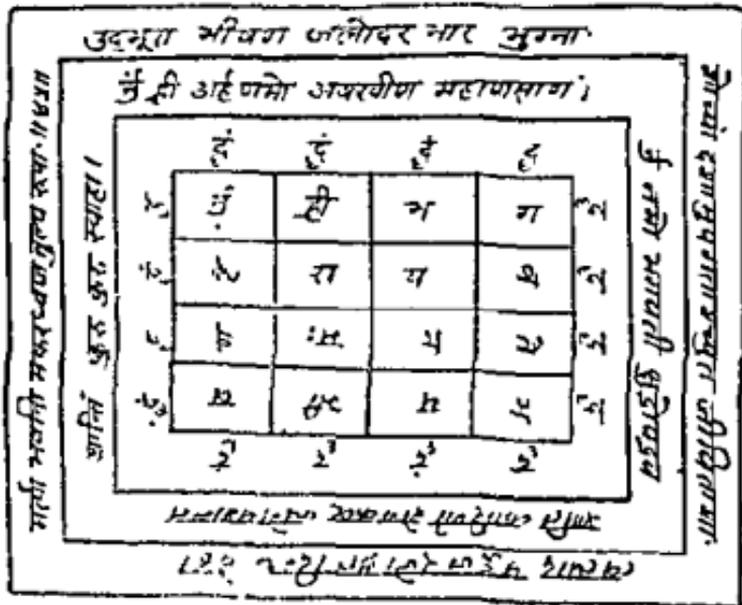
बन्धन-मुक्ति-दायक

श्लोक—आपादकण्ठमुरुशृङ्खल वेष्टिताङ्गा
गाढं बृहन्निगड कोटि निघृष्टजङ्घाः
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ।।४६।।

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ नमो ह्रां ह्रीं श्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ठः ठः जः जः क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षः स्वाहा ।
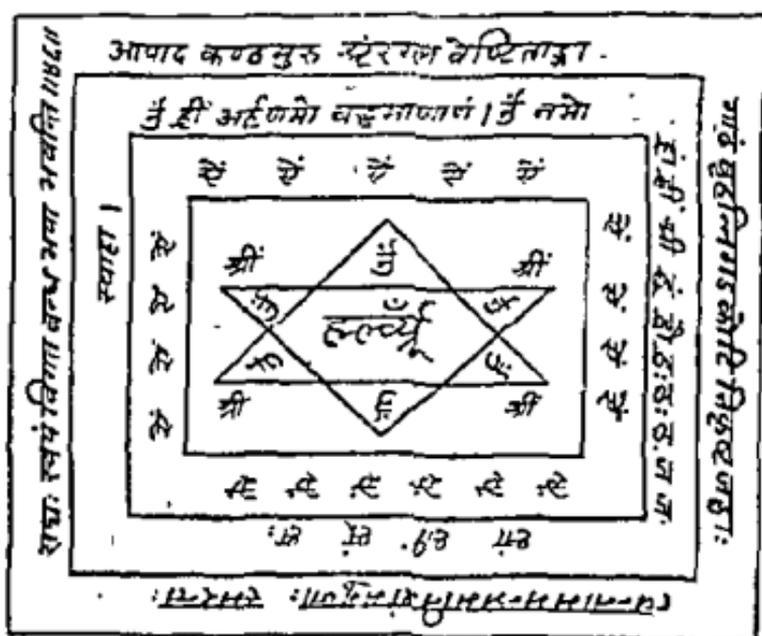
साधन-विधि—उक्त ऋद्धि-मन्त्र का १०८ बार जप करते रहने तथा यन्त्र को अपने पास रखकर उसका तीनों समय पूजन करते रहने से बन्धन (कारागार) से छुटकारा मिलता है तथा राजा आदि का भय दूर होता है ।

—:०:—

अस्त्र-शस्त्रादि-निरोधक

श्लोक—मत्तद्विपेन्द्र मृगराज दवानला हि
संग्राम वारिधि महोदर बन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४७॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो णमो लोए सव्वं सिद्धायदाणं वड्ढमाणाण झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यक्ष श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते उन्मत्तभयहराय नमः ।

साधन-विधि—उक्त ऋद्धि-मन्त्र की आराधना करके शत्रु पर चढ़ाई करने वाले को विजय प्राप्त होती है, शत्रु वशीभूत होता है तथा उसके अस्त्रादि निष्फल हो जाते हैं एवं शस्त्रादि से घाव भी नहीं लगता ।

— ० —

सर्व-सिद्धि दायक

श्लोक—स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां
भक्त्यामया रुचिरवर्ण विचित्र पुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं
त मानतुङ्ग मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४८॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदिमहावीर वड्ढमाणाणं बुद्धि-रिसीणं लोए सव्व साहूण झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
ॐ णमो बंह्मचारिणे अट्ठारह सहस्ससीलांग रथधारिणे नमः स्वाहा ।
ॐ ह्रीं लक्ष्मी प्राप्त्यं नमः ।
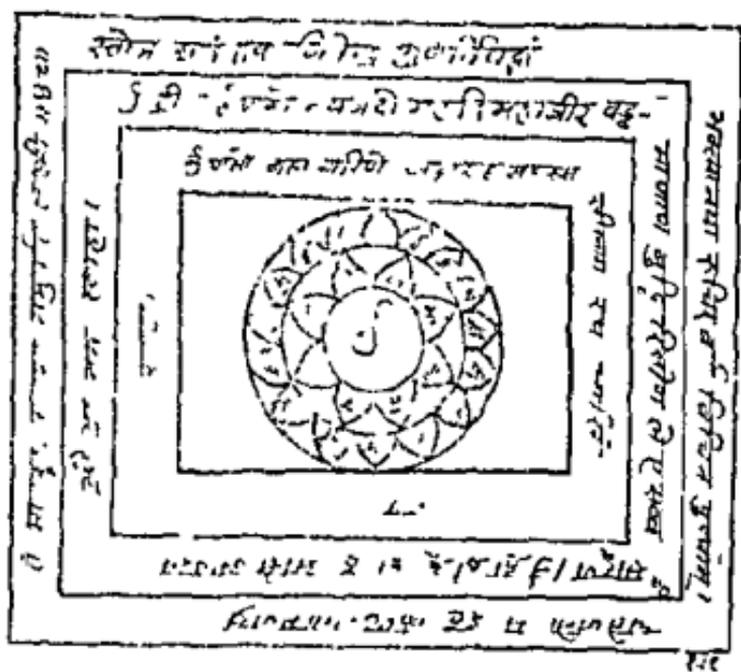
साधन-विधि—उक्त मन्त्र का ४६ दिनों तक नित्य १०८ की संख्या में जप करने तथा यन्त्र को पास रखने से मनोवाञ्छित कार्यों की सिद्धि होती है तथा जिसे वशीभूत करना हो, उसका चिन्तवन करने से वह वश में हो जाता है ।

— ० —

४ ऋषिमण्डल-यन्त्र-साधन

'ऋषि मण्डल-यन्त्र' की पूजा-साधना का विस्तृत विधान 'ऋषि मन्डल मन्त्र कल्प' में उपलब्ध है, जो प्रकाशित है। यहाँ केवल संक्षिप्त विधि प्रस्तुत की जा रही है। इस विधि से यन्त्र-साधना करने से साधक की मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं तथा सातवें भव (जन्म) में मोक्ष पद प्राप्त होता है। विधि इस प्रकार है--

५ | स्वयम्भू स्तोत्र

'स्वयम्भू स्तोत्र' की रचना श्री समन्तभद्र आचार्य ने की थी। आचाय जी का जन्म दूसरी शताब्दी मे हुआ था। ये काची नगर के निवासी तथा अपने समय के दिग्गज नैयायिक तथा जैन-सिद्धान्त के प्रकाण्ड मर्मज्ञ थे।

अनुश्रुति है—एक बार भस्मक-व्याधि रोग से ग्रस्त होकर ये चरित्र-भ्रष्ट हो, देश-देशान्तरो मे भ्रमण करते हुए काशी पुरी मे पहुँचे। वहाँ शिव-मन्दिर मे नैवेद्य बडी मात्रा मे चढता था। आचार्य समतभद्र युक्ति-बल से उसे कपाट के भीतर रहकर स्वय खा जाया करते थे। नैवेद्य चढ़ाने वाले समझते थे कि उसे भगवान् शिव ही ग्रहण कर लेते हैं। कुछ समय बाद जब रोग शान्त हो गया और नैवेद्य बचने लगा तो ब्राह्मणो को आचार्य की चालाकी पता चल गयी। उन्हे यह भी ज्ञात हो गया कि समन्तभद्र स्वय जैनाचार्य हैं, फलत उन्होने काशी-नरेश से इस बारे मे शिकायत की। तब काशी-नरेश ने आचार्यजी से कहा कि वे शिव-प्रतिमा को नमस्कार कर, जैन-धर्म को त्याग दें। राजाज्ञा सुनकर आचार्य जी ने कुछ दिनो का समय माँगा तथा उसी अवधि मे 'स्वयम्भू स्तोत्र' की रचना की। इस स्तोत्र की रचना हो जाने पर आचायजी के समक्ष एक यक्षिणी प्रकट हुई और उसने कहा कि जिस समय आप इस स्तोत्र का पाठ करके शिव-प्रतिमा को नमस्कार करेगे, उस समय वहाँ चन्द्रप्रभु तीर्थकर की प्रतिमा प्रकट हो जायेगी, फलत आपका यश विस्तीर्ण होगा।

नियत समय पर जब काशी-नरेश तथा ब्राह्मण-वर्ग ने आचार्यजी से पुन शिव-प्रतिमा को नमस्कार करने के लिए कहा तो आचार्यजी ने वहाँ स्वरचित स्वयम्भू स्तोत्र का पाठ प्रारम्भ किया जिसका पहला वाक्य 'वन्देऽभिवन्द्य' उच्चारण करते ही शिव-प्रतिमा चन्द्रप्रभु की प्रतिमा के रूप मे परिवर्तित हो गयी। इस आश्चर्य को देखकर सब लोग हतप्रभ रह गये। तदुपरान्त ब्राह्मणो के साथ आचार्यजी का शास्त्रार्थ हुआ, उसमे भी वे विजयी रहे। अन्त मे, राजा शिवकोटि सहित अनेक लोग आचायजी का शिष्यत्व ग्रहण कर जैन धर्मानुयायी बन गये।

'स्वयम्भू स्तोत्र' के अतिरिक्त आचार्य समन्तभद्र ने और भी अनेक ग्रन्थों की रचना की। जिनमें से अब इस स्तोत्र के अतिरिक्त देवागम स्तोत्र या आप्तमीमांसा, युक्त्यनुशासन, जिन शतक एवं रत्नकरण्ड-श्रावकाचार ही उपलब्ध हैं।

'स्वयम्भू स्तोत्र' में २४ तीर्थंकरों की अलग-अलग स्तुति की गयी है। इस स्तोत्र का नित्यपाठ करने से साधक की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं तथा किसी भी मन्त्र-तन्त्र साधन से पूर्व हम स्तोत्र का पाठ करने से उसमें शीघ्र सफलता मिलती है। जिज्ञासु पाठकों के लिए इस चमत्कारी स्तोत्र को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. श्री आदिनाथ स्तुतिः

स्वयम्भुवा भूतहितेन भूतले समञ्जसज्ञानविभूतिचक्षुषा।
विराजितं येन विधुन्वता तमः, क्षपाकरेणेव गुणोत्करैः करैः ॥१॥
प्रजापतिर्यः प्रथमं जिजीविषूः शशास कृष्यादिषु कर्मसु प्रजाः।
प्रबुद्धतत्त्वः पुनरद्भुतोदयो ममत्वतो निर्विविदे विदांवरः ॥२॥
विहाय यः सागरवारिवाससं वधूमिवेमां वसुधावधूं सतीम्।
मुमुक्षुरिक्ष्वाकुकुलादिरात्मवान् प्रभुः प्रवव्राज सहिष्णुरच्युतः ॥३॥
स्वदोषमूलं स्वसमाधितेजसा निनाय यो निर्दयभस्मसात्क्रियाम्।
जगाद तत्त्वं जगतेऽर्थिनेऽञ्जसा बभूव च ब्रह्मपदामृतेश्वरः ॥४॥
स विश्वचक्षुर्वृषभोऽर्चितः सतां समग्रविद्यात्मवपुर्निरंजनः।
पुनातु चेतो मम नाभिनन्दनो जिनो जितक्षुल्लकवादिशासनः ॥५॥

२. श्री अजितनाथ स्तुतिः

यस्य प्रभावात् त्रिदिवच्युतस्य क्रीडास्वपि क्षीबमुखारविन्दः।
अजेयशक्तिर्भुवि बन्धुवर्गश्चकार नामाजित इत्यवन्ध्यम् ॥६॥
अद्यापि यस्याजितशासनस्य सतां प्रणेतुः प्रतिमङ्गलार्थम्।
प्रगृह्यते नाम परं पवित्रं स्वसिद्धिकामेन जनेन लोके ॥७॥
यः प्रादुरासीत्प्रभुशक्तिभूम्ना भव्याशयालीनकलङ्कशान्त्यै।
महामुनिर्मुक्तघनोपदेहो यथारविन्दाभ्युदयाय भास्वान् ॥८॥
येन प्रणीतं पृथु धर्मतीर्थं ज्येष्ठं जनाः प्राप्य जयन्ति दुःखम्।
गाङ्गं ह्रदं चन्दनपङ्कशीतं गजप्रवेका इव धर्मतप्ताः ॥९॥
स ब्रह्मनिष्ठः सममित्रशत्रुर्विद्याविनिर्वान्तकषायदोषः।
लब्धात्मलक्ष्मीरजितोऽजितात्मा जिनः श्रियं मे भगवान् विधत्ताम् ॥१०॥

३. श्री संभव जिन स्तुतिः

त्वं शम्भव संभवतर्षरोगैः सन्तप्यमानस्य जनस्य लोके ।
आसीरिहाकस्मिक एव वैद्यो वैद्यो यथानाथरुजां प्रशान्त्यै ॥११॥
अनित्यमत्राणमहंक्रियाभिः प्रसक्तमिथ्याध्यवसायदोषम् ।
इदं जगज्जन्मजरान्तकार्तं निरञ्जनां शान्तिमजीगमस्त्वम् ॥१२॥
शतह्रदोन्मेषचलं हि सौख्यं तृष्णामयाप्यायनमात्रहेतुः ।
तृष्णाभिवृद्धिश्च तपत्यजस्रं तापस्तदायासयतीत्यवादीः ॥१३॥
बन्धश्च मोक्षश्च तयोश्च हेतुः बद्धश्च मुक्तश्च फलं च मुक्तेः ।
स्याद्वादिनो नाथ तवैव युक्तं नैकान्तदृष्टेस्त्वमतोऽसि शास्ता ॥१४॥
शक्रोऽप्यशक्तस्तव पुण्यकीर्तेः स्तुत्यां प्रवृत्तः किमु मादृशोऽज्ञः ।
तथापि भक्त्या स्तुतपादपद्मो ममार्य देयाः शिवतातिमुच्चैः ॥१५॥

४. श्री अभिनन्दन जिन स्तुतिः

गुणाभिनन्दादभिनन्दनो भवान् दयावधूं क्षान्तिसखीमशिश्रयत् ।
समाधितन्त्रस्तदुपोपपत्तये द्वयेन नैर्ग्रन्थ्यगुणेन चायुजत् ॥१६॥
अचेतने तत्कृतबन्धजेऽपि ममेदमित्याभिनिवेशकग्रहात् ।
प्रभङ्गुरे स्थावरनिश्चयेन च क्षतं जगत्तत्त्वमजिग्रहद्भवान् ॥१७॥
क्षुधादिदुःखप्रतिकारतः स्थितिर्न चेन्द्रियार्थप्रभवाल्पसौख्यतः ।
ततो गुणो नास्ति च देहदेहिनोरितीदमित्थं भगवान् व्यजिज्ञपत् ॥१८॥
जनोऽतिलोलोऽप्यनुबन्धदोषतो भयादकार्येष्विह न प्रवर्तते ।
इहाप्यमुत्राप्यनुबन्धदोषवित्कथं सुखे संसजतीति चाब्रवीत् ॥१९॥
स चानुबन्धोऽस्य जनस्य तापकृत्तृषोऽभिवृद्धिः सुखतो न च स्थितिः ।
इति प्रभो लोकहितं यतो मतं ततो भवानेव गतिः सतां मतः ॥२०॥

५. श्री सुमति तीर्थंकर स्तुति

अन्वर्थसंज्ञः सुमतिर्मुनिस्त्वं स्वयं मतं येन सुयुक्तिनीतम् ।
यतश्च शेषेषु मतेषु नास्ति सर्वक्रियाकारकतत्त्वसिद्धिः ॥२१॥
अनेकमेकं च तदेव तत्त्वं भेदान्वयज्ञानमिदं हि सत्यम् ।
मृषोपचारोऽन्यतरस्य लोपे तच्छेषलोपोऽपि ततोनुपाख्यम् ॥२२॥
सतः कथंचित्तदसत्त्वशक्तिः खे नास्ति पुष्पं तरुषु प्रसिद्धम् ।
सर्वस्वभावच्युतमप्रमाणं स्ववाग्विरुद्धं तव दृष्टितोऽन्यत् ॥२३॥
न सर्वथा नित्यमुदेत्यपैति न च क्रियाकारकमत्र युक्तम् ।
नैवासतो जन्म सतो न नाशो दीपस्तमःपुद्गलभावतोऽस्ति ॥२४॥

विधिर्निषेधश्च कथंचिदिष्टौ विवक्षया मुख्यगुणव्यवस्था ।
इति प्रणीतिः सुमतेस्तवेयं मतिप्रवेकः स्तुवतोऽस्तु नाथ ॥२५॥

६. श्री पद्मप्रभ जिन स्तुतिः

पद्मप्रभः पद्मपलाशलेश्यः पद्मालयालिङ्गितचारुमूर्त्तिः ।
बभौ भवान् भव्यपयोरुहाणां पद्माकराणामिव पद्मबन्धुः ॥२६॥
बभार पद्मां च सरस्वतीं च भवान्पुरस्तात्प्रतिमुक्तिलक्ष्म्याः ।
सरस्वतीमेव समग्रशोभां सर्वज्ञलक्ष्मीं ज्वलितां विमुक्तः ॥२७॥
शरीररश्मिप्रसरः प्रभोस्ते बालार्करश्मिच्छविरालिलेप ।
नरामराकीर्णसभां प्रभावच्छैलस्य पद्माभमणेः स्वसानुम् ॥२८॥
नभस्तलं पल्लवयन्निव त्वं सहस्रपत्राम्बुजगर्भचारैः ।
पादाम्बुजैः पातितमारदर्पो भूमौ प्रजानां विजहर्थ भूत्यै ॥२९॥
गुणाम्बुधेर्विप्रुषमप्यजस्रं नाखण्डलस्तोतुमलं तवर्षे ।
प्रागेव मादृक्किमुतातिभक्तिर्मां बालमालापयतीदमित्थम् ॥३०॥

७. श्री सुपार्श्व जिन स्तुति

स्वास्थ्यं यदात्यन्तिकमेष पुंसां स्वार्थो न भोगः परिभङ्गुरात्मा ।
तृषोऽनुषंगान्न च तापशान्तिरितीदमाख्यद्भगवान् सुपार्श्वः ॥३१॥
अजङ्गमं जंगमनेययन्त्रं यथा तथा जीवधृतं शरीरम् ।
बीभत्सु पूति क्षयि तापकं च स्नेहो वृथात्रेति हितं त्वमाख्यः ॥३२॥
अलंघ्यशक्तिर्भवितव्यतेयं हेतुद्वयाविष्कृतकार्यलिङ्गा ।
अनीश्वरो जन्तुरहं क्रियार्त्तः संहत्य कार्येष्विति साध्ववादीः ॥३३॥
बिभेति मृत्योर्न ततोऽस्ति मोक्षो नित्यं शिवं वाञ्छति नास्य लाभः ।
तथापि बालो भयकामवश्यो वृथा स्वयं तप्यत इत्यवादीः ॥३४॥
सर्वस्य तत्त्वस्य भवान्प्रमाता मातेव बालस्य हितानुशास्ता ।
गुणावलोकस्य जनस्य नेता मयापि भक्त्या परिणूयसेऽद्य ॥३५॥

८. श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकर स्तुतिः

चन्द्रप्रभं चन्द्रमरीचिगौरं चन्द्रं द्वितीयं जगतीव कान्तम् ।
वन्देऽभिवन्द्यं महतामृषीन्द्रं जिनं जितस्वान्तकषायबन्धम् ॥३६॥
यस्याङ्गलक्ष्मीपरिवेषभिन्नं तमस्तमोरेरिव रश्मिभिन्नम् ।
ननाश बाह्यं बहुमानसं च ध्यानप्रदीपातिशयेन भिन्नम् ॥३७॥
स्वपक्षसौस्थित्यमदावलिप्ता वाक्सिंहनादैर्विमदा बभूवुः ।
प्रवादिनो यस्य मदार्द्रगण्डा गजा यथा केशरिणो निनादैः ॥३८॥

यः सर्वलोके परमेष्ठिशायाः पदं बभूवाद्भुतकर्मतेजाः ।
अनन्तधामाक्षरविश्वचक्षुः समन्तदुःखक्षयशासनश्च ॥३९॥
स चन्द्रमा भव्यकुमुद्वतीनां विपन्नदोषाभ्रकलङ्कलेपः ।
व्याकोशवाङ्न्यायमयूखमालः पूयात् पवित्रो भगवान्मनो मे ॥४०॥

६. श्री पुष्पदंत तीर्थंकर स्तुतिः

एकान्तदृष्टिप्रतिषेधि तत्त्वं प्रमाणसिद्धं तदतत्स्वभावम् ।
त्वया प्रणीतं सुविधे स्वधाम्ना नैतत्समालीढपदं त्वदन्यैः ॥४१॥
तदेव च स्यान्न तदेव च स्यात्तथा प्रतीतेस्तव तत्कथंचित् ।
नात्यन्तमन्यत्वमनन्यता च विधेर्निषेधस्य च शून्यदोषात् ॥४२॥
नित्यं तदेवेदमिति प्रतीतेर्न नित्यमन्यत्प्रतिपत्तिसिद्धेः ।
न तद्विरुद्धं बहिरन्तरङ्गनिमित्तनैमित्तकयोगतस्ते ॥४३॥
अनेकमेकं च पदस्य वाच्यं वृक्षा इति प्रत्ययवत्प्रकृत्या ।
आकांक्षिणः स्यादिति वै निपातो गुणानपेक्षेऽनियमेऽपवादः ॥४४॥
गुणप्रधानार्थमिदं हि वाक्यं जिनस्य ते तद् द्विषतामपथ्यम् ।
ततोऽभिवन्द्यं जगदीश्वराणां ममापि साधोस्तव पादपद्मम् ॥४५॥

१०. श्री शीतलनाथ स्तुति

न शीतलाश्चन्दनचन्द्ररश्मयो न गाङ्गमम्भो न च हारयष्टयः ।
यथा मुनेस्तेऽनघवाक्यरश्मयः शमाम्बुगर्भाः शिशिरा विपश्चिताम् ॥४६॥
सुखाभिलाषानलदाहमूर्च्छितं मनो निजं ज्ञानमयामृताम्बुभिः ।
व्यदिध्यपस्त्वं विषदाहमोहितं यथा भिषग्मन्त्रगुणैः स्वविग्रहं ॥४७॥
स्वजीविते कामसुखे च तृष्णया दिवा श्रमार्ता निशि शेरते प्रजाः ।
त्वमार्य्य नक्तंदिवमप्रमत्तवानजागरेवात्मविशुद्धवर्त्मनि ॥४८॥
अपत्यवित्तोत्तरलोकतृष्णया तपस्विनः केचन कर्म कुर्वते ।
भवान्पुनर्जन्मजराजिहासया त्रयीं प्रवृत्तिं शमधीरवारुणत् ॥४६॥
त्वमुत्तमज्योतिरजः क्व निर्वृतः क्व ते परे बुद्धिलवोद्धवक्षताः ।
ततः स्वनिःश्रेयसभावनापरैर्बुधप्रवेकैर्जिनशीतलेड्यसे ॥५०॥

११. श्री श्रेयांश जिन स्तुतिः

श्रेयान् जिनः श्रेयसि वर्त्मनीमाः श्रेयः प्रजाः शासदजेयवाक्यः ।
भवांश्चकाशे भुवनत्रयेऽस्मिन्नेको यथावीतघनो विवस्वान् ॥५१॥
विधिर्विषक्तप्रतिषेधरूपः प्रमाणमत्रान्यतरत्प्रधानम् ।
गुणोऽपरो मुख्यनियामहेतुर्नयः स दृष्टान्तसमर्थनस्ते ॥५२॥

विवक्षितो मुख्य इतीष्यतेऽन्यो गुणो विवक्षो न निरात्मकस्ते ।
तथारिमित्रानुभयादिशक्तिर्द्वयावधिः कार्य्यकरं हि वस्तु ॥५३॥
दृष्टान्तसिद्धावुभयोर्विवादे साध्यं प्रसिद्ध्येन्न तु तादृगस्ति ।
यत्सर्वथैकान्तनियामदृष्टं त्वदीयदृष्टिर्विभवत्यशेषे ॥५४॥
एकान्तदृष्टिप्रतिषेधसिद्धिर्न्यायेषुभिर्मोहरिपुं निरस्य ।
असिस्म कैवल्यविभूतिसम्राट् ततस्त्वमर्हन्नसि मे स्तवार्हः ॥५५॥

१२. श्री वासुपूज्य स्तुतिः

शिवासु पूज्योऽभ्युदयक्रियासु त्वं वासुपूज्यस्त्रिदशेन्द्रपूज्यः ।
मयापि पूज्योऽल्पधियामुनीन्द्र दीपार्चिषा किं तपनो न पूज्यः ॥५६॥
न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे न निन्दया नाथ विवान्तवैरे ।
तथापि ते पुण्यगुणस्मृतिर्नः पुनातु चित्तं दुरिताञ्जनेभ्यः ॥५७॥
पूज्यं जिनं त्वार्चयतो जनस्य सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ ।
दोषाय नालं कणिका विषस्य न दूषिका शीतशिवाम्बुराशौ ॥५८॥
यद्वस्तु बाह्यं गुणदोषसूतेर्निमित्तमभ्यन्तरमूलहेतोः ।
अध्यात्मवृत्तस्य तदङ्गभूतमभ्यन्तरं केवलमप्यलं ते ॥५९॥
बाह्येतरोपाधिसमग्रतेयं कार्येषु ते द्रव्यगतः स्वभावः ।
नैवान्यथा मोक्षविधिश्च पुंसां तेनाभिवन्द्यस्त्वमृषिर्बुधानाम् ॥६०॥

१३. श्री विमलनाथ स्तुतिः

य एव नित्यक्षणिकादयो नया मिथोऽनपेक्षाः स्वपरप्रणाशिनः ।
त एव तत्त्वं विमलस्य ते मुनेः परस्परेक्षाः स्वपरोपकारिणः ॥६१॥
यथैकशः कारकमर्थसिद्धये समीक्ष्य शेषं स्वसहायकारकम् ।
तथैव सामान्यविशेषमातृका नयास्तवेष्टा गुणमुख्यकल्पतः ॥६२॥
परस्परेक्षान्वयभेदलिङ्गतः प्रसिद्धसामान्यविशेषयोस्तव ।
समग्रतास्ति स्वपरावभासकं यथा प्रमाणं भुवि बुद्धिलक्षणम् ॥६३॥
विशेष्यवाच्यस्य विशेषणं वचो यतो विशेष्यं विनियम्यते च यत् ।
तयोश्च सामान्यमतिप्रसज्यते विवक्षितात्स्यादिति तेऽन्यवर्जनम् ॥६४॥
नयास्तव स्यात्पदसत्यलाञ्छिता रसोपविद्धा इव लोहधातवः ।
भवन्त्यभिप्रेतगुणा यतस्ततो भवन्तमार्याः प्रणता हितैषिणः ॥६५॥

१४. अथ अनन्तनाथ स्तुतिः

अनन्तदोषाशयविग्रहो ग्रहो विषङ्गवान्मोहमयश्चिरं हृदि ।
यतो जितस्तत्त्वरुचौ प्रसीदता त्वया ततो भूर्भगवाननन्तजित् ॥६६॥

१७. श्री कुन्थुनाथ स्तुतिः

कुंथुप्रभृत्यखिलसत्त्वदयैकतानः कुंथुर्जिनो ज्वरजरामरणोपशान्त्यै ।
त्वं धर्मचक्रमिह वर्त्तयसिस्मभूतये भूत्वापुरा क्षितिपतीश्वरचक्रपाणिः ॥८१॥

तृष्णार्चिषः परिदहन्ति न शान्तिरासा-
मिष्टेन्द्रियार्थविभवैः परिवृद्धिरेव ।
स्थित्यैव कायपरितापहरं निमित्त—
मित्यात्मवान्विषयसौख्यपराङ्मुखोऽभूत् ॥८२॥

बाह्यं तपः परमदुश्चरमाचरंस्त्व-
माध्यात्मिकस्य तपसः परिबृंहणार्थम् ।
ध्यानं निरस्य कलुषद्वयमुत्तरस्मिन्
ध्यानद्वये ववृतिषेऽतिशयोपपन्ने ॥८३॥

हुत्वा स्वकर्मकटुकप्रकृतिश्चतस्रो
रत्नत्रयातिशयतेजसि जातवीर्यः ।
विभ्राजिषे सकलवेदविधेर्विनेता
व्यभ्रे यथा वियति दीप्तरुचिर्विवस्वान् ॥८४॥

यस्मान्मुनीन्द्र तव लोकपितामहाद्या
विद्याविभूतिकणिकामपि नाप्नुवन्ति ।
तस्माद्भवन्तमजमप्रतिमेयमार्याः
स्तुत्यं स्तुवन्ति सुधियः स्वहितैकतानाः ॥८५॥

१८. श्री अरहनाथ स्तुतिः

गुणस्तोकं सदुल्लंघ्य तद्बहुत्वकथा स्तुतिः ।
आनन्त्यात्ते गुणा वक्तुमशक्यास्त्वयि सा कथम् ॥८६॥

तथापि ते मुनीन्द्रस्य यतो नामापि कीर्तितम् ।
पुनाति पुण्यकीर्तेर्नस्ततो ब्रूयाम किञ्चन ॥८७॥

लक्ष्मीविभवसर्वस्वं मुमुक्षोश्चक्रलाञ्छनम् ।
साम्राज्यं सार्वभौमं ते जरत्तृणमिवाभवत् ॥८८॥

तव रूपस्य सौन्दर्यं दृष्ट्वा तृप्तिमनापिवान् ।
द्वचक्षः शक्रः सहस्राक्षो बभूव बहुविस्मयः ॥८९॥

मोहरूपो रिपुः पापः कषायभटसाधनः ।
दृष्टिसम्पदुपेक्षास्त्रैस्त्वया धीर पराजितः ॥९०॥

कन्दर्पस्योद्धुरो दर्पस्त्रैलोक्यविजयार्जितः ।
ह्रेपयामास तं धीरे त्वयि प्रतिहतोदयः ॥९१॥

कषायनाम्नां द्विषतां प्रमाथिनामशेषयन्नाम भवानशेषवित् ।
विशोषणं मन्मथदुर्मदामयं समाधिभैषज्यगुणैर्व्यलीनयत् ॥६७॥
परिश्रमाम्बुर्भयवीचिमालिनी त्वया स्वतृष्णासरिदार्यशोषिता ।
असंगधर्मार्कगभस्तितेजसा परं ततो निर्वृतिधाम तावकम् ॥६८॥
सुहृत्त्वयि श्रीसुभगत्वमश्नुते द्विषन् त्वयि प्रत्ययवत्प्रलीयते ।
भवानुदासीनतमस्तयोरपि प्रभो परं चित्रमिदं तवेहितम् ॥६९॥
त्वमीदृशस्तादृश इत्ययं मम प्रलापलेशोऽल्पमतेर्महामुने ।
अशेषमाहात्म्यमनीरयन्नपि शिवाय संस्पर्श इवामृताम्बुधेः ॥७०॥

१५. श्री धर्मनाथ स्तुतिः

धर्मतीर्थमनघं प्रवर्त्तयन् धर्म इत्यनुमतः सतां भवान् ।
कर्मकक्षमदहत्तपोऽग्निभिः शर्म शाश्वतमवाप शङ्कर. ॥७१॥
देवमानवनिकायसत्तमै रेजिषे परिवृतो वृतो बुधैः ।
तारकापरिवृतोऽतिपुष्कलो व्योमनीव शशलाञ्छनोऽमलः ॥७२॥
प्रातिहार्यविभवैः परिष्कृतो देहतोऽपि विरतो भवानभूत् ।
मोक्षमार्गमशिषन्नरामराभापि शासनफलैषणातुरः ॥७३॥
कायवाक्यमनसां प्रवृत्तयो नाऽभवस्तव मुनेश्चिकीर्षया ।
नासमीक्ष्य भवतः प्रवृत्तयो धीर तावकमचिन्त्यमीहितम् ॥७४॥
मानुषीं प्रकृतिमभ्यतीतवान् देवतास्वपि च देवता यतः ।
तेन नाथ परमासि देवता श्रेयसे जिनवृष प्रसीद नः ॥७५॥

१६. श्री शान्तिनाथ स्तुतिः

विधाय रक्षां परतः प्रजानां राजा चिरं योऽप्रतिमप्रतापः ।
व्यधात्पुरस्तात्स्वत एव शान्तिर्मुनिर्दयामूर्तिरिवाघशान्तिम् ॥७६॥
चक्रेण यः शत्रुभयंकरेण जित्वा नृपः सर्वनरेन्द्रचक्रम् ।
समाधिचक्रेण पुनर्जिगाय महोदयो दुर्जयमोहचक्रम् ॥७७॥
राजश्रिया राजसु राजसिंहो रराज यो राजसुभोगतन्त्रः ।
आर्हन्त्यलक्ष्म्या पुनरात्मतन्त्रो देवासुरोदारसभे रराज ॥७८॥
यस्मिन्नभूद्राजनि राजचक्रं मुनौ दयादीधिति धर्मचक्रम् ।
पूज्ये मुहुः प्रांजलि देवचक्रं ध्यानोन्मुखे ध्वंसि कृतान्तचक्रम् ॥७९॥
स्वदोषशान्त्याविहितात्मशान्तिः शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम् ।
भूयाद्भवक्लेशभयोपशान्त्यै शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः ॥८०॥

१७. श्री कुन्थुनाथ स्तुतिः

कुंथुप्रभृत्यखिलसत्त्वदयैकतानः कुंथुर्जिनो ज्वरजरामरणोपशान्त्यै ।
त्वं धर्मचक्रमिह वर्तयसि स्म भूत्यै भूत्वा पुरा क्षितिपतीश्वरचक्रपाणिः ॥८१॥

तृष्णार्चिषः परिदहन्ति न शान्तिरासा-
मिष्टेन्द्रियार्थविभवैः परिवृद्धिरेव ।
स्थित्यैव कायपरितापहरं निमित्त-
मित्यात्मवान्विषयसौख्यपराङ्मुखोऽभूत् ॥८२॥

बाह्यं तपः परमदुश्चरमाचरंस्त्व-
माध्यात्मिकस्य तपसः परिबृंहणार्थम् ।
ध्यानं निरस्य कलुषद्वयमुत्तरस्मिन्
ध्यानद्वये ववृतिषेऽतिशयोपपन्ने ॥८३॥

हुत्वा स्वकर्मकटुकप्रकृतीश्चतस्रो
रत्नत्रयातिशयतेजसि जातवीर्यः ।
विभ्राजिषे सकलवेदविधेर्विनेता
व्यभ्रे यथा वियति दीप्तरुचिर्विवस्वान् ॥८४॥

यस्मान्मुनीन्द्र तव लोकपितामहाद्या
विद्याविभूतिकणिकामपि नाप्नुवन्ति ।
तस्माद्भवन्तमजमप्रतिमेयमार्याः
स्तुत्यं स्तुवन्ति सुधियः स्वहितैकतानाः ॥८५॥

१८. श्री अरहनाथ स्तुतिः

गुणस्तोकं सदुल्लङ्घ्य तद्बहुत्वकथा स्तुतिः ।
आनन्त्यात्ते गुणा वक्तुमशक्यास्त्वयि सा कथम् ॥८६॥

तथापि ते मुनीन्द्रस्य यतो नामापि कीर्तितम् ।
पुनाति पुण्यकीर्तेर्नस्ततो ब्रूयाम किञ्चन ॥८७॥

लक्ष्मीविभवसर्वस्वं मुमुक्षोश्चक्रलाञ्छनम् ।
साम्राज्यं सार्वभौमं ते जरत्तृणमिवाभवत् ॥८८॥

तव रूपस्य सौन्दर्यं दृष्ट्वा तृप्तिमनापिवान् ।
द्व्यक्षः शक्रः सहस्राक्षो बभूव बहुविस्मयः ॥८९॥

मोहरूपो रिपुः पापः कषायभटसाधनः ।
दृष्टिसम्पदुपेक्षास्त्रैस्त्वया धीर पराजितः ॥९०॥

कन्दर्पस्योद्धुरो दर्पस्त्रैलोक्यविजयार्जितः ।
ह्रेपयामास तं धीरे त्वयि प्रतिहतोदयः ॥९१॥

आयत्यां च तदात्वे च दुःखयोनिर्निरुत्तरा ।
तृष्णानदी त्वयोत्तीर्णा विद्यानावा विविक्तया ॥९२॥
अन्तकः क्रन्दनो नृणां जन्मज्वरसखा सदा ।
त्वामन्तकान्तकं प्राप्य व्यावृत्तः कामकारतः ॥९३॥
भूषावेषायुधत्यागि › विद्यादमदयापरम् ।
रूपमेव तवाचष्टे धीर दोषविनिग्रहम् ॥९४॥
समन्ततोऽङ्गभासां ते परिवेषेण भूयसा ।
तमो बाह्यमपाकीर्णमध्यात्मं ध्यानतेजसा ॥९५॥
सर्वज्ञज्योतिषोद्भूतस्तावको महिमोदयः ।
कं न कुर्यात् प्रणम्रं ते सत्त्वं नाथ सचेतनम् ॥९६॥
तव वागमृतं श्रीमत्सर्वभाषास्वभावकम् ।
प्रीणयत्यमृतं यद्वत् प्राणिनो व्यापि संसदि ॥९७॥
अनेकान्तात्मदृष्टिस्ते सती शून्यो विपर्ययः ।
ततः सर्वं मृषोक्तं स्यात्तदयुक्तं स्वघाततः ॥९८॥
ये परस्खलितोन्निद्राः स्वदोषेभनिमीलिनः ।
तपस्विनस्ते किं कुर्युरपात्रं त्वन्मतश्रियः ॥९९॥
ते तं स्वघातिनं दोषं शमीकर्त्तुमनीश्वराः ।
त्वद्द्विषः स्वहनो बालास्तत्त्वावक्तव्यतां श्रिताः ॥१००॥
सदेकनित्यवक्तव्यास्तद्विपक्षाश्च ये नयाः ।
सर्वथेति प्रदुष्यन्ति पुष्यन्ति स्यादितीहिते ॥१०१॥
सर्वथा नियमत्यागी यथादृष्टमपेक्षकः ।
स्याच्छब्दस्तावके न्याये नान्येषामात्मविद्विषाम् ॥१०२॥
अनेकान्तोऽप्यनेकान्तः प्रमाणनयसाधनः ।
अनेकान्तः प्रमाणान्ते तदेकान्तोऽर्पितान्नयात् ॥१०३॥
इति निरुपमयुक्तिशासनः प्रियहितयोगगुणानुशासनः ।
अरजिनदमतीर्थनायकस्त्वमिव सतां प्रतिबोधनायकः ॥१०४॥
मतिगुणविभवानुरूपतस्त्वयि वरदागमदृष्टिरूपतः ।
गुणकृशमपि किञ्चनोदितं मम भवताद्दुरिताशनोदितम् ॥१०५॥

१९. श्री मल्लिनाथ स्तुतिः

यस्य महर्षेः सकलपदार्थप्रत्यवबोधः समजनि साक्षात् ।
सामरमर्त्यं जगदपि सर्वं प्राञ्जलिभूत्वा प्रणिपतति स्म ॥१०६॥

यस्य च मूर्तिः कनकमयीव स्वस्फुरदाभाकृतपरिवेषा ।
वागपि तत्त्वं कथयितुकामा स्यात्पदपूर्वा रमयति साधून् ॥१०७॥
यस्य पुरस्ताद्विगलितमाना न प्रतितीर्थ्या भुवि विवदन्ते ।
भूरपि रम्या प्रतिपदमासीज्जातविकोशाम्बुजमृदुहासा ॥१०८॥
यस्य समन्ताज्जिनशिशिरांशोः शिष्यकसाधुग्रहविभवोऽभूत् ।
तीर्थमपि स्वं जननसमुद्रत्रासितसत्त्वोत्तरणपथोऽग्रम् ॥१०९॥
यस्य च शुक्लं परमतपोऽग्निर्ध्यानमनन्तं दुरितमधाक्षीत् ।
तं जिनसिंहं कृतकरणीयं / मल्लिमशल्यं शरणमितोऽस्मि ॥११०॥

२०. श्री मुनिसुव्रत जिन स्तुतिः

अधिगतमुनिसुव्रतस्थितिर्मुनिवृषभो मुनिसुव्रतोऽनघः ।
मुनिपरिषदि निर्बभौ भवानुडुपरिषत्परिवीतसोमवत् ॥१११॥
परिणतशिखिकण्ठरागया कृतमदनिग्रहविग्रहाभया ।
तवजिनतपसः प्रसूतया ग्रहपरिवेषरुचेव शोभितम् ॥११२॥
शशिरुचिशुचिशुक्ललोहितं सुरभितरं विरजो निजं वपुः ।
तव शिवमतिविस्मयं यते यदपि च वाङ्मनसोऽयमीहितम् ॥११३॥
स्थितिजननिरोधलक्षण चरमचरं च जगत्प्रतिक्षणम् ।
इति जिनसकलज्ञलाञ्छनं वचनमिदं वदतां वरस्य ते ॥११४॥
दुरितमलकलंकमष्टक निरुपमयोगबलेन निर्दहन् ।
अभवदभवसौख्यवान् भवान् भवतु ममापि भवोपशांतये ॥११५॥

२१. श्री नमिनाथ जिन स्तुतिः

स्तुतिस्तोतुः साधो कुशलपरिणामाय स तदा,
भवेन्मा वा स्तुत्यः फलमपि ततस्तस्य च सतः ।
किमेवं स्वाधीनाज्जगति सुलभे श्रायसपथे,
स्तुयान्नत्वा विद्वान्सततमपि पूज्यं नमिजिनम् ॥११६॥
त्वया धीमन् ब्रह्मप्रणिधिमनसा जन्मनिगलं ।
समूलं निर्भिन्नं त्वमसि विदुषां मोक्षपदवी ॥
त्वयि ज्ञानज्योतिर्विभवकिरणैर्भाति भगव-
न्नभूवन् खद्योता इव शुचिरवावन्यमतयः ॥११७॥
विधेयं वार्यं चानुभयमुभयं मिश्रमपि तत् ।
विशेषैः प्रत्येकं नियमविषयैश्चापरिमितैः ॥
सदान्योन्यापेक्षैः सकलभुवनज्येष्ठगुरुणा ।
त्वया गीतं तत्त्वं बहुनयविवक्षेतरवशात् ॥११८॥

अहिंसाभूतानां जगति विदितं ब्रह्म परमं ।
न सात्रारम्भोस्त्यणुरपि च यत्राश्रमविधौ ॥
ततस्तत्सिद्ध्यर्थं परमकरुणो ग्रन्थमुभयं ।
भवानेवात्याक्षीन्न च विकृतवेषोपधिरतः ॥११९॥
वपुर्भूषावेषव्यवधिरहित शान्तिकरणं ।
यतस्ते सचष्टे स्मरशरविषातंकविजयम् ॥
विना भीमैः शस्त्रैरदयहृदयामर्षविलयं ।
ततस्त्वं निर्मोहः शरणमसि नः शांतिनिलयः ॥१२०॥

२२. श्री नेमिनाथ जिन स्तुतिः

भगवानृषिः परमयोगदहनहुतकल्मषेन्धन. ।
ज्ञानविपुलकिरणैः सकलं प्रतिबुध्य बुद्धकमलायतेक्षणः ॥१२१॥
हरिवंशकेतुरनवद्यविनयदमतीर्थनायक. ।
शीलजलधिरभवो विभवस्त्वमरिष्टनेमिजिनकुंजरोऽजरः ॥१२२॥
त्रिदशेन्द्रमौलिमणिरत्नकिरणविसरोपचुम्बितम् ।
पादयुगलममलं भवतो विकसत्कुशेशयदलारुणोदरम् ॥१२३॥
नखचन्द्ररश्मिकवचातिरुचिरशिखराङ्गुलिस्थलम् ।
स्वार्थनियतमनसः सुधियः प्रणमन्ति मंत्रमुखरा महर्षयः ॥१२४॥
द्युतिमद्रथाङ्गरविबिम्बकिरणजटिलांशुमण्डलः ।
नीलजलदजलराशिवपुः सहबन्धुभिर्गरुडकेतुरीश्वरः ॥१२५॥
हलभृच्च ते स्वजनभक्तिमुदितहृदयौ जनेश्वरौ ।
धर्मविनयरसिकौ सुतरां चरणारविंदयुगलं प्रणेमतुः ॥१२६॥
ककुदं भुवः खचरयोषिदुषितशिखरैरलंकृतः ।
मेघपटलपरिवीततटस्तव लक्षणानि लिखितानि वज्रिणा ॥१२७॥
वहतीति तीर्थमृषिभिश्च सततमभिगम्यतेऽद्य च ।
प्रीतिविततहृदयैः परितो भृशमूर्जयन्त इति विश्रुतोऽचलः ॥१२८॥
बहिरन्तरप्युभयथा च करणमविघाति नार्थकृत् ।
नाथ युगपदखिलं च सदा त्वमिदं तलामलकवद्विवेदिथ ॥१२९॥
अतएव ते बुधनुतस्य चरितगुणमद्भुतोदयम् ।
न्यायविहितमवधार्य जिने त्वयि सुप्रसन्नमनसः स्थिता वयं ॥१३०॥

२३. श्री पार्श्वनाथ जिन स्तुतिः

तमालनीलैः सधनुस्तडिद्गुणैः प्रकीर्णभीमाशनिवायुवृष्टिभिः ।
बलाहकैर्वैरिवशैरुपद्रुतो महामना यो न चचाल योगतः ॥१३१॥
बृहत्फणामण्डलमण्डपेन यं स्फुरत्तडित्पिङ्गरुचोपसर्गिणम् ।
जुगूह नागो धरणो धराधरं विरागसन्ध्यातडिदम्बुदो यथा ॥१३२॥
स्वयोगनिस्त्रिंशनिशातधारया निशात्य यो दुर्जयमोहविद्विषम् ।
अवापदार्हन्त्यमचिन्त्यमद्भुतं त्रिलोकपूजातिशयास्पदं पदम् ॥१३३॥
यमीश्वरं वीक्ष्य विधूतकल्मषं तपोधनास्तेऽपि तथा बुभूषवः ।
वनौकसः स्वश्रमवन्ध्यबुद्धयः शमोपदेशं शरणं प्रपेदिरे ॥१३४॥
स सत्यविद्यातपसां प्रणायकः समग्रधीरुग्रकुलाम्बरांशुमान् ।
मया सदा पार्श्वजिनः प्रणम्यते विलीनमिथ्यापथदृष्टिविभ्रमः ॥१३५॥

२४. श्री महावीर जिन स्तुतिः

कीर्त्या भुवि भासितया वीर त्वं गुणसमुत्थया भासितया ।
भासोडुसभासितया सोम इव व्योम्नि कुन्दशोभासितया ॥१३६॥
तव जिन शासनविभवो जयति कलावपि गुणानुशासनविभवः ।
दोषकशासनविभवः स्तुवन्ति चैनं प्रभाकृशासनविभवः ॥१३७॥
अनवद्यः स्याद्वादस्तव दृष्टेष्टाविरोधतः स्याद्वादः ।
इतरो न स्याद्वादो सद्वितयविरोधान्मुनीश्वराऽस्याद्वादः ॥१३८॥
त्वमसि सुरासुरमहितो ग्रन्थिकसत्त्वाशयप्रणामामहितः ।
लोकत्रयपरमहितोऽनावरणज्योतिरुज्वलद्धामहितः ॥१३९॥
सभ्यानामभिरुचितं दधासि गुणभूषणं श्रिया चारुचितम् ।
मग्नं स्वस्यां रुचितं जयसि च मृगलांछनं स्वकान्त्या रुचितम् ॥१४०॥
त्वं जिन गतमदमायस्तव भावानां मुमुक्षुकामदमायाः ।
श्रेयान् श्रीमदमायस्त्वया समादेशि सप्रयामदमायः ॥१४१॥
गिरिभित्त्यवदानवतः श्रीमत इव दन्तिनः स्रवद्दानवतः ।
तव शमवादानवतो गतमूर्जितमपगतप्रमादानवतः ॥१४२॥
बहुगुणसंपदसकलं परमतमपि मधुरवचनविन्यासकलम् ।
नय भक्त्यवतंसकलं तव देव मतं समन्तभद्रं सकलम् ॥१४३॥

—: ● :—

सम्पूर्ण दस महाविद्या तन्त्र महाशास्त्र

ले० तन्त्राचार्य पं० राजेश दीक्षित

विश्व जनमानस में देवी भगवती के दस पौराणिक स्वरूप प्रचलित हैं यथा-काली तारा, महाविद्या (षोड्सी), भुवनेश्वरी, त्रिपुर भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी मातङ्गी, कमलात्मिका (कमला)। ये सभी भगवती पराशक्ति के विभिन्न स्वरूप हैं। प्रस्तु महाग्रन्थ में सभी देवियों के तान्त्रिक, काम्य प्रयोग दिये गये हैं जो सिर्फ महान सिद्ध-योगि को ही ज्ञात रहते हैं तथा वे किसी भी कीमत पर उन्हें नहीं बताते। साथ में सम्बन्धित मं यन्त्र, पूजा, जप, साधनविधि, उपनिषद सतजप, सहस्रनाम आदि विभिन्न विषयों को दि गया है। देवी भक्तों को संकलन योग्य महान ग्रन्थ, सम्पूर्ण सुनहरी ठप्पेदार कपडा बाइंडि सहित सचित्र ग्रन्थ का मूल्य २२५/- डाकखर्च 10) उपरोक्त ग्रन्थ अलग-अ जिल्दों में भी है।

(1) काली तन्त्र शास्त्र (2) तारा तन्त्र शास्त्र
(3) महाविद्या (षोड्सी) तन्त्र शास्त्र
(4) भुवनेश्वरी एवम् छिन्नमस्ता तन्त्र शास्त्र
(5) बगलामुखी एवम् मातङ्गी तन्त्र शास्त्र
(6) भैरवी एवम् धूमावती तन्त्र शास्त्र
(7) कमलात्मिका (लक्ष्मी) तन्त्र शास्त्र

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य 30 रु० डाक खर्च 7 रु० अलग।

कौतुकरत्न भाण्डागार-वृहत् इन्द्रजाल

ले० ओझा बाबा

आजकल बाजार में इन्द्रजाल बहुत मिलते हैं जिन्होंने इस विषय की गम्भीरता क खत्म प्राय कर रखा है। इस पुस्तक में परमसिद्ध ओझा बाबा ने सम्पूर्ण जीवन का ज्ञा निचोडकर रख दिया है। दत्तात्रेय के सिद्धि देने वाले मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र सम्मोहन, उच्चाटन वशीकरण आदि विधि सहित दिये गये हैं। सचित्र व सजिल्द पुस्तक का मूल्य 30) रु० डाक खर्च 7) रु० अलग।

प्रयोगात्मक कुण्डलिनी तन्त्र

ले० महर्षि यतीन्द्र

(डा० वाय० डी० गहराना)

कुण्डलिनी जागरण पर एकमात्र प्रयोगिक पुस्तक जिसमें आत्म तत्व ज्ञान के सिद्धान्त, कुण्डलिनीयोग के आसन, प्राणायाम, धारणा और ध्यान के विशेष त्राटक, कुण्डलिनी के षट् चक्रों से आगे के विशेष विवरण आदि विशेष रूप से दिये गये हैं। 150 से अधिक रंगीन सादे चित्र पृष्ठ संख्या 396 सजिल्द मूल्य 75 रु० डाक खर्च 10 रु० अलग।

पुस्तकें मंगाने का पता

दीप पब्लिकेशन अस्पताल रोड, आगरा-२

सम्पूर्ण दस महाविद्या तन्त्र महाशास्त्र

ले० तन्त्राचार्य पं० राजेश दीक्षित

विश्व जनमानस में देवी भगवती के दस पौराणिक स्वरूप प्रचलित हैं यथा—काली तारा, महाविद्या (षोड्सी), भुवनेश्वरी, त्रिपुर भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी मातङ्गी, कमलात्मिका (कमला)। ये सभी भगवती पराशक्ति के विभिन्न स्वरूप हैं। प्रस्तुत महाग्रन्थ में सभी देवियों के तान्त्रिक, काम्य प्रयोग दिये गये हैं जो सिर्फ महान सिद्ध-योगियों को ही ज्ञात रहते हैं तथा वे किसी भी कीमत पर उन्हें नहीं बताते। साथ में सम्बन्धित मन्त्र यन्त्र, पूजा, जप, साधनविधि, उपनिषद सतजप, सहस्रनाम आदि विभिन्न विषयों को दिया गया है। देवी भक्तों को संकलन योग्य महान ग्रन्थ, सम्पूर्ण सुनहरी ठप्पेदार कपड़ा बाइन्डिंग सहित सचित्र ग्रन्थ का मूल्य २२५/- डाकखर्च 10) उपरोक्त ग्रन्थ अलग-अलग जिल्दों में भी है।

(1) काली तन्त्र शास्त्र (2) तारा तन्त्र शास्त्र
(3) महाविद्या (षोड्सी) तन्त्र शास्त्र
(4) भुवनेश्वरी एवम् छिन्नमस्ता तन्त्र शास्त्र
(5) बगलामुखी एवम् मातङ्गी तन्त्र शास्त्र
(6) भैरवी एवम् धूमावती तन्त्र शास्त्र
(7) कमलात्मिका (लक्ष्मी) तन्त्र शास्त्र

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य 30 रु० डाक खर्च 7 रु० अलग।

कौतुकरत्न भाण्डागार-वृहत् इन्द्रजाल

ले० ओझा बाबा

आजकल बाजार में इन्द्रजाल बहुत मिलते हैं जिन्होंने इस विषय की गम्भीरता को खत्म प्राय कर रखा है। इस पुस्तक में परमसिद्ध ओझा बाबा ने सम्पूर्ण जीवन का ज्ञान निचोडकर रख दिया है। दत्तात्रेय के सिद्धि देने वाले मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र सम्मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि विधि सहित दिये गये हैं। सचित्र व सजिल्द पुस्तक का मूल्य 30) रु० डाक खर्च 7) रु० अलग।

प्रयोगात्मक कुण्डलिनी तन्त्र

ले० महर्षि यतीन्द्र

(डा० वाय० डी० गहराना)

कुण्डलिनी जागरण पर एकमात्र प्रयोगिक पुस्तक जिसमें आत्म तत्व ज्ञान के सिद्धान्त, कुण्डलिनीयोग के आसन, प्राणायाम, धारणा और ध्यान के विशेष त्राटक, कुण्डलिनी के षट् चक्रों से आगे के विशेष विवरण आदि विशेष रूप से दिये गये हैं। 150 से अधिक रंगीन व सादे चित्र पृष्ठ संख्या 396 सजिल्द मूल्य 75 रु० डाक खर्च 10 रु० अलग।

पुस्तकें मंगाने का पता

दीप पब्लिकेशन अस्पताल रोड, आगरा—२